विशद मुक्तावली

(मुक्तक संग्रह)

पावन आशीर्वाद

प.पू. जैनाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज

रचयिता

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

कृति – विशद मुक्तावली

रचयिता – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – द्वितीय, 2010 प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (09829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन – किरण, आरती दीदी ● मो.: 9829127533

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा (जैन)
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 09414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
जिला-सागर (म.प्र.)
3. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाशन हेतु – 51/- रु.

-: अर्थ सहयोग :-

lr_mZ² \y$bMÝX, gwJZMÝX, {d_bHw$_ma, ~m~ybmb0r 0¡Z

R.K. nwa_², 1233A,

Ph. : 2471925, M. 9413007978

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह),** जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

मेरे विचार

मुक्तक, छन्द शास्त्र की वह विधा है जो एक ही पद्य में अपना सम्पूर्ण सौन्दर्य प्रकट कर अपनी बात को भी पूर्ण करता है तथा मुक्तक में वह रचनात्मक, संवेदनशीलता व मुहावरेदार शैली होती है जो लोगों को झकझोर देती है।

मुक्तक वह रसायन है जो मुक्त कण्ठ से प्रहसित होकर लोगों के मन मस्तिष्क में प्रवेश कर मानव की चित्त वृत्ति को स्वच्छ और निर्मल बनाता है।

अर्थ की दृष्टि में मुक्तक वह चमत्कृत रचना है जिसमें सभी रसों, अलंकारों का समायोजन होता है।

प.पू. आचार्य गुरुदेव का आदेश पाकर जब संघ से अन्यत्र विहार हुआ और अनेक नगर, ग्राम में पहुँचकर प्रवचन इत्यादि की बात आई तो संचालन करने वालों का अभाव पाया गया। तब किसी न किसी को संचालन हेतु प्रेरणा दी। उस समय लोगों ने यही कहा– हम क्या बोलें, हमको तो कुछ आता नहीं। संचालक को बोलने हेतु मुक्तकों की रचना की गई। कहा भी है– **''आवश्यकता आविष्कार की जननी है''।** साथ ही शुभ उपयोग में मन को लगाने के लिए जो कुछ लिखा उसे जन–जन तक पहुँचाने के लिए लोगों की बार–बार प्रेरणा रही, अतः इस पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है तथा मुक्तक के माध्यम से संस्कार और आध्यात्म का सागर लहराएगा। इंसान अपने जीवन में सद्राह पर चलकर मोक्ष की मंजिल प्रशस्त करें, हमारी यही भावना है।

इसके संकलन और संपादन में सहयोग करने वाले संघस्था साधु एवं त्यागी वृंद को शुभाशीष तथा प्रकाशन में सहयोगी बने लोगों को मेरा आशीर्वाद।

यह काव्य नहीं है फूल खिले जो उपवन को महकायेंगे।
यह छन्द नहीं मकरन्द महा जो भौरों को ललचायेंगे।।
यह माला है उन मणियों की जो मन मंदिर में चढ़ती है।
ये मणि मुक्ता हैं अजर–अमर जो 'विशद' हृदय चमकायेंगे।।

– आचार्य विशदसागर

मुक्तक

खण्ड 'अ'

आज मानव के जीवन में, धर्म की सुवास नहीं है,
इस जहाँ में कहीं किसी का, कोई आवास नहीं है।
जो धर्म पर 'विशद' श्रद्धान, करते हैं मेरे बन्धुओं,
दुःख–दर्द का उनके, जीवन में वास नहीं है।।1।।

हमें कैसे जीना है, धर्म बताता है बन्धुओं,
आत्मा और अनात्मा का, भेद दिखाता है बंधुओं।
'परस्परोग्रहो जीवानाम्' सूत्र, भगवान महावीर ने बताया,
धर्म ही इंसान को, भगवान बनाता है बंधुओं।।2।।

आज प्राणी गृह जाल में फँसते जा रहे हैं,
कषाय की पाश में कसते जा रहे हैं।
कैसे होगा हमारा सत् धर्म में प्रवेश,
पूजन, भक्ति और धर्म से हम बचते जा रहे हैं।।3।।

यह बहुत अच्छा हुआ दुनिया से बेवफाई हो गई,
सब रिश्तों व नातों की सफाई हो गई।
खून के रिश्ते मात्र खून चूसने के लिए हैं,
खून के व्यापार में दुनियाँ कसाई हो गई।।4।।

शांति चाहते हो यदि तो, हृदय से हृदय मिलाकर देखो,
चैन के लिए सम्यक्ज्ञान का दीप जलाकर देखो।
चाहते हो मोक्षमार्ग का रास्ता यदि मेरे बन्धु,
तो जीवन में सद्धर्म का फूल खिलाकर देखो।।5।।

जिनके मन में विकल्प हों वह बैचेन होते हैं,
परिग्रह संग्रह करने में जैन ही मैन होते हैं।
उत्तम कुल में जन्म लेने मात्र से कोई महान् नहीं होता।
वीर के सिद्धान्तों का पालन करते वो सच्चे जैन होते हैं।।6।।

श्रद्धा के फूल हृदय में खिलाए रखना,
ज्ञान के दीप हमेशा मन में जलाए रखना।
मुक्ति अवश्य ही प्राप्त हो जायेगी मेरे बंधुओ,
परमात्मा के चरणों में विशद आस्था बनाए रखना।।7।।

जीवन में कभी श्रद्धा का फूल नहीं खिला पाए,
जीवन में कभी ज्ञान का दीप नहीं जला पाए।
भटकते ही रहे असार संसार में मेरे बंधु,
'विशद' ज्ञान ज्योति से ज्योति नहीं मिला पाए।।8।।

सूर्य का उदय अनेक कमलों को खिला देता है,
एक जलता दीप अनेक बुझे दीपकों को जला देता है।
आस्था का दीप हमेशा जलाए रखना बंधुओ,
आस्था का प्रकाश हमें भगवान से मिला देता है।।9।।

मनुष्य गति में जन्म लेने मात्र से इंसान नहीं होता,
आस्था के अभाव में सम्यक्ज्ञान नहीं होता।
मात्र पत्थर के सामने सजदा करने से क्या होगा,
संस्कार विहीन पत्थर भी भगवान नहीं होता।।10।।

है स्वप्न कौन सा, जो हमको नहीं आया,
है द्रव्य कौन सा, जो हमने नहीं पाया।
न लोक में है कुछ भी वस्तु, जिसको नहीं पा चुके हम,
पाया नहीं यदि कुछ तो, गुरुदेव को नहीं पाया।।11।।

जो वात्सल्य के समुद्र, ज्ञान के आगर हैं,
जो संयम रूपी रत्नों के, शुभम् रत्नाकर हैं।
जिनकी चर्या और वाणी, मोक्ष मार्ग दिखाती हमें,
ऐसे महान् संत आचार्य 'श्री विरागसागर हैं''।।12।।

यदि बढ़ना है मार्ग पर तो बढ़ो सूर्य बनकर,
कभी ज्वालामुखी की तरह नहीं उठना क्रूर बनकर।
तुम संतान हो मेरे बंधु भगवान महावीर की।
यदि चमकना है तो चमको नयनों का नूर बनकर।।13।।

हत्यारे बनोगे यदि मारोगे किसी को जान से,
मारना सीख लो मेरे बन्धु लोगों को सम्मान से।
सिर नहीं उठा पाएंगे कभी तुम्हारे सामने वह,
यदि मार दोगे उन्हें इंसानियत और ऐहसान से।।14।।

गुरुवर के दर्शन से हृदय कमल खिल जाता है,
गुरुवर की वाणी सुनकर सत् ज्ञान दीप जल जाता है।
कलिकाल के भगवान हैं यह गुरुवर मेरे बंधुओ,
इनके दर्शन से तो पृथ्वी पर ही स्वर्ग मिल जाता है।।15।।

खुशबू नहीं फूल में तो चमन से क्या होगा,
अग्नि नहीं कुण्ड में तो हवन से क्या होगा।
थोथी हैं सारी क्रियायें मेरे बंधुओं तुम्हारी,
श्रद्धा नहीं है संत में तो नमन् से क्या होगा।।16।।

मानव का जीवन एक अनुपम बगीचा है,
अनादिकाल से कर्मों ने इसे सींचा है।
हुआ उद्धार उनका ही जीवन पाकर मेरे बन्धु,
जिसने चारित्र के द्वारा तन से चेतन को खींचा है।।17।।

आज धर्म के इम्तहान की घड़ी है,
आज मोह की धुन मानव के सिर पर चढ़ी है।
हम आज इंसाफ की मांग लेकर खड़े हैं,
अब इतिहास में जोड़ना, एक नई कड़ी है।।18।।

आज तक हम इंसानियत की राह पर चलते आए,
आज तक हम सरलता से दीप की भाँति जलते आए।
हमारी सरलता और इंसानियत का लाभ उठाया लोगों ने,
हम उनकी कुचाल और छल से हमेशा ही छलते आए।।19।।

अपमान किया तुमने गुरु का, हम सहन नहीं वह कर सकते।
अपमान के बदले में अपना, ईमान न्यौछावर कर सकते।
जिनधर्म और जिन गुरुओं की रक्षा में समर्पित हैं हम तो,
धन दौलत की तो बात क्या, हम जान न्यौछावर कर सकते।।20।।

हम राग द्वेष के मेले में अनुदान सहन न कर सकते,
हम कायर बनकर के बंधु रसपान सहन न कर सकते।
इंसाफ हेतु हम हँसकर के विषपान सहन तो कर सकते,
हम आँख बंद करके इतना अपमान सहन न कर सकते।।21।।

आज लोग स्वयं सोकर दूसरों को जगा रहे हैं,
धर्मी धर्म से दूर भागते, औरों को भगा रहे हैं।
कितना बदल गया है जमाना आज मेरे बन्धु,
रागी द्वेषी भी आज वात्सल्य का नारा लगा रहे हैं।।22।।

राग द्वेष मन को, गुनाहगार बना देता है,
राग द्वेष मानव को, बीमार बना देता है।
राग द्वेष बड़ा ही खतरनाक होता है मेरे बंधुओ,
राग द्वेष मानव को, गद्दार बना देता है।।23।।

होकर मायूस न यूँ शाम से ढलते रहिए,
जिन्दगी भोर है, सूरज से निकलते रहिए।
एक ही स्थान पर ठहरने से थक जाओगे,
धीरे-धीरे ही सही मार्ग पर चलते रहिए।।24।।

दिन के भूले जो शाम को घर आते हैं,
लोग कहते हैं वह भूले नहीं कहाते हैं।
जो अपने आप से भूलने वाले हैं मेरे बंधु,
संत उन भटके हुए, लोगों को सही राह दिखाते हैं।।25।।

शांति के लिए, श्रद्धा का फूल खिला दो,
चमन के लिए, ज्ञान का दीप जला दो।
क्यों भटक रहे अज्ञानी बनकर संसार में,
कल्याण के लिए स्वयं को प्रभु चरणों से मिला लो।।26।।

मिथ्या उपदेश देने वाले भी भगवान हो गए,
जिनवाणी के ज्ञान से मूर्ख भी विद्वान हो गए।
क्या स्थिति हो रही भगवान, एवं जिनवाणी की,
मंदिर भी शायद, आजकल श्मशान हो गए।।27।।

शांत वह होगा जिसका स्वच्छ चित्त होगा,
चैन से वही होगा, जिसका सच्चा मित्र होगा।
मुक्ति की प्राप्ति उन्हें ही होगी मेरे बंधु,
जिनके जीवन में 'विशद' सम्यक् चारित्र होगा।।28।।

अमावश की रात्रि बंधु होती बड़ी ही काली है,
महावीर निर्माण के द्वारा फैली अनुपम लाली है।
केवल ज्ञान ज्योति गौतम ने अपने हृदय जला ली है,
अतः सभी मिलकर हम उसको कहते आई दीवाली है।।29।।

हम किस ओर बढ़ें कुछ समझ नहीं पाते हैं,
घोर अंधकार छाया फिर भी बढ़ते जाते हैं।
भौतिकता की चकाचौंध में, भटक गये हैं हम,
रंग-रंगीले सपने हमें, संसार में ही भटकाते हैं।।30।।

अभिलाषाओं की भीड़ बहुत है, किस-किस को पूरा करें,
मान्यता पूरी करने हेतु कौन सी बस्ती को अधूरा करें।
आज तक नहीं किया इन्द्रियों को कभी वश में,
इन्द्रियों को वश में करने हेतु, मन से दुआ करें।।31।।

सफलता पूर्ण जीवन तुम्हें यदि अपना बनाना है,
तो असंयम को इस जीवन से दूर भगाना है।
मिट जायेगा संसार परिभ्रमण सारा का सारा,
जीवन की सफलता हेतु, हमें संयम को अपनाना है।।32।।

बाग में कुछ दिन तक ही खिलते दिखाई देते फूल,
जब तक उन्हें हवा मिलती रहती सदा अनुकूल।
स्वप्न में महल और राज्य अपना सा दिखता है बंधु,
जागने पर देखते हैं तो सामने पड़ी दिखती है धूल।।33।।

औरों को कष्ट देने वाले दुरात्मा होते हैं,
कष्ट सहन करने वाले संत महात्मा होते हैं।
कष्ट हरण करने वाले धर्मात्मा होते हैं,
उन सभी से रहित जो हैं वे परमात्मा होते हैं।।34।।

सज्जन हमेशा दुर्जन से डरते हैं,
वृक्ष प्रचंड पवन से डरते हैं।
मिथ्या दृष्टि की कथा ही निराली है,
वह तो संत को नमन् करने से डरते हैं।।35।।

जो इंसानियत के नाम पर सोता है,
वह मानव जीवन को व्यर्थ ही खोता है।
लाखों सोने वालों की अपेक्षा प्यारे बंधु,
एक जागृत इंसान भी बहुत होता है।।36।।

मानवता का पाना कोई साधारण नहीं है,
महत्त्वपूर्ण आचरण है उच्चारण नहीं है।
तीन लोक को विजय प्राप्त किया प्रभु ने,
इसलिए जिन कहा कोई अकारण नहीं है।।37।।

मत बीते कल की बात करो जो बीत गया सो बीत गया,
जो भूतकाल को पकड़ लिया तो कब गाओगे गीत नया।
पाया है कई बार अभी तक, गया व्यर्थ ही अतीत नया,
निज को जीतने वाला बंधु, जीत गया सो जीत गया।।38।।

कुछ लोग ही जहाँ में दान करना जानते हैं,
कुछ लोग ही संतों का सम्मान करना जानते हैं।
श्रावक तो हैं दुनिया में बहुत से मेरे बंधुओं,
कुछ लोग ही संत की पहिचान करना जानते हैं।।39।।

हमें समुन्दर नहीं किनारा चाहिये,
हमें अंधकार नहीं उजाला चाहिये।
जो भटक रहे इस संसार सागर में,
उनके लिए विशद संतों का सहारा चाहिये।।40।।

बड़ी मुश्किलों से प्राप्त करके मानव के अंग को,
कई बार प्राप्त किया है घर और परिवार के संग को।
मुक्ति वही प्राप्त कर पाते हैं मेरे बंधुओ,
जो संयम के द्वारा जीत लेते मोह की जंग को।।41।।

जीवन में कुछ विकास कर लेना मुक्ति दिवस मनाने वाले,
कई बीत गये मुक्ति दिवस यूं बेकार जाने वाले।
अब व्यर्थ न जावे अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षण,
जीवन सार्थक कर लेना यह निर्वाण दिवस पाने वाले।।42।।

गुलामी और दासता इन्सान का फर्ज बन गया,
धर्म कल करेंगे इन्सान का मर्ज बन गया।
मूल भावना के भ्रम में भूला विशद इन्सान,
सूद लेकर जिया जीवन अब बाकी कर्ज रह गया।।43।।

जिनवाणी किसे कहते इसका लोगों को ज्ञान नहीं है,
हम कौन हमारे क्या कर्त्तव्य होते इसका भान नहीं है।
मर्यादा भूल चुके हैं लोग धर्म और संतों की बंधु,
इसलिए लोगों का कुछ कहीं भी सम्मान नहीं है।।44।।

मानव हृदय में धर्म के फूल नहीं खिलते,
टी.वी. के सामने से लोग हिलाये नहीं हिलते।
दुकानों पर मक्खियाँ उड़ाते बैठे रहेंगे,
जिनवाणी पढ़ने वाले ढूँढ़ने पर नहीं मिलते।।45।।

प्रभु के चरणों में अपना माथा झुका देता हूँ,
उनको अपने जीवन की दास्तान सुना देता हूँ।
हम यहाँ पर भी कुछ चाह लेकर आते हैं,
इसलिए पूजन कर चरणों में द्रव्य चढ़ा देता हूँ।।46।।

मैं प्रभु की हर रोज अर्चा कर लिया करता,
अपनी आवश्यकताओं की चर्चा कर लिया करता।
मैं कुछ न कुछ माँग लेकर आता हूँ द्वारे पर,
अतः पूजन के नाम पर कुछ खर्चा कर लिया करता।।47।।

ये चमकते हुए आकाश के सूर्य,
मैंने भी एक शुभम् सूर्य पाया है।
तू तो आसमाँ में चमक रहा है,
पर वह तो धरती पर उतर आया है।।48।।

गुरुदेव मेरी जिन्दगी के बने आप नायक हैं,
आप ही इस जिन्दगी में मात्र भक्ति लायक हैं।
गुरुदेव शांति के अगाध महासागर हैं बंधु,
गुरुदेव ही 'विशद' शांति और मुक्ति दायक हैं।।49।।

आजकल के कैसे यह इन्सान हो गये हैं,
उपन्यास इनके लिए सुन्दर पुराण हो गये हैं।
भगवान का तो नाम भूल चुके हैं लोग,
फिल्मी हीरो क्रिकेट खिलाड़ी इनके भगवान हो गए हैं।।50।।

जो आपत्तियों से सदा भरपूर होता है,
वह प्रभु चरणों से कभी न दूर होता है।
हर एक आदेश का पालन करना,
उस मानव को सदा ही मंजूर होता है।।51।।

सब क्लेश त्यागकर अपने मन का पढ़ना फर्ज तुम्हारा है,
तुम बढ़ो मोक्ष की मंजिल तक तुमको आशीष हमारा है।
परमेष्ठी की शरण जगत् में बढ़ने का एक सहारा है,
जिनदेव चरण की भक्ति से मिलता भव सिन्धु किनारा है।।52।।

बात-बात पर नहीं सोचते जो उदार होते हैं,
वह अकेले नहीं हो सकते जिनके उत्तम विचार होते हैं।
संत अनेक में रहकर भी एक होते हैं बंधुओ,
क्योंकि वह हृदय से हमेशा निर्विकार होते हैं।।53।।

मानव जीवन सुगन्धित फूल, फिर विचार क्यों मरने का,
सेवा करना मरहम होता, कर्म जख्म को भरने का।
करो विशद पुरुषार्थ नहीं है, काम यहाँ पर डरने का,
मानव जीवन पावन मौका है भव सिंधु से तरने का।।54।।

संसार सागर में डूबने पर हमें कोई किनारा न मिला,
खोज डाला यह लोक सारा पर कोई हमारा न मिला।
मिले तो बहुत हैं हमें अपना कहने वाले बंधु,
पर वास्तव में संसार में हमको कोई सहारा न मिला।।55।।

यहाँ भक्ति के द्वारा कर्म हरे जा रहे हैं,
यहाँ मनुष्य तो ठीक पत्थर भी तरे जा रहे हैं।
हर जगह जीवित मनुज में प्राण भरे जाते हैं,
यहाँ पर तो पत्थरों में भी प्राण भरे जा रहे हैं।।56।।

पशु तो आज भी चारा ही चर रहे हैं,
फिर भी इंसान की खातिर बेमौत मर रहे हैं।
परिवर्तन तो सबसे अधिक मानव में आया है,
माँस कुत्तों का भोजन, जो मनुष्य कर रहे हैं।।57।।

आदमी की आदमियत को खो रहा है आदमी,
फूल हेतु शूल देखो बो रहा है आदमी।
रक्त के द्वारा कफन को धो रहा है आदमी,
स्वयं की करतूत पर ही रो रहा है आदमी।।58।।

आदमी सुसंत होता इंसान होता आदमी,
शैतान है हैवान है गुणवंत होता आदमी।
आदमी स्थान स्थित पंथ होता आदमी,
संत होता पंथ होता भगवंत होता आदमी।।59।।

आज आकाश तो आकाश पृथ्वी का भी अंत नहीं है,
कागज के फूल खिलने पर आता बसंत नहीं है।
संत का भेष तो हर जगह देखने में आता है,
पर वीतरागी संत जैसा जहाँ में कोई संत नहीं है।।60।।

गुब्बारा कैसा भी हो आखिर फूट जायेगा,
सम्बन्ध आखिर कैसा भी हो टूट जायेगा।
क्यों गर्व करते हो मिट्टी के पुतले तन पर 'विशद'
इसे कितना भी सजाइये आखिर छूट जायेगा।।61।।

दीप की जलन में पतंगों का अरमान छुपा होता है,
फूल की महक में भंवरे का ध्यान छुपा होता है।
भक्त की भक्ति में प्रभु का वरदान छुपा होता है,
गुरु भक्ति में 'विशद' शिष्य का उत्थान छुपा होता है।।62।।

मैं अपनों से अपना सा व्यवहार किया करता हूँ,
मैं भगवान की हर बात को स्वीकार किया करता हूँ।
मेरे हृदय में एक तुम्हीं समायें हो मेरे भगवन्
मैं सपनों में भी तुम्हारा इंतजार किया करता हूँ।।63।।

आँकाक्षायें अनेक हैं हम किन-किन को पूर्ण करें,
भरे हैं पाप से अनेक घर किन-किन को अपूर्ण करें।
सभी अपनी-अपनी दाल गलाने में लगे हैं मेरे भाई,
लक्ष्य को पूरा करने के लिए किन रिश्तों को सम्पूर्ण करें।।64।।

नई राहें नयी मंजिल नये अरमान पैदा कर,
अरे ! इंसान तू इंसान है इंसान पैदा कर।
मेरे भाई तुम्हें अपनी हुनर मालूम नहीं शायद,
अरे ! तू भगवान है अपने अंदर में भगवान पैदा कर।।65।।

उत्तम फूल की पहिचान भ्रमर से पूछिए,
पहलवान की पहिचान समर से पूछिए।
सभी की पहिचान कोई भी कर सकते हैं मेरे बन्धु,
नारी की पहिचान उत्तम नर से पूछिए।।66।।

हम जैसे हैं वैसे लोग हमें मिल जाते हैं,
अन्दर का स्नेह मिलते ही हृदय कमल खिल जाते हैं।
अंदर हृदय में 'विशद' करुणा की धार बहा के देखो,
इंसान तो इंसान स्नेह से पत्थर भी पिघल जाते हैं।।67।।

हृदय में अनुभूति की बांसुरी बजने लगी है,
आत्मा की राधिका 'विशद' अब सजने लगी है।
खोई हुयी थी जिन्दगी यह हमारी मेरे भाई,
स्वयं को जानकर अब अपनी सी लगने लगी है।।68।।

ऋषभ नाथ के जन्म दिवस की खुशियाँ सभी मनाते हैं,
धर्म प्रवर्तक हैं इस युग के गीत उन्हीं के गाते हैं।
हो प्रसन्न तन मन से भविजन जिन मंदिर को जाते हैं,
है कितना सौभाग्य हमारा लाडू चरण चढ़ाते हैं।।69।।

प्रभु चरणों से निगाह उठाई नहीं जाती है,
खुद अपने दिल की शमा जलाई नहीं जाती है।
सजदा का बहाना है विशद ये गर्दन,
खुद श्रद्धा से झुकती है झुकाई नहीं जाती है।।70।।

मैं हर चमन को गुलजार बनाने की बात करता हूँ,
मैं अंधेरे में ज्योति जलाने की बात करता हूँ।
'विशद' जमीं पर बना रक्खे है लोगों ने नश्वर मकान,
मैं उनसे हटने और हटाने की बात करता हूँ।।71।।

हम कण-कण पर फूल बिछाने की बात करते हैं,
हम राह में पड़े शूल उठाने की बात करते हैं।
'विशद' गुणों को ओस का मोती समझते हैं लोग,
हम दीप नहीं सूरज उगाने की बात करते हैं।।72।।

जीवन के बदलते ही, उपक्रम भी बदल जाएगा,
भेष के बदलते ही, आश्रम भी बदल जायेगा।
देर है इस जिन्दगी में, 'विशद' ज्ञान पाने की,
संशय विमोह बदलेगा, विभ्रम ही बदल जायेगा।।73।।

राह सरल है आज विश्व की चाह बड़ी तूफानी है,
स्वयं आपको भूली आतम द्रव्य की जो दीवानी है।
बंधी मोह के बन्धन में ज्यों आई हुई जवानी है,
किन्तु विश्व में चाल संत की विशद बड़ी मस्तानी है।।74।।

मुर्दे को छूकर नहाते हैं, अरु पशु मारकर खाते हैं,
पशु भी किसी माँ की संतान है फिर कैसे छुरी चलाते हैं।
धिक्कार हो उन मानवों को जो पशु मारने जाते हैं,
इन दुष्कृत्यों को करने वाले नरकों के दुख पाते हैं।।75।।

श्रद्धान कहीं बाहर से नहीं, अंदर से आता है,
श्रद्धान होने से अन्दर में, ज्ञान का प्रकाश छा जाता है।
जिसके जीवन में ज्ञान, जागृत हो जावे बन्धु,
उस प्राणी को संसार का, राग रंग बिल्कुल नहीं भाता है।।76।।

चाह का गर्त कभी भी पूरा न होता है,
उसे पूरा करने को जिन्दगी भर रोता है।
चाह की दाह से जो अछूता और नंगा है,
वही नंगा मेरे बन्धु खुदा से बड़ा होता है।।77।।

महल रत्नों पर नहीं पत्थरों पर खड़े होते हैं,
समय बीत जाने पर वह जमीं में पड़े होते हैं।
विशद रत्नों से इन्सान की कीमत आँकने वालों,
इंसान धन से नहीं आचरण से बड़े होते हैं।।78।।

संतों की वाणी जिन लोगों के लिए नहीं भाती है,
उन इंसानों के प्रति बड़ी तरस आती है।
वह इंसान नहीं हैवान है प्यारे भाई,
भगवान महावीर की वाणी यह खुले आम गाती है।।79।।

साथ संतों का जहाँ में लोगों को जगाता है,
जागने वाले लोगों को सही राह पर लगाता है।
जो एक बार जाग गया मोह की नींद से,
उसका यह विशद जीवन ही बदल जाता है।।80।।

संस्कार वान पुत्र आँखों का नूर होता है,
संस्कार विहीन पुत्र इंसानियत से दूर होता है।
खोटे संस्कार पाने वाला आपका वह पुत्र,
समय आने पर बड़ा ही क्रूर होता है।।81।।

मुक्ति की है चाह यदि तो सम्यक् दर्शन ग्रहण करो,
देव शास्त्र अरु जिन गुरुओं को विशद हृदय से वरण करो।
यह नव जीवन भी श्रृंगार बन जाएगा आपका,
तुम संयम तप और समाधि सहित मरण करो।।82।।

मुक्ति प्राप्त करके यह प्राणी सुख शांति को वरण करें,
जो मुक्ति के दास बने हैं वह शांति में रमण करें।
भुक्ति से मुक्ति जो माने उसकी यह एक भ्रान्ति है,
मुक्ति मिलती है बस उसको जिसके मन में शांति है।।83।।

गुरु चरणों में समर्पण परमात्मा का फूल है,
गुरु मुख से प्राप्त ज्ञान मिटाता भव कूल है।
जो लेते चरण शरण गुरुवर की बंधु वे धन्य हैं,
शरण न लेना ही जीवन की सबसे बड़ी भूल है।।84।।

जन्म और मरण का ही नाम तो संसार है,
इस संसार सागर में नहीं कुछ भी सार है।
चारों गतियों में अनेक दुःखों का भार ढ़ोते हैं,
फिर भी कहते मेरे जीवन में आई नई बहार है।।85।।

युगों-युगों से इन गुरुओं ने धर्म ध्वजा फहराई है,
रत्नात्रय की इस गंगा में अपनी नाव बढ़ाई है।
विशद धर्म का झण्डा लेकर पथ पर बढ़ते जाते हैं,
धर्म ध्यान के यान में बैठे नभ में चढ़ते जाते हैं।।86।।

आदिनाथ से महावीर तक धर्म की गंगा बहती आई,
गौतम गणधर से लेकर के कुन्द-कुन्द गुरु ने पाई।
उसी धर्म गंगा का युग में आदि सिंधु ने किया प्रचार,
संत हृदय के मन को भाई उस पर सबने किया विचार।।87।।

जिनवर चरण में भक्ति सहित आते हैं कोई-कोई,
संयम दिवस के अवसर पर संयम पाते हैं कोई-कोई।
यूँ तो कई बार नर जन्म पाकर चले जाते हैं लोग,
संयम की फुलवारी से जीवन सजाते हैं कोई-कोई।।88।।

चलते फिरते तीर्थ हैं गुरुवर, कलिकाल के हैं भगवान,
चरण धूलि से पावन होते इस जग के सारे अघवान।
वीतरागता है रग-रग में विराग सिंधु है इनका नाम,
विशद सिंधु का तुम स्वीकारो पद में बारम्बार प्रणाम।।89।।

सम्यक् ज्ञान का दीप जलाकर मैंट रहे हैं तमकारा,
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को अपने जीवन में धारा।
मोक्ष मार्ग पर चलें निरन्तर महावीर के लघुनंदन,
मुझको भी संग ले लो गुरुवर करता हूँ पद में वन्दन।।90।।

एक राज्य में दो-दो नरपति एक म्यान में दो तलवार,
एक ही वन में दो-दो मृगपति एक साथ होना दो कार्य।
पश्चिम में सूर्योदय होना यह तो हो भी जाय कदाचित्,
विषयों में भी लीन रहें फिर भी खुल जाये मोक्ष का द्वार।।91।।

सागर तो भर भी सकता लाखों सरिता पानी से,
चाह कभी पूरी नहीं होती पाकर भी रजधानी से।।
स्नेह नहीं मिल पाता कुछ भी पिता पुत्र अरु रानी से,
शांति मिलती प्राणी को वश मोहक शीतल वाणी से।।92।।

समय आने पर फूल भी मिट्टी में मिल जाते हैं,
भूकम्प के आते ही बड़े-बड़े महल भी हिल जाते हैं।
चार दिन की जिन्दगी पर क्यों इतना गुरुर करता रे नादान !
मौत आने पर बड़े-बड़े सूरमा भी मिट्टी में मिल जाते हैं।।93।।

दुखियों पर ढ़ाता जो जुल्म उसे वे पीर कहते हैं,
स्त्रियों की ढाँकता है लाज उसे हम चीर कहते हैं।
इन्द्रियों का दमन कर जो स्वयं को जीत लेते हैं,
बस ! उन्हें ही हम सभी भगवान महावीर कहते हैं।।94।।

आज चारों ओर कषायों के ही घेरे हैं,
जब तक स्वार्थ चल रहा तब तक ही लोग मेरे हैं।
रक्षक के नाम का सेहरा बाँधने वाले आज के लोग,
हकीकत में देखे तो सब लुटेरे ही लुटेरे हैं।।95।।

आज लोग धन का ही जाप कर रहे हैं,
आज लोग नोटों के पीछे ही मर रहे हैं।
यहाँ पर आकर देख लीजिए यदि विश्वास न हो तो,
लोग आज धर्म के नाम पर कितने डर रहे हैं।।96।।

आज इंसान इन्द्रियों का गुलाम हो गया है,
अभक्ष्य पदार्थों को खाना उसका आम हो गया है।
क्या होगा आज के इस अज्ञानी इंसानों का 'विशद',
इनके कारण ही वीर का जिनधर्म बदनाम हो गया है।।97।।

श्रद्धान की बात चले तो हम गुणवन्तों का नाम लेंगे,
यदि ज्ञान की बात चले तो जिन भगवंतों का नाम लेंगे।
आचरण की बात आये सामने कभी मेरे बंधुओ,
तो हम आचार्य श्री विराग सागर जैसे संतों का नाम लेंगे।।98।।

धर्म कहता है मानव से पुकार कर बन्धु,
तू मानव है रे ! मानव से प्यार कर बंधु।
नहीं रहेगा अशांति का नामो निशान तेरे जीवन में,
तू प्राणी मात्र का उपकार कर बंधु।।99।।

आज मानव में कितनी नादानी हो गई है,
राग के कारण दुनिया पानी-पानी हो गई है।
कैसे समझा पायेंगे उनके लिए बन्धु,
आज दुनिया चमड़े की दीवानी हो गई है।।100।।

परमाणु की कोई दिलासा नहीं होती,
गगन (आकाश) की अपनी कोई आशा नहीं होती।
खो जाती है पवन अनन्त आकाश में बंधु,
समर्पण की कोई कुछ परिभाषा नहीं होती।।101।।

कौन कहता है कि मूर्ति में भगवान नहीं है,
अरे ! उस भगवान को देखने का ज्ञान नहीं है।
मूक होकर भी मूर्ति उपदेश देती है हमें बंधु,
मगर उस उपदेश की ओर हमारा ध्यान नहीं है।।108।।

श्वाँस के चलते रहने तक, सभी कुछ भाईचारा है,
असत् संसार सागर में, नहीं दिखता किनारा है।
श्वाँस के छलते इस तन के, सभी चलने को कहते हैं,
जलाते हैं वही तुमको, दिया जिसको सहारा है।।109।।

कहीं देखो नजर भर के, गंध स्वारथ की आती है,
श्वाँस हर एक इस तन की, स्वार्थ का गीत गाती है।
मगर अनभिज्ञ होकर हम, विशद छलते रहे हर दम,
बढ़ा है क्लेश इतना कि, हुई न वेदना कुछ कम।।110।।

किसी के साथ कोई भी, करे व्यवहार जो जैसा,
मिलेगा अन्त के क्षण में, उसी का फल उसे वैसा।
आम का बीज बोने पर, मिलेंगे आम खाने को,
बबूल का बीज बोने पर, शूल मिलते जमाने को।।111।।

घूमकर क्या नहीं देखा, जिन्दगी में जमाने में,
नहीं सोचा जरा भी ये, जीवन के गवाने में।
नहीं पाई इनायत है, विकारों का रहा डेरा,
हकीकत भूलकर यूँ ही, मिटा जग का नहीं फेरा।।112।।

कहाँ तक हम कहें कैसे, जमाने के उसूलों को,
लोग बोते हैं काँटों को, चाहते हैं वो फूलों को।
ना समझी है ये लोगों की, समझना भी नहीं चाहें,
मगर चुभते हैं जब काँटे, तो भरते हैं वहीं आँहें।।113।।

मानव जीवन मोक्ष मार्ग का सुगम रास्ता है,
मोक्ष मार्ग प्रारम्भ करना ही सच्ची आस्था है।
कोई भी हो हमें तो देव शास्त्र गुरु से मतलब है,
हमारा तो सच्ची आस्था से ही वास्ता है।।102।।

जो श्रद्धा ज्ञान को पाकर, गीत संयम के गाते हैं,
भंवर में मोह के फंसते, असंयम में वही जाते हैं।
उनके हौंसलों को कौन रोक सकता है बंधु,
बुलंदी से जहाँ में जो, दिगम्बर भेष पाते हैं।।103।।

बढ़ो तुम देश दुनियाँ का, शुभ तीर बन जाओ,
बढ़ो तुम मोक्ष मारग की, नई तस्वीर बन जाओ।
जगाकर कह दो हर एक से, मेरे बन्धु जमाने में,
बढ़ो तुम इस तरह से स्वयं महावीर बन जाओ।।104।।

चुनौती दे रहा मानव, चन्द्रमा और तारों को,
काटकर मूल कलियों के, चाहता है बहारों को।
जानता है नहीं शायद, पाप का फल है ये भारी,
अहं में भूलकर मानव, प्रकृति के इशारों को।।105।।

स्वयं की भावना से ही, कलंकित हो रहा मानव,
भावना इस कदर बदली, कि मानव बन रहा दानव।
रहा न पाप कोई है, जमाने में मेरे बंधु,
नहीं करता है हाथों से, स्वयं अब आज का मानव।।106।।

रोज मंदिर में जाकर भी, पाप नहीं छोड़ पाते हैं,
रात-दिन झूठ बोलकर भी, जाप नहीं छोड़ पाते हैं।
लाख समझाने और डांटने पर भी लोग मेरे बंधु,
मंदिर में आकर व्यर्थ का वार्तालाप नहीं छोड़ पाते हैं।।107।।

नहीं शाश्वत यहाँ कुछ भी, न शाश्वत स्वर्ग की माया,
जो शाश्वत है जहाँ में वह, आज तक है नहीं पाया।
भटकते हम रहे अब तक, असत् वैभव की चाहों में,
विशद भटकन रही जग में, कटीली दुखद राहों में।।114।।

गये कई बार मंदिर में, रही न मस्जिदें कोई,
गुफा अन्दर पहाड़ों में, भटक कर जिन्दगी खोई।
ये जिन आदर्श हैं अनुपम, देख ले इनकी तू मूरत,
दिखेगी दर्पण की भाँति, आपको अपनी भी सूरत।।115।।

जो रक्खा जोड़कर तूने, साथ में कुछ नहीं जाए,
कि दिखता है यहाँ जो कुछ, साथ में क्या थे तुम लाए।
पड़ा रह जायेगा सारा, तुम्हारा यह झमेला है,
उजड़ जायेगा एक दिन सब, ये चार दिन का मेला है।।116।।

नहीं होगा मकां तेरा, साथ जाए नहीं माया,
गर्व करता है तू जिस पर, जलेगी काठ सी काया।
जिसे तू अपना कहता है अन्त में साथ न देंगे,
जिन्दगी की कमाई को, तेरी वह बाँट सब लेंगे।।117।।

हृदय में झाँककर देखो दिखेगी आपको मूरत,
दिखेगी उस समय तुमको स्वयं की वास्तविक सूरत।
हकीकत का नजारा भी पेश होगा तेरे आगे,
खेद होगा स्वयं पर कि, आज तक क्यों नहीं जागे।।118।।

रहा है धर्म से नाता जहाँ में इतना लोगों का,
मिले दौलत हमें भारी रहे संयोग भोगों का।
नियम करते हैं पूरा बस बात कल्याण की भूलें,
जो पाया तुच्छ वैभव है उसी में फिर रहे फूले।।119।।

किसे कहकर सुनायें हम दास्तां अपने जीवन की,
रहे श्रद्धान प्रभु पद में यही है भावना मन की।
ये जीवन बन सके अनुपम मिले ऐसा कोई साधन,
बने आतम हमारा यह स्वयं अब आप ही पावन।।120।।

ये तन चेतन की पोशाक है इसे बदलना होगा,
फूल पाने के लिए काँटों पर चलना होगा।
मौत की दावानल से कौन बच सका बन्धु,
चेतन के निकलते ही चिता पर जलना होगा।।121।।

कहाँ तक बताये हम तुम्हें मूर्तियों की दास्तान,
मूर्ति के वंदन से ही तो होता है सम्यक् दर्शन ज्ञान।
मूर्ति का वंदन पार करने वाला है संसार सागर से,
मूर्ति का वंदन करने वाला बन जाता एक दिन भगवान।।122।।

हम महावीर की वाणी से मिलते उपदेश की पूजा करते हैं,
हम नाम नहीं चाम नहीं वीतरागी भेष की पूजा करते हैं।
जो ज्ञान सूर्य चरित्र वीर अज्ञान तिमिर को हरते हैं,
उन विशद संत चरणों में नत हो शत् शत् वंदन करते हैं।।123।।

ज्ञात होगा जानकर हमने समय यूँ खो दिया,
पुण्य के बदले पाप का बीज स्वयं ही बो दिया।
नहीं सोचा आज तक कि कार्य हमने क्या किया,
अंत के क्षण में विशद आँसू बहाकर रो दिया।।124।।

आज जो धनवान है वह रंक भी होते कभी,
पुण्य के संयोग से समृद्ध होते हैं सभी।
सत्य वह सिद्धान्त है तुम जान लो यह भी अभी,
बीतने पर रात के उदित होता फिर रवि।।125।।

महावीर के संदेश को यह संसार सारा जानता,
है आर्य बाकी कौन सा इसको नहीं जो मानता।
कुछ मूढ़ प्राणी इस जहाँ में धर्म से जो दूर हैं,
हिंसा चोरी पाप करने में बड़े ही शूर हैं।।126।।

संस्कार ना दिये जिसने बाप नहीं वह पाप है,
हीन है संस्कार से जो पाप ही तो आप है।
रोते हैं वह लोग भी निज पूत की करतूत पर,
दोष करते आप हैं अरु थोपते है पूत पर।।127।।

पड़े न देखना तुमको कहीं कुछ क्लेश इस जग में,
आये न शूल दुःखदाई कभी जीवन के इस मग में।
बनेगा तब सुखद जीवन आस्था जब विशद होगी,
बसे प्रभु नाम यदि तेरे स्वयं ही आप रग-रग में।।128।।

राग द्वेष के यंत्र सा यह ढ़ल रहा है आदमी,
बेशरम के वृक्ष जैसा फल रहा है आदमी।
साधन समता को भूले आज के मानव विशद,
कषायों के साये में रहकर पल रहा है आदमी।।129।।

आग बनकर मोह की अब खल रहा है आदमी,
पंगु होकर आचरण से चल रहा है आदमी।
तम घना अज्ञान का है मानव जीवन में विशद,
शाम के सूरज की भाँति ढल रहा है आदमी।।130।।

आदमी को शूल जैसा खल रहा है आदमी,
हर क्षणों में बर्फ जैसा गल रहा है आदमी।
शांति कैसे पा सकेगा जिन्दगी में ये विशद,
आदमी को हर कदम पर छल रहा है आदमी।।131।।

तन को देखो किस तरह से मल रहा है आदमी,
भूलकर निज आत्मा को भी छल रहा है आदमी।
कितना मन विचलित हुआ है आज के इन्सान का,
पत्र पीपल की तरह से हिल रहा है आदमी।।132।।

अभी तक जीवन में बहुत सम्मान को पाया,
कमाने के लिए दौलत बहुत से ज्ञान को पाया।
सभी कुछ पाया बन्धु इस जीवन को पाकर,
नहीं पाया यदि कुछ है तो बस श्रद्धान ना पाया।।133।।

गुरु शिष्य का नाता कुछ ऐसा हुआ करता है,
गुरु चरणों को शिष्य हृदय से छुआ करता है।
गुरुवर के पावन जीवन के लिए मेरे बन्धुओ,
प्रभु के चरणों में शिष्य हमेशा ही दुआ करता है।।134।।

जब गुरु भक्ति की बात चले तो मुनि चंद्रगुप्त का नाम आता है,
गुरु भक्ति करके भक्त के हृदय में भारी हर्ष आता है।
कौन सी वस्तु है इस असत् संसार में मेरे बंधु,
जो सच्चे वीतरागी गुरु का भक्त नहीं पाता है।।135।।

महावीर हमें साक्षात् नहीं मिले अतः बैचेन हम हैं,
प.पू. आचार्यश्री भी नहीं मिले इस बात का गम है।
फिर भी कितना बड़ा सौभाग्य है हमारा बन्धुओं,
यह वीतराग की साक्षात् मूर्ति प्राप्त है यह क्या कम है।।136।।

आज लोग स्वयं सोकर दूसरों को जगा रहे हैं,
धर्मी धर्म से दूर भागते औरों को भगा रहे हैं।
कितना बदल गया जमाना आज मेरे बन्धुओं,
रागी द्वेषी भी आज वात्सल्य का नारा लगा रहे हैं।।137।।

जो विषय कषाय से दूर रहता वह संत होता है,
बुद्धि से करे जो कार्य वह धीवंत होता है।
नहीं मिलता है इस दुनियाँ में हमारा साथी,
जो शिव रमणी से मिला दे वह भगवंत होता है।।138।।

अरहंत की शरण में निज को लगा दिया,
पाया है उनसे सब कुछ सिर को झुका दिया।
धन्य हो गये हैं हम भी उन्हें पाकर के विशद,
मुक्ति के पथ को उनने हमको दिखा दिया।।139।।

हे जीव ! तू जन्म पाकर आया है अकेला,
मरने पर जाता भी है स्वयं ही अकेला।
जिन्दगी के चन्द दिनों कितना ही मेला लगा लो,
अन्त में कोई साथ नहीं देगा तुम्हारा यह झमेला।।140।।

लाख तर्क देने पर भी आगम नहीं बदलता,
सागर मन्थन से कभी अमृत नहीं निकलता।
आतम रटते कितने ही भव क्यों न बीत जावे,
संयम के अभाव में कभी मुक्ति का द्वार नहीं मिलता।।141।।

उद्गम से निकलकर सरिता पतली धार में चलती है,
यदि वर्षा का जल मिल जाये तो देखों कैसा रुख बदलती है।
सब कुछ समझ में आ जाता है नीचे गिरने पर मेरे बन्धु,
सरिता भी अंत में खारे जल में जा मिलती है।।142।।

जो स्वयं जलकर पर को जलाये वह आग है,
जिसकी दृष्टि कभी बुराई खोजने में लगी वह काग है।
जो दूसरों को गिराकर स्वयं ऊपर उठाना चाहता है,
वह इन्सान नहीं इन्सान के रूप में नाग है।।143।।

दुःख कितने भी आयें जीवन में उन्हें आने दो,
आहट मिलने पर भी मन मत घबराने दो।
सुख और दुःख का नाम ही तो जिन्दगी है मेरे बंधु,
आत्मा तो अमर होती है काया बदलती बदल जाने दो।।144।।

मौत आने पर आत्मा का अंत नहीं होता,
धूनी रमा लेने मात्र से कोई संत नहीं होता।
कितने भी शास्त्रों को पढ़कर पुराना कर डालो मेरे बंधु,
पृष्ठ बदलने मात्र से कोई धीमंत नहीं होता।।145।।

जैन होकर भी हैं कुछ, जो दूर रहते धर्म से,
मूलगुण नाहिं जानते अनभिज्ञ अपने कर्म से।
स्नेह उनको है अधिक अपनी स्वयं की चर्म से,
है झुका माथा विशद उनका बहुत अब शर्म से।।146।।।

बाल अवस्था में पिता पुत्र से राग लगाता है,
बड़ा होने पर कभी-कभी पुत्र भी दाग लगाता है।
जिसे बेटा-बेटा कहकर गले लगाते वह पूर्व जन्म का शत्रु है,
तुम्हारे मरण पर वही बेटा तेरे मुख में आग लगाता है।।147।।

अपनी करनी से जीव स्वयं कर्म बन्ध करता है,
अपने कर्म के अनुसार चतुर्गति पार करता है।
तुम क्यों दुनियाँ को गले लगाये बैठे हो बंधु,
यह जीव अकेला जन्म लेता है और अकेला ही मरता है।।148।।

फैंक देते हैं लोग ताजिए को सुन्दर सजाकर,
गम मानते हैं सभी मिलकर वहाँ से आकर।
क्या गजब हो रहा है इस अनोखी दुनियाँ में,
लूटते हैं लोग अपनो को अपना बनाकर।।149।।

कु संस्कार से प्राणी क्रूर बन जाता है,
खोटा कार्य करने को प्राणी मजबूर हो जाता है।
संस्कार तो निर्मल जल की तरह है मेरे बन्धु,
सुसंस्कार से प्राणी का जीवन नूर बन जाता है।।150।।

जो सम्राट है वह रण में मरण करता है,
कंजूस व्यक्ति कण-कण को वरण करता है।
तूँ अब भी सचेत हो जा ये नादान इन्सान,
क्यों तूँ अपनी जिन्दगी का क्षण-क्षण में मरण करता है।।151।।

करो न जुल्म पशुओं पर, नतीजा आज का कल है,
उठा भूकम्प हुई टक्कर, ये अत्याचार का फल है।
नहीं दिखते हैं दुनियाँ में, कोई हम दर्द जिन जैसे,
प्रभु अर्हंत की न्यायालय में, दया और धर्म का बल है।।152।।

उत्तम फसल प्राप्ति के लिए खेत साफ करो,
धर्म पाने के लिए प्राणी मात्र को माफ करो।
यदि है सुख शान्ति की चाह आपके मन में,
तो महामंत्र णमोकार की विशद जाप करो।।153।।

आज व्यक्ति मदिरालय और क्लब में तो खूब जाते हैं,
मंदिर और ज्ञान के नाम पर जल्द ही ऊब जाते हैं।
मुक्ति वधु तो उनसे बहुत दूर भागती है मेरे बंधु,
पाप करते हुये वह संसार समुद्र में डूब जाते हैं।।154।।

सरिता पार जाने के लिये नदी पर सेतु होता है,
मंदिर की शोभा के लिये शिखर पर केतु होता है।
पुण्य को सोने की बेड़ी कहने वाले याद रखों,
परम्परा से पुण्य भी मुक्ति का हेतु होता है।।155।।

अरिहंतों को नमन् कर, अरि को नाश करेंगे हम,
सिद्ध गुणों को ध्याकर के, अब लोक शिखर पर लेंगे दम।
आचार्योपाध्याय का सुमरन कर, निज उर में धारेंगे सम,
सर्व साधु सम बनकर भाई, सकल व्रतों को धारेंगे हम।।156।।

धन की लालच में किसी के मन को कुचलना नहीं चाहिये,
लोभ में आकर कभी सद्धर्म बदलना नहीं चाहिये।
जीवन में गिराने वाले बहुत मिलते हैं बन्धुओ,
जाने अन्जाने कभी धर्म से फिसलना नहीं चाहिये।।157।।

कठिनाईयों में आकर हारना अच्छा नहीं होता,
शुभ कार्यों को हमेशा टालना अच्छा नहीं होता।
प्रतिशोध की अग्नि में जलने वालो सुनो,
किसी भी प्राणी को मारना अच्छा नहीं होता।।158।।

यदि शांति चाहते हो तो इन्साफ करना होगा,
अगर स्नेह चाहते हो तो माफ करना होगा।
प्रभु के द्वार पर देर है अन्धेर नहीं,
यदि शांति चाहते हो तो हृदय को साफ करना होगा।।159।।

लोग प्रभु के चरणों में श्रीफल चढ़ाते हैं,
भक्ति से सराबोर होकर सिर झुकाते हैं।
जो होते हैं मन वचन काय से भक्ति में तल्लीन,
वह व्यक्ति ही वास्तविक सुख शांति पाते हैं।।160।।

धर्म की ज्योति अज्ञान तम का नाश करती है,
ज्ञान की ज्योति अज्ञानता में प्रकाश करती है।
धर्म तो एक अपूर्ण केसर की क्यारी है मेरे बन्धु,
जो पवित्र मानव जीवन में सुवास भरती है।।161।।

पाप के कारण से लोगों का पतन हो रहा है,
क्योंकि सत् कर्मों का नहीं यतन हो रहा है।
उन्नति कैसे हो आज के इन्सान की,
धर्म छोड़ने से ही दुनिया का पतन हो रहा है।।168।।

कागज के फूलों से कभी खुशबू नहीं आती है,
मात्र ज्ञान के सहारे जिन्दगी नहीं निखर पाती है।
यह सब कुछ कदाचित् हो भी जाये बन्धु,
भक्ति बिना कभी मुक्ति नहीं मिल पाती है।।169।।

नहीं दिखता जहाँ में कुछ, अंधेरा सा दिखाता है,
किया था कर्म पूरब में, वही हमको रुलाता है।
जहाँ में खोजकर देखा, मिला ना कोई भी हमको,
पता चेतन का चेतन ही, विशद तुमको बताता है।।170।।

गरीबी का सताया जो, वो साँचा भी झूठ कहलाता है,
जिसके हाथ में दौलत है, वो मूर्ख भी गुणवान कहा जाता है।
कितना बदल चुका है, इस रंगीन दुनिया का इंसाफ,
औरों के दुःखों को देखकर इन्सान, सदा हँसता हँसाता है।।171।।

गुरुओं के जय-जयकार की हम धुन गायेंगे,
कितने है सद्गुण इनमें हम नहीं गुन पायेंगे।
धरती और आसमान एक कर चलेंगे हम,
इनके अपमान को किन्तु नहीं सुन पायेंगे।।172।।

इन गुरुओं की सेवा में शक्तिशः ध्यान दीजिये,
इनके चरणों में रहकर कुछ ज्ञान लीजिये।
यह सौभाग्य हमेशा और सभी को प्राप्त नहीं होता,
नवधा भक्ति पूर्वक इनका सम्मान कीजिए।।173।।

आज के मानव धर्म की आड़ में पाप कर लेते हैं,
धर्मायतन को भी अपनी जगह में नाप कर लेते हैं।
पापियों ने धर्म को भी अपने बाप का राज समझ रखा है,
देव शास्त्र गुरुओं का अपमान कर अनन्तों पाप कर लेते हैं।।162।।

आज कल जंगल के खूंखार पशु नगरों में बसने लगे हैं,
साधुओं को नाग तो कम मनुष्य अधिक डसने लगे हैं।
आगम और सिद्धान्तों को उलट पलट कर रख दिया लोगों ने,
समयसार का वाचन साधु कम श्रावक अधिक करने लगे हैं।।163।।

श्रावक अज्ञानी होकर भी साधुओं की परीक्षा करने लगे हैं,
इसलिये तो आज लोग बिना मौत मरने लगे हैं।
व्यर्थ ही निन्दक और परीक्षक बनते हैं आज के लोग,
नरक गति का टिकट लेकर पाप की झोली भरने लगे हैं।।164।।

आनन्द व्यक्ति के शुद्ध मन में हुआ करता है,
आनन्द भक्ति सहित हुये तन में हुआ करता है।
आनन्द की परिभाषा को लोगों ने आज बदल दिया है,
आनन्द कर्म में नहीं धर्म में हुआ करता है।।165।।

इस दुनियाँ में तन के उजले बहुत मिलते हैं,
इस दुनियाँ में धन के उलझे बहुत मिलते हैं।
धन से हीन भी बहुत मिल सकते हैं मेरे बंधुओं,
पर मन के सुलझे बहुत कम ही मिलते हैं।।166।।

आज समाज में व्यवहारवान तो बहुत मिलते हैं,
हमारे जीवन में विचारवान भी बहुत मिलते हैं।
व्यवहार और विचारवान होना लक्ष्य नहीं जीवन का,
लक्ष्य प्राप्त करने वाले आचारवान कम ही मिलते हैं।।167।।

जो आज अनाथ है कल वह नर नाथ होता है,
जो आज उत्सव मनाता है कल शोक से रोता है।
उलझनें जमाने की कभी पूर्ण नहीं होती बन्धु,
भौतिकता की चकाचौंध में जिन्दगी व्यर्थ खोता है।।174।।

ना दौलत के नशे में इतने चूर हो जाओ,
ना जिस्म की ताकत पर तुम मगरूर हो जाओ।
ये खाक का पुतला एक दिन खाक में मिल जायेगा,
विशद जिन्दगी को पाकर ना इतने क्रूर हो जाओ।।175।।

राह को विशद मंजिल नहीं जान लेना,
इस तन को अपना जीवन नहीं मान लेना।
यह तन कर्म का संयोग है प्यारे बन्धु,
इस जीवन को सब कुछ नहीं पहिचान लेना।।176।।

अपनी सलौनी आँख से प्रभु के दर्शन कर लो,
गुरु चरणों में शीश झुकाकर वंदन कर लो।
पुनः कब मिलें इन गुरुवर के दर्शन बन्धुओ,
एक बार पवित्र भावना से अभिवन्दन कर लो।।177।।

दूसरों को दुःख देने वाला वे पीर होता है,
लाज ढके मानव की वह चीर होता है।
चारित्र का पालन करना आसान नहीं होता बंधु,
रत्नत्रय का पालन करने वाला महावीर होता है।।178।।

हम प्रभु का भजन और दर्शन चाहते हैं,
हम सत् संयम पूर्ण यह जीवन चाहते हैं।
मौत की भी परवाह नहीं है हमको मेरे बंधु,
हम गुरुवर के चरणों का स्पर्शन चाहते हैं।।179।।

तुम सदैव ही फूल की तरह खिलते रहना,
तुम सदैव दुग्ध में जल सा मिलते रहना।
कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों ना पड़े सामने,
किन्तु संयम के पथ पर सदैव चलते रहना।।180।।

सुन्दर दिखते बाग बगीचे, दिखती सुन्दर क्यारी है,
अनुपम फूल खिले हैं कितने, खिली हुई फुलवारी है।
नित प्रति ही मेरे गुरुवर जी, मूरत दिखे तुम्हारी यह,
विराग सिन्धु श्री गुरुवर के, चरणों में ढ़ोक हमारी है।।181।।

नीचे नहीं बन्धु ऊँचाई पर चढ़ना सीखो,
उपन्यास नहीं जिनवाणी पढ़ना सीखो।
संसार में तो भटकते आ रहे हैं अनादि काल से,
अब मेरे बन्धु मोक्ष मार्ग पर बढ़ना सीखो।।182।।

संत वह हैं जो वतन का कभी जिक्र नहीं करते हैं,
संत वह हैं जो पतन की भी फिक्र नहीं करते हैं।
होते हैं हजारों संत इस दुनियाँ में बन्धुओ,
संत वह हैं जो रत्न में भी चित्त नहीं धरते हैं।।183।।

शब्द बोलने के पूर्व हृदय तराजू से तौल लेना,
कठिनाईयाँ आने पर भी हृदय में समता रस घोल लेना।
शत्रु भी क्यों न हो तुम्हारा मेरे बन्धु जमाने में,
उससे भी दो शब्द हृदय के प्रेम से बोल लेना।।184।।

हर इन्सान अपने में पाप लिए बैठा है,
कुटिलता से भरा हुआ जाप लिए बैठा है।
सब कुछ प्राप्त कर लिया है आज के मानव ने,
फिर भी मानव जीवन में संताप लिए बैठा है।।185।।

हर जन्म अपने में संग्राम लिए चलता है,
हर सुबह अपने में शाम लिए चलता है।
यौवन को पाकर गरुर मत करना मेरे बन्धु,
हर यौवन बुढ़ापे का पैगाम लिए चलता है।।186।।

धर्म को जो पहिचाने वही नर अनोखा है,
इस जीव को तो कर्म ने कई बार रोका है।
समय रहते कुछ कर लीजिए मेरे बन्धु,
वरना जिन्दगी की हर श्वाँस पर धोखा है।।187।।

आज शासक भी कत्ल खाने खोल रहे हैं,
अहिंसक देश में हिंसा का जहर घोल रहे हैं।
अत्याचारी और व्यभिचारी कर रहे हैं देश बरबाद,
अण्डा और मांस खाकर महावीर की जय बोल रहे हैं।।188।।

हिंसा मिटने पर ही देश समृद्ध हो सकता है,
कैसे शांति हो देश में जब इंसान नहीं जगता है।
सत्य अहिंसा का नारा भूल चुके हैं लोग,
आज भारत देश को महावीर की आवश्यकता है।।189।।

हृदय से हृदय का प्यार कभी छूटता नहीं है,
रत्न असली विशद कभी भी फूटता नहीं है।
सब कुछ तो परिवर्तित हो सकता है मेरे भाई,
भक्त से भगवान का संबंध कभी टूटता नहीं है।।190।।

लोग कहते हैं कि आज कल विद्वान् नहीं मिलते,
लोग कहते हैं कि सच्चे इंसान नहीं मिलते।
अरे ! यहाँ इंसान और विद्वान दोनों ही मिल गये हैं,
गुरुवर के रूप में हमें भगवान मिल गये हैं।।191।।

नजरिया बदलते ही नजारे बदल जाते हैं,
समय आने पर अपनों के सहारे बदल जाते हैं।
विशद रुख बदलने की देर होती है,
सही राह मिल जाने पर किनारे बदल जाते हैं।।192।।

छाया तिमिर है काला, क्या करें ढ़लता नहीं,
सभी सिक्के चलते पर धर्म का सिक्का चलता नहीं।
देखते ही देखते ढल रही है विशद ये जिन्दगी,
सबका पता तो मिलता पर स्वयं का पता मिलता नहीं।।193।।

कुसुम कलिका पल्लवित हो ऐसा कोई श्रमदान हो,
प्रकाशमान शुभ्र चन्द्रिका को ज्योति का अनुदान हो।
हम प्राप्त कर सकें स्वयं से स्वयं को भाई,
हे प्रभु ! मेरे लिए अब ऐसा विशद वरदान हो।।194।।

भोग सिमट कर रह जाता है त्याग फैल लहराता है,
दशों दिशाओं में जाकर के ध्वजा त्याग फहराता है।
धीरे-धीरे त्याग त्याग कर आगे बढ़ता जाता है,
संत त्याग कर इस वसुधा से मोक्ष महल को पाता है।।195।।

बागवान जो पौधों को काटने की बात करता है,
वह और का नहीं स्वयं अपना घात करता है।
कर सको तो मिथ्यात्व का पर्दा फाश करो मेरे भाई,
जो ऐसा करता है वह जिन्दगी की शुरुआत करता है।।196।।

अमावस की रात में जरा भी उजाला नहीं है,
डॉक्टर तो बन बैठे गले में आला नहीं है।
कैसे होगा बच्चों का चारित्रिक अध्यात्मिक विकास,
धिक्कार है इतने बड़े गाँव में पाठशाला नहीं है।।197।।

इन्सान जन्म से डाकू और लुटेरा नहीं होता,
ऐसी कोई रात नहीं जिसका सबेरा नहीं होता।
जीव तो अनन्त हैं इस विशद संसार में,
हर जीव का सिद्ध शिला पर बसेरा नहीं होता।।198।।

वह भवन नहीं चिड़िया घर है जिसमें उठती किलकार नहीं,
वह बाग नहीं वीरान कहा जिसमें बहती झंकार नहीं।
वह ज्ञान भी सम्यक्ज्ञान नहीं जिसमें होता व्यवहार नहीं है,
वह जीवन भी क्या जीवन है जिसमें प्रभु का आधार नहीं।।199।।

अनगिनित दिलों में जिन्होंने ज्ञान के दीप जलाए हैं,
मूक और कमजोर प्राणियों को जो अभय दिलाए हैं।
सत्य और अहिंसा का जिन्होंने बुलन्दी से किया है सिंहनाद,
ऐसे विशद ज्ञानी भगवान महावीर (राम) कहलाए हैं।।200।।

हम हैं यहाँ अन्जान, यहाँ भक्त भी अन्जान मिले हैं,
हमारे सौभाग्य से संत हमें विशद विद्वान मिले हैं।
हम तो यह मानते हैं यहाँ आज मेरे बन्धुओं,
हम बड़भागी हैं जो घर बैठे हमें भगवान मिले हैं।।201।।

हम अपने ही घर में अन्जान बनके आये हैं,
अधिक क्या दो दिन के मेहमान बनके आये हैं।
गुरुदेव को पाकर के विशद धन्य हो गये हम,
गुरुदेव मेरी जिन्दगी में भगवान बनके आये हैं।।202।।

जो अपनी शाश्वत शक्ति का गाता गौरवगान नहीं,
उस लोक के किसी छोर पर मिल सकता भगवान नहीं।
निज पर का जो भेद ना जाने वह होता विद्वान नहीं
विशद सत्य हम कहते हैं कि वह सच्चा इंसान नहीं।।203।।

मजा बातों में नहीं कुछ कर दिखाने में है,
उलफत में खुद की डूबकर दुगना निखर जाने में है।
सम्मान सबको नहीं मिलता विशद संसार में,
कर गुजरने वाला इन्सान श्रेष्ठ इस जमाने में है।।204।।

मिट्टी के पुतले से इंसान-इंसान नहीं होता,
हर इंसान का दुनियाँ में सम्मान नहीं होता।
अरे ! क्यों स्वयं को स्वयं ही ठग रहे मेरे बंधु,
आराधना के बिना कोई भगवान नहीं होता।।205।।

अहिल्या को तारने के लिए राम आ गये,
कंस को मारने के लिए घनश्याम आ गये।
आज हम अन्जान किसे पुकारे मेरे बन्धु,
जब घर-घर में रावण और कंस छा गये।।206।।

कुछ लोग आँसुओं से अपना मुँह धो रहे हैं,
रो-रो कर अपना अमूल्य समय खो रहे हैं।
कितने अज्ञानी और मूर्ख हैं विशद वह,
जो संतों की बुराई करके कर्म बीज बो रहे हैं।।207।।

आकाश की ऊँचाईयों को छूने वाले महल भी उजड़ जाते हैं,
एक साथ जन्म लेने वाले पक्षी भी बिछड़ जाते हैं।
मन में उठी खोट को विशद मन में दबाकर नहीं रखना।
मन की खोट से पुराने-पुराने संबंध भी बिगड़ जाते हैं।।208।।

आज के लोग दूध को माँस जानने लगे हैं,
कसाई के काम को खेती पहिचानने लगे हैं।
हे परमात्मा ! उन्हें कैसे समझाया जाये,
विशद जो शराब को ठण्डाई मानने लगे हैं।।209।।

हर इंसान के आगे विशद मौत के पहरे हैं,
नरक निगोद के कूप सबसे अधिक गहरे हैं।
धर्म की बात सूझती कहाँ है लोगों को प्यारे बंधु,
धर्म के नाम पर तो लोग अन्धे और बहरे हैं।।210।।

भगवान हमें मिलेंगे विश्वास लिए बैठे हैं,
शुभ दर्श विशद पायेंगे यह आस लिए बैठे हैं।
हाथ उठाकर आशीष दो क्यों चुप बैठे हो भगवन्,
हे प्रभु ! हम चरण-स्पर्श की अरदास लिये बैठे हैं।।211।।

जिन्दगी में प्यार की सरगम भी होना चाहिए,
मन में अपना दूसरों का गम भी होना चाहिए।
अधर्म और पाप से मुरझा जाते हैं मन के चमन,
इन्साफ की जिन्दगी जी सकें वह दम भी होना चाहिये।।212।।

बढ़ो तुम आँधियाँ तूफान सबको मोड़ सकते हो,
बढ़ो तुम संकटों के दृढ़ कलेजे फोड़ सकते हो।
बताया रूस अमेरिका ने केवल चाँद को छूकर,
बढ़ो तुम सूर्य के ऊपर तिरंगा गाढ़ सकते हो।।213।।

बढ़ो तुम देश दुनियाँ की नई तकदीर बन जाओ,
बढ़ो तुम देश की फिर से नई तस्वीर बन जाओ।
कहो मत एक ही इन्सान से तुम वीर बनने को,
बढ़ो तुम इस तरह से कि स्वयं 'महावीर' बन जाओ।।214।।

कभी गर्मी कभी सर्दी ये तो मौसम के नजारे हैं,
रात में चमकते कभी चाँद कभी सितारे हैं।
विशद आश्चर्य क्यों न हो लोगों को देखकर,
प्यासे वह रहते हैं जो दरिया के किनारे हैं।।215।।

जो इस धरा पर सत्य अहिंसा की तस्वीर हो गये,
जो संसार तारक भवसिंधु के तीर हो गये।
जियो और जीने दो का विशद नारा गूँजा धरा पर,
ऐसे युग प्रवर्तक भगवान महावीर हो गये।।216।।

सर पर है मेरे धूप और पग तले छाँव है,
अपार समुन्दर में विशद पत्थर की नाव है।
यह संत तो बड़े निराले होते हैं मेरे बन्धु,
इनका न कोई शहर है और न कोई गाँव है।।217।।

दुःख भरी नदियों में दर्द के किनारे हैं,
अमावस की रात में ना चाँद न सितारे हैं।
जख्म गहरे हो रहें परहेज से दवा से,
कलिकाल में विशद यह वक्त के नजारे हैं।।218।।

जिन्हें नहीं है भूख उन्हें हम भोजन खिलाया करते हैं,
भूखे तो द्वार से भूखे ही चले जाया करते हैं।
इन्सान विशद कितना गिर चुका है अपने जीवन में,
अरे ! कौवे भी अपने साथियों को बुलाकर खाया करते हैं।।219।।

अनदेखी राहों में ये पहला अहसास है,
कितनी है पृथ्वी और कितना आकाश है।
शुभ मंजिलें पाने की चाह जगी है मन में,
भगवान हाथ थामों ये चरणों में अरदास है।।220।।

आते ही काल के संसार बदल जायेगा,
तेरे इस जीवन का आधार बदल जाएगा।
श्वाँसों के रुकते ही गैर होंगे सब सपने,
अपने ही लोगों का भी प्यार बदल जाएगा।।221।।

मैं चलते-फिरते तेरी याद किया करता हूँ,
तेरी खुशनसीब जिन्दगी की फरियाद किया करता हूँ।
वे संत विशद चलते-फिरते तीर्थ हैं मेरे बंधु,
मैं खुले आम यह सिंहनाद किया करता हूँ।।222।।

ये गुरुवर जन-जन में कर रहे अमन हैं,
भक्त उनके चरणों करते शत् शत् नमन् हैं।
ये गुरुवर कलिकाल में महावीर बनकर आए हैं,
ये सत्य अहिंसा के 'विशद' महकते चमन हैं।।223।।

मैं नित्य ही गुरुदेव के गुण गाता रहूँ,
अपने इन नयनों से गुरु दर्श पाता रहूँ।
विशद मन में यही भावना रहती है हरदम,
गुरुदेव के चरणों में सदा सर झुकाता रहूँ।।224।।

जन्म से कोई नीच कोई महान् नहीं है,
वीतराग विज्ञान के अलावा कोई विज्ञान नहीं है।
विशद संतों का दावा है यह मेरे बन्धुओं,
पुरुषार्थ से बढ़कर इन्सान की कोई पहचान नहीं है।।225।।

इन्सान की जिन्दगी क्या एक कहानी हैं,
विषय भोगों में लीन होकर बिता रहा जिन्दगानी है।
महावीर ने उपदेश दिया विषयों से बचने का,
किन्तु इन्सान कर रहा विशद कितनी मनमानी है।।226।।

जन्म मरण क्या एक कर्म श्रृंखला है,
यह मानव का तन पता नहीं कैसे मिला है।
इन्सान के कारनामें कितने बदल गये हैं,
देखकर मन में विशद होती भारी गिला है।।227।।

कल का दिन देखा हमने ना, आज के दिन को खोए क्यों,
यह तन पाया मुक्ति हेतु कर्म बीज फिर बोए क्यों।
मिला समागम जिन संतों का मोह नींद में सोए क्यों,
जिन घड़ियों में हँस सकते हैं उन घड़ियों में रोए क्यों।।228।।

करे जो कार्य खोटे वह जहाँ में मर्द गंदा है,
रहे जो भक्ति से खाली नहीं वो प्रभु का बंदा है।
भलाई कर रहा जग में विशद इस जिन्दगानी में,
मरण के बाद भी मानव जहाँ में आज जिन्दा है।।229।।

विशद करता जो धर्म के नाम पर तकरार है,
गल्ती करने पर भी जिसे नहीं स्वीकार है।
धर्म के नाम पर कलंक बने बैठे हैं कुछ लोग,
ऐसे धर्म के ठेकेदारों को धिक्कार है धिक्कार है।।230।।

बहुत अच्छा है वह मानव प्रगट जो पाप करता है,
अधम होता है वह मानव जो धन से कोष भरता है।
विशद यह जिन्दगी पाकर कहें क्या उन जवानों को,
अधम से वह अधम होता जो पर्दे में बिगड़ता है।।231।।

नहीं बेकार होती हैं संत की शांत तस्वीरें,
नजारे नर्म होते ही बदल जाती हैं तकदीरें।
पत्थर की मूर्ति के आगे सजदा करना व्यर्थ नहीं,
अगर विश्वास सच्चा हो तो कट जाती हैं जंजीरें।।232।।

फूल बहुत खिलते पर सुगन्ध देते हैं कोई-कोई,
कर्म तो बहुत करते हैं पर अन्त करते हैं कोई-कोई।
इन्सान पहले बहुत थे आज भी कम नहीं है,
पूजा भक्ति बहुत करते पर संत बनते हैं कोई-कोई।।233।।

तीव्र आवेश में जरा भी होश नहीं होता है,
वासना में कभी भी संतोष नहीं होता है।
विशद संत जब अपने आप में खो जाते हैं,
तब उन्हें जोश में भी आक्रोश नहीं होता है।।234।।

ये जीने वाले कुछ इस तरह जीना मरना,
भले ही कष्ट उठाकर तुम कष्ट औरों के हरना।
तेरी जिन्दगी और मौत को भी लोग याद करें,
ये जीने वाले कुछ इस तरह कार्य करना।।235।।

जिन्दगी तो जिन्दगी है जो स्वयं के लिए जिए,
वह भी क्या जिन्दगी है जो गम के लिये जिए।
उनके जीने से तो मरना बहुत अच्छा है मेरे भाई,
जो विनय के लिए नहीं अहं के लिए जिये।।236।।

गीली लकड़ी की तरह जल रहे हैं लोग,
कामना की विशद छाँह में पल रहे हैं लोग।
पैरों में पड़ी है मोह की बेड़ियाँ मेरे बन्धु,
फिर भी बड़ी शान से चल रहे हैं लोग।।237।।

कठोर शब्द हृदय में चुभने वाले शूल हैं,
बाग की सुवास मिठास होती विशद फूल हैं।
हम फूल नहीं चुन पाये अपने जीवन में,
यह हमारे जीवन की सबसे बड़ी भूल है।।238।।

अंधों से मौसम की बहार मत पूछो,
बहरों से संगीत की गुंजार मत पूछो।
आत्मा और परमात्मा में क्या अंतर है,
विशद निश्चय वादियों में व्यवहार मत पूछो।।239।।

हृदय में चुभन की दुल्हन बोल रही है,
नयन से मन की उलझन खोल रही है।
विशद जिन्दगी की पीड़ा को समझिए,
जिन्दगी के इर्द-गिर्द ही मौत डोल रही है।।240।।

मूर्त का अमूर्त से बन्धन नहीं होता,
मूर्खों का कहीं भी अभिनन्दन नहीं होता।
तन के ऊपर विशद धागा भी यदि है,
तो वह महावीर का लघुनन्दन नहीं होता।।241।।

इतिहास विशद घटनाओं का भण्डार होता है,
आगम मानव जीवन का श्रृंगार होता है।
अन्जाना राही तो भोर का सूरज है मेरे भाई,
वीरवाणी का पीयूष ही जीवन का आधार होता है।।242।।

इन्सान का इन्सान से संबंध होना चाहिए,
धर्म और अधर्म का कुछ द्वन्द होना चाहिए।
बढ़ रही कलिकाल की गति मंद होनी चाहिए,
कत्लखाने बढ़ रहे हैं जो बंद होने चाहिए।।243।।

जिन्दगी में प्यार की सरगम भी होना चाहिए,
मन में अपने दूसरों का गम भी होना चाहिए।
बैर और कटुता से मुरझा जाते हैं मन के चमन,
पशुता से उठकर जी सके वो दम भी होना चाहिए।।244।।

हे प्रभु ! यदि भूलने लग जाऊँ तो आगाह कर देना,
भूल को मेरी प्रभु तुम बेपरवाह कर देना।
मैं हूँ आपके चरणों का विशद सेवक भगवान,
मुझे भी अपने जैसा ही हमराह कर देना।।245।।

अरे ! इंसान पत्थर का कोई अरमान नहीं होता,
उत्थान है पर हर इंसान का उत्थान नहीं होता।
भगवान होता है इंसान भी पाषाण भी मेरे बंधु,
हर इन्सान और पाषाण भगवान नहीं होता।।246।।

रोशनी चाँद से होती है सितारों से नहीं,
गन्दगी बदबू से होती है बहारों से नहीं।
अपने इशारे अपने ही पास रहने दीजिए मेरे भाई,
उन्नति आचरण से होती है विचारों से नहीं।।247।।

मेरी जिन्दगी का वास्ता आप से है,
मेरी मंजिल का रास्ता आप से है।
नहीं है अंदर में और कोई मेरे भगवन्,
मेरी हृदय में आस्था विशद आप से है।।248।।

यूँ तो जिन्दगी में कई लोग जिया करते हैं,
लाभ फिर भी जीवन का नहीं लिया करते हैं।
जिन्दगी बेहतर कैसे बने विशद लोगों की,
जो निरन्तर मोह की महा मदिरा पिया करते हैं।।249।।

एक उजली दृष्टि अन्तर में समा गई है,
एक भोली भावना गंगा में नहा गई है।
एक पल की साधना का कमाल है यह,
एक मंगल ज्योति विशद मन में जला गई है।।250।।

कैसे बताएँ दिल की बात बताई नहीं जाती है,
मुद्धत की बिगड़ी पल में बनाई नहीं जाती है।
हम अपने अंतर मन की टीस को कैसे कहें भाई,
अपने से अपनी बात छिपाई नहीं जाती है।।251।।

प्रभु चरणों से निगाह उठाई नहीं जाती है,
खुद अपने दिल की शम्मा जलाई नहीं जाती है।
सजदा का बहाना है विशद यह गर्दन,
खुद-ब-खुद श्रद्धा से झुकती है झुकाई नहीं जाती है।।252।।

घाव भारी और गहरा हो गया है,
मानव गूंगा और बहरा हो गया है।
चट्टाने तो खड़ी हैं आज प्रगति की राह में,
दुराचरण से मानव का भद्दा आज चेहरा हो गया है।।253।।

राह सहल है आज विश्व की चाह बड़ी तूफानी है,
स्वयं आपको भूली आतम द्रव्य की वह दीवानी है।
बंधी मोह के बंधन में ज्यों आई हुई जवानी है,
किन्तु विश्व में चाल संत की 'विशद' बड़ी मस्तानी है।।254।।

जो संतों की मूक भाषा समझते हैं,
वह फूल तो ठीक काँटों के बीच भी हँसते हैं।
संत अमृत से भरे बादल होते हैं प्यारे बन्धु,
जो सदैव विशद मेघराज बनकर बरसते हैं।।255।।

आज गुलिस्तान भी उदास दिखाई दे रहा है,
आज धुंधला सा आकाश दिखाई दे रहा है।
हिंसा का ताण्डव नृत्य हो रहा चारों ओर,
आज पाप का मधुमास दिखाई दे रहा है।।256।।

होंसले जिनके सदैव ही सर्द होते हैं,
जो दीन दुखियों के भी हमदर्द होते हैं।
विशद इन्सानियत को उन्हीं ने पाया है,
पुरुषार्थ करने वाले ही सच्चे मर्द होते हैं।।257।।

झूठ बोलने वालों पर भगवान भी वहम करता है,
इन्सान इन्सान को देखकर ही अहं करता है।
दुनिया में विशद प्यार बाँटना सीखो,
रहम करने वालों पर रहमान भी रहम करता है।।258।।

हम किसी के दर्द में हाथ बटा पाएँ,
किसी गिरे हुये इन्सान को हम उठा पाएँ।
आनी जानी इस जिन्दगी को खुशनसीब समझेंगे,
यदि किसी की भलाई में अपनी जिन्दगी लुटा पाए।।259।।

मंदिर जाने से कुछ होता है हम नहीं जानते हैं,
क्या होते देव शास्त्र गुरु हम नहीं पहिचानते हैं।
अहंकार ने डेरा डाला है हमारे दिल पर बन्धु,
हमारा सिर ऊँचा होना चाहिए हम तो यह मानते हैं।।260।।

हम रामराज्य में नहीं प्रजातंत्र में जी रहे हैं,
प्रजातंत्र के पहले भारत में अंग्रेज भी रहे हैं।
अंग्रेजों की वृत्ति आ गई है लोगों के अंदर,
बियर बार शराब को ठण्डाई मानकर पी रहे हैं।।261।।

अभाव गम का नहीं मन मोहक बहारों का है,
अभाव अंधेरों का नहीं उजले चाँद सितारों का है।
सुख सागर में रमण कर भी चेतना में जलन क्यों,
यह प्रश्न किसी एक का नहीं हजारों हजारों का है।।262।।

दुनियाँ में सैकड़ों आये आके चले गये,
आकर स्वयं से स्वयं को मिला के चले गये।
कुछ इस प्रकार से भी आये जहाँ में मेरे बन्धु,
कोई खास करामात दिखा के चले गये।।263।।

कलियुग में पैर हीन को भी पहाड़ चढ़ते देखा,
आज अपने भाई से ही भाई को लड़ते देखा।
जो कुछ हो रहा है वह भी कम है आज विशद,
आज तो सत्य को भी सूली पर चढ़ते देखा।।264।।

अंधेरा नहीं उजाले को बुलाना है हमें,
मोह नींद में सोने वालों को जगाना है हमें।
हम महावीर की संतान हैं किसी और की नहीं,
सत्य अहिंसा के गीत जग को सुनाना है हमें।।265।।

आजकल लोगों के इरादे बदल रहे हैं,
कदम उठते नहीं फिर भी लोग चल रहे हैं।
कलिकाल और पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव है यह,
कि लोग विशद शैतानियत के साँचे में ढल रहे हैं।।266।।

कोई गम से भरा रहकर जिन्दगी व्यर्थ खोता है,
बिना संसार के त्यागे नहीं भव पार होता है।
कोई सज-धज के बैठा था शीश पर थे मुकुट भूषण,
वही कल को अकेला खाक में जाकर के सोता है।।267।।

मैं श्रद्धा के फूल खिलने की आस लिए बैठा हूँ,
हृदय के प्रांगण में चुभन का मधुमांस लिए बैठा हूँ।
विशद संसार पार करने की चाहत है मन में,
अपनी जिन्दगी में ज्ञान ध्यान की प्यास लिए बैठा हूँ।।268।।

जिन्दगी के किनारे पर मौत का मुकाम होता है,
लोक के शिखर पर चेतन का धाम होता है।
स्वयं की भूल में भटक रहे संसार सागर में,
कर्म से छूटने पर सिद्ध शिला पर विश्राम होता है।।269।।

इस दुनियाँ में कितने लोग आकर चले गये,
अच्छी बुरी कुछ करामात दिखाकर चले गये।
कौन रह सका है इस बेरहम दुनियाँ में,
जो आये हैं अंत में वह हाथ पसारे चले गये।।270।।

स्वर्ण कलश की भाँति तुम्हें भरना नहीं आता,
परमात्मा के चरणों में समर्पण करना नहीं आता।
मरता कौन नहीं है इस संसार सागर में मेरे भाई,
वीर निकलंक की भाँति तुम्हें मरना नहीं आता।।271।।

इस जिन्दगी का नहीं कुछ भी भरोसा है यारों,
काल का कराल किसी से टाले नहीं टलता है यारों।
करे उपकार औरों का वह मरकर भी जिन्दा है,
राम रावण से बली भीम योद्धा भी चले गये यारों।।272।।

इस बेरहम दुनियाँ में जीकर हमें करना क्या है,
अपयश को लेकर जिन्दगी में मरना क्या है।
मौत से डरना नहीं वह तो नव जीवन का श्रृंगार है,
चेतन तो मरता नहीं फिर मरने से डरना क्या है।।273।।

इस दुनिया के लोग सिंह से भी लड़ने की हिम्मत रखते हैं,
सिंह तो क्या चंद्र और सूर्य की ओर बढ़ने की हिम्मत रखते हैं।
यह दुनिया भरी हुई है शैतान और हैवानों से मेरे बन्धु,
इन्सान उन्हें कहते जो सिद्ध शिला पर चढ़ने की हिम्मत रखते हैं।।274।।

जिओ तो इस तरह कि जिन्दगी सम्हल जाए,
मरो तो इस तरह कि मौत भी सिहर जाए।
हमारे अंदर विशद कर्मों का ढेर लगा है,
मिटो तो इस तरह कि कर्म भी बिखर जाएं।।275।।

लगी तस्वीर है तेरी मेरे दिल के पास तक,
तेरा ही नाम पुकारूँगा मैं जमीं से आकाश तक।
अपनी जिन्दगी समर्पित कर दी विशद जिनके चरणों में।
हम याद रखेंगे उन्हें अंतिम श्वाँस तक।।276।।

सिद्धांत का ज्ञान करने के लिए जैन आगम चाहिए,
कर्मों के आस्रव से बचने के लिए यम नियम चाहिए।
जिन्दगी ह्रास नहीं विकास का नाम है मेरे बन्धुओ,
आत्म उत्थान के लिए विशद संतों का समागम चाहिए।।277।।

यह संत जहाँ में ऐसे हैं जो मोक्ष मार्ग के राही हैं,
यह विशद ज्ञान की गंगा में पल-पल के अवगाही हैं।
सद् भक्तों की जीवन नौका में बस इनका ही आराधन है,
यह समयसार रामायण है ये आतम के अवगाही हैं।।278।।

हम संत हैं हमेशा भगवंत के शुभ गीत गायेंगे,
हम विशद भक्ति से प्रभु चरणों में शीश झुकायेंगे।
अपनी ये जिन्दगी समर्पित कर दी है उनके चरणों में,
हमें विश्वास है कि वह हमारे हृदय में उतर आयेंगे।।279।।

भले ही स्वयं को हमने धन से गरीब पाया है,
इस जिन्दगी में हमने अच्छा नसीब पाया है।
धन्य हो गया हमारा विशद माथा और ये जीवन,
इसलिए तो स्वयं को संतों के करीब पाया है।।280।।

पूजा करने वाला इक दिन स्वयं ही पूजने लगता है,
प्रभु को भजने वाला इक दिन स्वयं को भजने लगता है।
पूजन और भक्ति विशद जीवन विकास की दिशा है,
बन जाता भगवान स्वयं फिर ऊपर उठने लगता है।।281।।

ये संत दिगम्बर ऐसे हैं जिनके गुण का कोई अंत नहीं,
ये चलते-फिरते हैं तीरथ, हैं विशद शांति के मंत्र यही।
है इनका कोई भेष नहीं उपमाएँ सारी फीकी हैं,
है वीतराग ही वेष परम कलिकाल में हैं भगवंत यही।।282।।

सम्यक्ज्ञान से अंधकार में भी प्रकाश नजर आता है,
प्रभु चरणों में तो ग्रीष्म में मधुमास नजर आता है।
भक्त की विशद भक्ति का नजारा अजब ही होता है,
प्रभु चरणों में हर पल नया इतिहास नजर आता है।।283।।

प्रभु चरणों में लोगों की क्या आराधना नजर आई,
विशद जिन संतों की शुभ साधना नजर आई।
यहाँ संत चरणों का नजारा भी क्या है मेरे बन्धु,
आज पहली बार ऐसी प्रभावना नजर आई।।284।।

न जाने कब विशद जिन्दगी की शाम आ जाये,
जिन्दगी मौत से पहले व्यर्थ बदनाम न हो जाये।
चाहत दिल में निरन्तर गूँजती रहती है मेरे बन्धु,
मेरी यह जिन्दगी शायद किसी के काम आ जाये।।285।।

संत संगति से लोगों के खोटे काम बदल जाते हैं,
संस्कार पाते ही मेरे बन्धु नाम बदल जाते हैं।
प्रभु चरणों में विशद स्थान सभी को नहीं मिलता,
प्रभु चरणों में आकर दुष्टों के भी परिणाम बदल जाते हैं।।286।।

इन्सान की जिन्दगी कम और अनचाही चाहें हैं,
इन्सान की सुविधायुक्त इच्छा दुविधायुक्त राहें हैं।
इन्सान दुःखी औरों को देखकर है स्वयं से नहीं,
विशद पग-पग पर उलझन और पल-पल में आँहें हैं।।287।।

कल के लिए तो विशद महाकाल निगल रहा है,
आश्चर्य है मगर इंसान कल के सहारे चल रहा है।
भगवान महावीर आप ही आकर समझाएँ लोगों को,
कि तुम्हारी जिन्दगी का पल-पल निकल रहा है।।288।।

चरण गतिशील जिसके हैं वहाँ अवरोध टलता है,
लक्ष्य जिसका हुआ निश्चित, विशद वो राह चलता है।
तिमिर जब घोर छाया हो, वहाँ पर दीप जलता है।
शुभम् आनंद प्रभु पद में विशद भरपूर मिलता है।।289।।

वीतराग की विशद अवस्था, अद्भुत है स्वीकार करो।
सत्य अहिंसा परम धर्म की, गरिमा अंगीकार करो।
तुमको है सौगंध तुम्हारे आतम बल पुरुषत्व की,
क्षमा विनय ऋजुता शुचिता से गुरुओं का सत्कार करो।।290।।

आँख की स्थिति विशद बड़ी ही विचित्र होती है,
वह संसार की प्राप्त निधियों को देख प्रसन्न होती है।
थोड़ी सी दुःखित यदि हो जाए मेरे बंधुओं,
फिर देखना आँख किस तरह आँसू बहाकर रोती है।।291।।

रात को आसमाँ में विशद तारे चमकते हैं,
राज की बात हर कोई थोड़े ही समझते हैं।
भगवन् आप हमसे इतने दूर क्यों हो गये,
आपकी याद में निरन्तर ही आँसू टपकते हैं।।292।।

करे जो जुल्म गरीबों पर, उसे शैतान कहते हैं,
जो तूफानों से ले टक्कर, उसे इंसान कहते हैं।
विशद सत्य को साकार करके तो देखो मेरे बन्धु,
जो सत्य के आधार होते उन्हें भगवान कहते हैं।।293।।

मुहब्बत चार दिन की है जिन्दगी की कहानी में,
मगर यह बातें किसको याद रहती हैं जवानी में।
नरक में पेले जाते हैं जीव कई एक यूँ घानी में,
छुड़ाए दुर्गति से जो, कर्म कर जिन्दगानी में।।294।।

इतिहास विशद घटनाओं का भण्डार होता है,
आगम मानव जीवन का श्रृंगार होता है।
अनजाना राही तो भोर का सूरज है मेरे भाई,
वीर वाणी का पीयूष ही जीवन का आधार होता है।।295।।

किसी को मिथ्यादृष्टि कहना सबसे बड़ी गाली है,
श्रद्धान अंतर में जगाना सूर्योदय की लाली है।
जीवन सार्थक हो जायेगा विशद उनका,
जिसने अंतर में ज्ञान की ज्योति जला ली है।।296।।

पुरुषार्थ कर तैरने वाले सागर पार हो गये,
उन महापुरुषों के स्वप्न विशद साकार हो गये।
भगवान को अपने अन्दर में खोजो बाहर नहीं,
एक महावीर हुये जो धर्म के अवतार हो गये।।297।।

सूर्योदय के पूर्व में जैसे सघन तिमिर गहराता है,
सागर में सागर मिलने से सागर दुहरा लहराता है।
इन संतों पर विशद धर्म टिका है मेरे बन्धुओं,
इन पावन संतों के द्वारा धर्म ध्वज फहराता है।।298।।

गर लड़ना तुम्हें इष्ट है तो लड़ो सत्कर्म की खातिर,
गर बढ़ना तुम्हें इष्ट है तो बढ़ों मोक्ष की खातिर।
श्रद्धा से नाम लड़ने वाले का भी लिया जाता है,
जो लड़ता है विशद सद्धर्म की खातिर।।299।।

इंसान की जिन्दगी क्या एक खिलौना है,
जिन्दगी को पाकर क्या? रोना ही रोना है।
'विशद' संतों को पाकर भी कहाँ खोए हुए हो,
मेरे भाई समय जागने का है, अब नहीं सोना है।।300।।

किस्मत से भले ही गिर जाना पर कर्म से नहीं,
सम्मान से सिर झुका लेना पर शर्म से नहीं।
कहीं से भी गिर जाना अपने जीवन में बंधुओ,
आचरण से भले गिर जाना पर धर्म से नहीं।।301।।

आइना यदि साफ है तो तस्वीर साफ आती है,
श्वाँसों में हो भक्ति तो बाँसुरी साफ गाती है।
भक्त के लिए भक्ति बड़ी सरल होती है बंधुओ,
विशद भक्ति में बड़ी से बड़ी गल्ती माफ होती है।।302।।

भारत के कोने-कोने में जिन संतों की गरिमा है,
नहीं कल्पना कर सकता कोई कितनी इनकी महिमा है।
नैतिकता का दीप जलाने संत धरा पर आये हैं,
मोह तिमिर को दूर हटाकर मार्ग दिखाने आये हैं।।303।।

मंजिल मिले न मिले इसका हमें गम नहीं है,
राह पर बढ़ने में मेरी गति भी कुछ कम नहीं है।
हिम्मतहार कर बैठे किस मुकाम पर मेरे बन्धु,
होंगे कोई गैर विशद वह हम नहीं हैं।।304।।

इन्सान जो मुसीबत में भी हिम्मत नहीं हारता है,
इन्सान जो चींटी को भी अपने हाथ से नहीं मारता है।
वास्तव में जैन वह होता है इस जहाँ में मेरे बंधु,
जो अपनी जिन्दगी को विशद संयम से सँवारता है।।305।।

खार में पल कर कली रोती है खिलती नहीं है,
ये जिन्दगी आँसू बहाने के लिए मिलती नहीं है।
जिन्दगी का नाम विशद मुस्कराहट है रोना नहीं,
क्योंकि चिन्गारी के बिना ज्योति जलती नहीं है।।306।।

कांटे किसी को मत चुभा क्या नूतन सुमन फूला है तू,
हक में तेरे तीर है किस बात में भूला है तू।
कभी ऊपर कभी नीचे चल-चला-चल जिन्दगी है,
नहीं स्थिर रह सकेगा विशद वह एक झूला है तू।।307।।

भोगी को तो भीड़ चाहिए योगी को एकांत,
जैनधर्म का नेत्र विशद है स्याद्वाद अनेकांत।
योगी को शांति है जिसमें भोगी होय अशान्त,
मानव श्रद्धा हीन होय वह होता है उद्भ्रान्त।।308।।

भव पार करने की बात कौन नहीं करता है,
कौन है दयालु जो जीवों के दुःख नहीं हरता है।
सम्यक्ज्ञानी वह होते हैं इस जहाँ में बंधु,
जिनके मुख से सदा सम्यक्ज्ञान का झरना झरता है।।309।।

कुछ भलाई करले गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ,
जिन्दगी जब ना रहेगी राजधानी फिर कहाँ।
जो भी दिखता सामने यह नाश सब हो जायेगा,
जिन्दगी मिल जाये तो भी ये जवानी फिर कहाँ।।310।।

आज विश्व मौत की चोटी पर खड़ा है,
इन्सान के सिर पर हिंसा का भूत चढ़ा है।
कब आसमाँ टूट पड़े या जमीं हिल जाए,
क्योंकि पूर्ण भर चुका अब पापों का घड़ा है।।311।।

इन्सान की जिन्दगी का आरम्भ भी है अंत भी है,
यह आकाश विशद असीम और अनन्त भी है।
इंसान के अंदर एक नहीं अनेक रूप समाएँ हैं,
इंसान के अंदर शैतान भी है विशद संत भी है।।312।।

उगती हुई जिन्दगी और ढलती हुई शाम है,
जिन्दगी की राह में मौत का मुकाम है।
लम्बे सफर में अज्ञान का अंधेरा है,
लक्ष्य मिले कैसे विशद करता विश्राम है।।313।।

फूल खिलने पर उसमें महक आती है,
स्वर्ण तपने पर उसमें चमक आती है।
पिसने पर मेंहदी का रंग देखो विशद,
भक्त में भक्ति हो तो उसमें चहक आती है।।314।।

इन्सानियत के लिए अशुभ परिणाम बदलना सीखो,
मुक्ति की है चाह तो मोक्ष मार्ग पर चलना सीखो।
प्रकाश बाहर नहीं विशद अंदर में भरा है,
प्रकाश पाने के लिए दीप बनकर जलना सीखो।।315।।

जिसकी अनुपम आभा पाकर खिलता विशद सुमन है,
चरणों की रज से प्रमुदित ये पृथ्वी और गगन है।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की जो साक्षात् मूर्ति हैं,
आचार्य परमेष्ठी गुरु चरणों में शत् शत् बार नमन् है।।316।।

चंदन घिसने पर भी महकता रहता है,
स्वर्ण तपने पर भी चमकता रहता है।
वृक्ष पत्थर मारने पर भी विशद फल देता है,
साधु उपसर्गों में भी हँसता रहता है।।317।।

कमल नीर में रहकर भी नीरज कहलाता है,
कमल पंक में रहकर भी पंकज कहलाता है।
महावीर ने अपना नाम सार्थक कर लिया मेरे भाई,
अधीर रहने वाला भी आज धीरज कहलाता है।।318।।

पूछ कर चाँद ने धरती को यह आदेश भेजा है,
नहीं कुछ आवरण डाला दिगम्बर भेष भेजा है।
जीत होती विशद वैराग्य के सच्चे पुजारी की,
महावीर ने देश दुनियाँ को यही संदेश भेजा है।।319।।

यही वह चांद जिसने विशद अमृत पिलाया है,
गगन से भूमि तक पावन यही संदेश लाया है।
महकती धर्म की सौरभ आज जो देश दुनियाँ में,
विशद सुर वृक्ष है पावन कि फैली जिसकी छाया है।।320।।

नीर से भरे कलश पावन चरणों में नित्य झरते हैं,
झुकाकर माथ पर्वत से नमन् आदित्य करते हैं।
संतों और सदाचरण से लोग दूर भाग रहे हैं,
किन्तु अलमारियों में लोग विशद साहित्य भरते हैं।।321।।

जीवन की तरणी में भारी इच्छाओं के कंकड़ हैं,
नित्य निरंजन ज्ञान स्वरूपी अंदर में रवि शंकर हैं।
तारण तरण विशद हुए भवसागर में मेरे भाई,
अनन्त चतुष्टय धारी विशद अद्वितीय तीर्थंकर हैं।।322।।

आशाओं के पतझड़ में मधुर बसंत कहाँ है,
वासना में डूबी हुई लालसा का अंत कहाँ है।
चारों दिशाओं में घूमकर खोज लिया हमने,
परन्तु मेरे भाई जहाँ में विरागसागर जैसे संत कहाँ हैं।।323।।

भावुकता में आकर संयम जबरन ओड़ लिया है,
निज से नाता जोड़ न पाये जग से नाता तोड़ लिया है।
जिसको छोड़ दिया था उससे नाता जोड़ लिया है,
लक्ष्य बनाया था जो अंतिम उससे मुख को मोड़ लिया है।।324।।

परम कल्याण मयी यह वीतरागी चरण हैं,
प्रभु की शरण ही विशद एक शरण है।
आवरण फाड़ डालो लगा जो चेतना पर,
जिन संत ही एक मात्र तारण तरण हैं।।325।।

फूल खिलकर महकते हैं तभी पाते हैं महफिल को,
पुरुषार्थ करता है जो वह जीत लेता है मुश्किल को।
तपाते तन बदन को जो विशद चारित्र धरते हैं,
संत कर्मों से लड़ते हैं तभी पाते हैं मंजिल को।।326।।

हम दुनियाँ के कार्यों से कुछ अवकाश चाहते हैं,
हम प्रभु चरणों में श्रद्धा और विश्वास चाहते हैं।
अपने अन्तर्तम को विशद जागृत करने के लिए भाई,
परम पूज्य गुरुवर का नगर में चातुर्मास चाहते हैं।।327।।

कली का मुस्कराना क्या? मौत का पैगाम है,
उसकी मुस्कराहट पर लिखा विशद मौत का नाम है।
इन्सान क्यों गरुर करता चार दिन की जिन्दगी पर,
यह भी धूल बन जाएगी जो चमकती हुई चाम है।।328।।

किया करते हैं खिदमत लोग जमाने में अमीरों की,
कज़ा को रोक लेती है दुआ रोशन जमीरों की।
भटकता अन्जान फिरता क्यों विशद शाही जमाने में,
भला मंजूर है अपना तो कर खिदमत फकीरों की।।329।।

कषाय त्याग कर परिश्रम से काम करना चाहिए,
द्वार पर आये अतिथि का सम्मान करना चाहिए।
विषयों में फँसकर विशद जीवन उत्थान नहीं होगा,
नित्य प्रति प्रातः भगवान महावीर का ध्यान करना चाहिए।।330।।

अगर ये संत दिगम्बर रूप ना धरते,
ये संत चारों दिशाओं में विहार ना करते।
तो विशद ये धरती अर्थी बन जाती मेरे बंधु,
जो मिट्टी के पुतलों में धर्म प्राण ना भरते।।331।।

ध्यान से ही सुबह होती ध्यान से ही शाम है,
मोक्ष के पुरुषार्थ बिन जिनको नहीं विश्राम है।
संत क्या भगवंत क्या वह तो स्वयं महावीर हैं,
विशद ज्ञानी सन्मति को सतत् मम प्रणाम है।।332।।

मोक्ष मार्ग को पाकर अपना कदम बढ़ा दिया है,
गुरुदेव ने हाथ में पिच्छी कमण्डल पकड़ा दिया है।
सभी फूल मुरझाने वाले मिले मेरे लिए है,
ये जीवन मेरा फूल है जो गुरु चरणों में चढ़ा दिया है।।333।।

इन्सानियत को समझे वह सच्चा इन्सान है,
ज्ञान से आचरण में उतारे वह सच्चा विद्वान है।
अन्तर में जलन है जमाने भर की मेरे बन्धु,
सबके सामने देखो विशद कैसी मुस्कान है।।334।।

दुनियाँ में हर इन्सान सच्चा नहीं होता है,
जहाँ में हरेक घड़ा कच्चा नहीं होता है।
बच्चे तो विशद बहुत हैं और होंगे दुनियाँ में,
पर हर एक का राम जैसा बच्चा नहीं होता है।।335।।

आज इन्सान के दिल में इन्सान की कद्र नहीं है,
जो अमृत प्रदान करे ऐसा कोई समुद्र नहीं है।
विशद इंसानियत और भद्रता के दर्शन नहीं होते,
आज इन्सान तो क्या विद्वान भी भद्र नहीं है।।336।।

लोग स्वयं सोकर औरों को जगा रहे हैं,
स्वयं कमरे में छिपकर औरों को भगा रहे हैं।
आप स्वयं तो बेदाग बच निकलते हैं,
किन्तु छुपकर औरों को चूना लगा रहे हैं।।337।।

आज कल सर्प और नेवले की खूब पट रही है,
इस जहाँ में मान मर्यादा भी भरपूर घट रही है।
धर्म और धर्म गुरु हमारे विशद मार्गदर्शक हैं,
आश्चर्य है कि उनके नाम पर समाज बँट रही है।।338।।

दानी हुए तो ऐसे कि अपना घर लुटा बैठे,
फकीरी की तो ऐसी कि दिगम्बर वेश धर बैठे।
आज लोग इस दुनियाँ में ज्ञान की बात करते हैं,
ज्ञानी हुए तो ऐसे कि सिद्धों के पास जा बैठे।।339।।

वीर निकलंक की भाँति तुम्हें मरना नहीं आता,
दुःखी जीवों का दुःख विशद हरना नहीं आता।
मेरे प्यारे बन्धु ! तुम्हें संसार में रहकर भी,
सत्य पर प्राण निछावर करना नहीं आता।।340।।

जो रजनी के बाद भोर लाये उसे प्रभाकर कहते हैं,
जो रात में भी प्रकाश भरे उसे निशाकर कहते हैं।
जो विशद सन्त और भगवन्त हैं मेरे बन्धुओ,
उन्हें श्रद्धा से नमस्कार करो ये विशद सागर कहते हैं।।341।।

जिसे देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धान नहीं है,
जिसे सत्य असत्य की भी पहिचान नहीं है।
जिन्हें आत्मा परमात्मा का कुछ ज्ञान नहीं है,
उन्हें इन्सान कहते जरूर हैं पर वह सच्चे इन्सान नहीं हैं।।342।।

आज संत अधिक हैं किन्तु आराधक कम मिलते हैं,
आज गायक अधिक किन्तु साधक कम मिलते हैं।
कथनी और करनी में विशद बहुत अन्तर है,
आज धर्म के बाधक अधिक प्रतिपादक कम मिलते हैं।।343।।

मैं मौत आने के पहले मरना नहीं चाहता,
मैं इन्सान हूँ औरों की वस्तु हरना नहीं चाहता।
विशद कायर नहीं इन्सान की जिन्दगी जीना है हमें,
मैं महावीर का भक्त हूँ किसी से डरना नहीं चाहता।।344।।

भौतिकता की चकाचौंध उजाला नहीं ज्वाला है,
संस्कृति और सभ्यता को इसने भस्म कर डाला है।
दूरदर्शन स्वयं को स्वयं से दूर करने वाला है,
नयनों की ज्योति को यह खत्म करने वाला है।।345।।

गुरुदेव मेरे जीवन के विश्वास बन गये,
मेरी भावनाओं के आकाश बन गये।
अब हमारे पास रहा ही क्या है भगवन्,
आप हमारी जिन्दगी की हर एक श्वाँस बन गये।।346।।

मैं चलते फिरते तेरी याद किया करता हूँ,
तेरी खुशनसीब जिन्दगी की फरियाद किया करता हूँ।
ये संत विशद चलते फिरते तीर्थ हैं मेरे बन्धु,
मैं खुले आम यह सिंहनाद किया करता हूँ।।347।।

गुरुवर शुभ भावनाओं के आकाश बनकर आये हैं,
भक्तों के विशद विश्वास बनकर आये हैं।
हमारे मन मन्दिर के देवता आप ही हैं भगवन्,
गुरुवर हमारी हर धड़कन हर श्वाँस बनकर आये हैं।।348।।

बजते ही मौत की घंटी कफन से सेज सजती है,
रही जिस देह में आतम अन्त में उसको तजती है।
विछोह का क्षण बहुत ही दर्दीला होता है मेरे बन्धु,
उस समय पर हृदय की घण्टी बड़ी ही तेज बजती है।।349।।

उसे कौन बाधक हो सकता जिसको है श्रद्धान महान्,
खड़ा हिमालय हो पथ में यदि हट जाता है सीना तान।
करता है पुरुषार्थ निरन्तर होता वह सच्चा इन्सान,
लक्ष्य बनाकर बढ़ने वाला बन जाता इक दिन भगवान।।350।।

आया था फूल चुनने को मैं यहाँ बाग में,
भूल से क्यूँ रुक गया यहाँ मोह राग में।
श्वाँस के चलने तक ही हैं मेरे सभी अपने,
श्वाँस के छलते ही जला देते हैं आग में।।351।।

नशा दौलत का इन्सान के सिर पर ऐसा चढ़ गया है,
कि अहंकार अब पहले से चौगुना बढ़ गया है।
अब क्या हाल होगा आखिर विशद इन्सान का,
जब शैतान के सिर पर एक शैतान और चढ़ गया है।।352।।

इन्सान जिन्दगी पाकर के गुजार जाते हैं,
कोई हँसकर तो कोई रोकर गुजार जाते हैं।
विशद सुख-दुःख की घड़ियों में सम्हलना मुश्किल होता,
कोई शोक में और कोई कुछ होकर गुजार जाते हैं।।353।।

हम समय के गीत गाते हैं और रीत अपनी चलाते हैं,
मंदिर में तो दीपक भी नहीं घर में होली जलाते हैं।
भगवान के वह परम भक्त बने फिरते हैं मेरे बन्धु,
ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसमें खोटा द्रव्य नहीं मिलाते हैं।।354।।

अन्दर के अन्धकार को क्यों पोष रहे हो,
संत सरिता की लहरों को क्यों कोस रहे हो।
गल्ती अपनी है जो कष्ट उठा रहे हैं,
तुम माया के मद में क्यों मदहोश हो रहे हो।।355।।

तुमने दिए की कालिख से माथे पर श्रृंगार बनाया,
पत्थर की उजली कणिका से गले का हार बनाया।
कौन कब से आये हैं किससे क्या कुछ नाता है,
भूलकर सत्य को इस जीवन में गैरों को आधार बनाया।।356।।

आशीष संतों का हो तो विश्वास नजर आता है,
इन्सान को अपनी जिन्दगी में सुवास नजर आता है।
वर्षा और बसन्त जिन्दगी में आते चले जाते हैं,
जहाँ पर संत होते हैं वहाँ हर दिन मधुमास नजर आता है।।357।।

अब वीरान गुलिस्तान को खिलाना है हमें,
इन टूटे हुए दिलों को मिलाना है हमें।
मंदिर और मकान तो विशद बनाए हमने,
अब इन्सान को इन्सान बनाना है हमें।।358।।

इन्सान चलकर आसमान को चला सकता है,
धरती को चला सकता तूफान चला सकता है।
कई जलाएँ दीप अब तक औरों का दिल जलाकर,
संयम की विशद राह पर चले तो ज्ञान का दीप जला सक्ता है।।359।।

प्रभु के कदमों पर जब खुद ही चल पड़ेंगे,
मंजिल को पाने के लिए स्वयं भी आगे बढ़ेंगे।
नहीं रोक पायेगा तुम्हें कोई हमदम बन्धु,
खुदी से निकलकर खुद ही खुदा बन सकेंगे।।360।।

जगती पर महावीर का अवतार ना होता,
ये वीरान गुलिस्तान भी गुलजार न होता।
इन्सान बना रहता विशद इन्सानियत से दूर,
इन्सान इस जमाने से खबरदार ना होता।।361।।

एक किरण उठी जो बेगुनाहों की तकदीर बन गई,
दीन-दुःखी बेसहारों की जो पीर बन गई।
कलिकाल में मशाल लिए कर रही है प्रकाश,
वह रोशनी 'विशद' उठी जो महावीर बन गई।।362।।

धन्य धन्य वह जीव धन्य है सत्य मार्ग जिसने देखा,
सत्य धर्म से चमका करती जीवन की स्वर्णिम रेखा।
है पुरुषार्थ हाथ में उसके भाग्य विशद है अनदेखा,
करने से पुरुषार्थ निरन्तर मिट जाता विधि का लेखा।।363।।

ये विशद ! यदि स्नेह करना तुझे मंजूर है,
तो प्यार कर उससे जो नूर का भी नूर है।
जो प्यार से सदा रहता विशद भरपूर है,
उस परमात्मा से आज तक रहा तू दूर ही दूर है।।364।।

अय विशद सम्पूर्ण गम तो दे खाने के लिए,
उसमें भी हिस्से कर दिए तूने जमाने के लिए।
ऐसा करके भी विशद चैन से तू जी रहा है,
कैसे आया है इस जहाँ में चेहरा दिखाने के लिए।।365।।

आज इन्सान कुछ कामचोर हो गये हैं,
इन्सान हर सितम से कमजोर हो गये हैं।
साहूकार थे जो कल तक मेरे भाई,
जमाने की ठोकर से आज वह भी चोर हो गये हैं।।366।।

उस इन्सान ने बहुत बड़ी बात कर ली,
जिसने स्वयं से स्वयं की मुलाकात कर ली।
यों समझिये इस विशद जीवन में मेरे भाई,
उसने अपनी जिन्दगी की शुरुआत कर ली।।367।।

हमारे सरल प्रश्न का ऐसा उत्तर दिया,
कि हमेशा के लिए अनुत्तर कर दिया।
हम कैसे हाथ बढ़ाए आप से माँगने के लिए,
जब फूल माँगने पर आपने हम पर पत्थर जड़ दिया।।368।।

कुछ लोग हैं कि सात माँगने पर सत्तर देते हैं,
कुछ वह हैं कि फूल माँगने पर पत्थर देते हैं।
एक हम हैं कि बराबर प्रश्न किए जाते हैं,
और आप सरल प्रश्न का भी कठिन उत्तर देते हैं।।369।।

जिसकी कोई मंजिल नहीं उसका संघर्ष दिखावा है,
विश्वासहीन सम्बन्ध मात्र छलावा है।
मत चढ़ाना रत्नावलियाँ दिखावे की बन्धु,
अन्तर्मन के पुष्प समर्पण करना सही चढ़ावा है।।370।।

अहिंसा फूल है, मोती और समन्दर है,
करुणा का स्रोत और कशक अहिंसा के अन्दर है।
पत्थर दिल इन्सानों से कह दो बोलकर प्यारे बन्धु,
स्रोत करुणा का बहता हो वहाँ मिलते शिवशंकर हैं।।371।।

डाल पर लगा पत्ता भी एक दिन झड़ जाएगा,
पानी और पत्थरों के नीचे दबकर सड़ जाएगा।
चार दिन की चांदनी पर क्यों इतना गरुर करते हो,
आज जो इठला रहा डाल पर, पक्षी एक दिन वह भी उड़ जाएगा।।372।।

जिससे अंधकार ना मिटे वह दीप नहीं है,
जिसमें मोती ना हो वह सीप नहीं है।
वह इन्सान या हैवान कहा जाए बन्धु,
जो संत और भगवन्त के समीप नहीं है।।373।।

बढ़ो तुम राह पर अपनी मार्ग को मोड़ सकते हो,
आपदा कोई भी आवे उसे तुम तोड़ सकते हो।
बताया वीर ने हमको केवलज्ञान पाकर के,
विशद मुक्ति वधू से तुम भी नाता जोड़ सकते हो।।374।।

दुनियाँ की दुश्मनी को काटना रुहानी हथियार से,
जुल्म का रुख बदलना तुम सब्र की तलवार से।
अन्तर की बात विशद अन्तर में रहने दीजिए,
बदला नहीं लेना मेरे मित्र कभी भी अखबार से।।375।।

दान सर्वस्व समर्पण का नाम है दो टके का दान क्या दान दिया करते हैं,
कार्य तो सम्पूर्ण करना चाहिए अधूरा तो नादान किया करते हैं।
रसपान तो वह है जो हृदय को शीतल कर दे मेरे भाई,
जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।।376।।

अज्ञानियों का जहाँ में बार-बार जन्म मरण होता है,
चारित्र के अभाव में ही चोरी और अपहरण होता है।
वास्तविक इन्सान वही होते हैं इस जहान में बन्धुओ,
जिनके जीवन में शुभम् सद् आचरण होता है।।377।।

पूज्यता उसे प्राप्त होती है जिसे कुछ ज्ञान होता है,
आविष्कार वहीं पर होता जहाँ विज्ञान होता है।
मुक्ति वही प्राप्त कर पाते हैं मेरे बन्धुओ,
जिनके जीवन में शुभ एकान्त ध्यान होता है।।378।।

हम यह नहीं जानते कि इनमें विशेष ज्ञान होना चाहिए,
हम यह नहीं मानते कि उनका उपदेश अच्छा होना चाहिए।
हम तो रत्नात्रय की कद्र करते हैं मेरे बन्धुओ,
हमारी श्रद्धा के लिए तो वीतरागी भेष होना चाहिए।।379।।

ज्ञानीजन ज्ञान से चेतन का ध्यान करते हैं,
ध्यानीजन निज आत्मा का रसपान करते हैं।
मोह के अन्धकार से निकलकर तो देखो मेरे बन्धुओ,
श्रद्धालु जन सदा सन्तों का सम्मान करते हैं।।380।।

हमें अब संसार भ्रमण नहीं किनारा चाहिए,
आगे बढ़ने के लिए आदेश नहीं इशारा चाहिए।
यह संसार पार करने के लिए मेरे बंधुओ,
जिनवाणी और सच्चे सन्तों का सहारा चाहिए।।381।।

विपत्ति के समय हमें कोई किनारा न मिला,
चारों दिशाओं में भटके कोई सहारा न मिला।
अपनों को अपना कहते–कहते बीत गयी सारी जिन्दगी,
अन्त जब आया तो कोई हमारा न मिला।।382।।

हर सागर का विशद कहीं न कहीं तीर है,
कदम बढ़ाते चलो भव सागर बहुत गम्भीर है।
ये संत नहीं कलिकाल के भगवान हैं बन्धुओ,
संत नहीं ये तो साक्षात् प्रभु महावीर हैं।।383।।

है भरोसा आज भी गुरुदेव के आशीष पर,
चाह जिसको धन की है करता भरोसा ईश पर।
भावना यह है हमारी जीवन में इतनी 'विशद',
छाँव हो गुरुदेव की शुभ बस हमारे शीश पर।।384।।

हम दूसरों को गिराकर चलना चाहते हैं,
हम दूसरों को बुझाकर जलना चाहते हैं।
कैसे जले दीप विशद ज्ञान का मेरे बंधुओ,
हम दूसरों को दबाकर स्वयं खिलना चाहते हैं।।385।।

जो संतों की मूक विशद भाषा समझते हैं,
वह फूल तो ठीक काँटों के बीच भी हँसते हैं।
संत अमृत से भरे बादल होते हैं बन्धु,
जो सदैव ही मेघराज बनकर बरसते हैं।।386।।

कोयल ने रूठना नहीं गाना सीखा है,
लोगों के मन को भी लुभाना सीखा है।
हमारी यह सबसे बड़ी खूबी है बन्धु,
हमने रोना नहीं हमेशा ही मुस्कुराना सीखा है।।387।।

तुम्हारी शान नहीं घटेगी ना रुतबा घट जाएगा,
जो गुस्से में कहा वही हँस के कहा जाएगा।
हम हँस ना सके कोई बात नहीं प्यारे बन्धु,
किन्तु हमसे भी मुस्कराए बिना नहीं रहा जाएगा।।388।।

कितने लोग हैं जो ये दृश्य देखने को तरसते हैं,
एकांत में बैठकर आँखों से आँसू बरसते हैं।।
जिन्होंने अवसर को समझा है मेरे बंधुओ,
विशद वह मन ही मन में अपने हरषते हैं।।389।।

मत पूछों दोस्त मुझे किसने लूटा है,
जिसको गले लगाया उनसे ही दिल टूटा है।
दोष किसी और का नहीं मेरे भाई जमाने में,
क्योंकि मेरे स्वयं के भाग्य का घड़ा फूटा है।।390।।

कोई किसी के गम को बाँट सकता नहीं ये पक्का है,
फिर अपनी बात किसी को सुनाने में क्या रक्खा है।
सह लेते हैं सारे गमों को मूक होकर प्यारे भाई,
कोई कर भी क्या सकता हमारी किस्मत में यही लिक्खा है।।391।।

हमने किसी और से नहीं अपनों से चोट पाई है,
इसलिए किसी को अपना न बनाने की कसम खाई है।
परिजन छोड़ बन जाने वाले महावीर हो गये,
हम कब महावीर बन जाए अंतर में एक ही बात समाई है।।392।।

इक इशारा काफी है अपनों को पास बुलाने के लिए,
माँ की बाँहें काफी हैं नन्हें बेटे को सुलाने के लिए।
अनेक खुशियाँ कम है एक गम भुलाने के लिए,
एक भूल काफी है जीवन भर रुलाने के लिए।।393।।

स्वयं की जिन्दगी के जिम्मेदार इंसान स्वयं होते हैं,
राह में शूल बोने वाले इंसान के नाम पर अभिशाप होते हैं।
बच्चों को इंसान या शैतान बनाना आपके हाथ में है,
बच्चों की जिन्दगी बनाने बिगाड़ने के जिम्मेवार माँ–बाप होते हैं।।394।।

इंसान की जिन्दगी मौत के कगार पर खड़ी है,
आज इंसान के हृदय में वासना की धूल चढ़ी है।
सम्मान सहित जीने का नाम जिन्दगी है,
इंसान के लिए इज्जत जिन्दगी से बड़ी है।।395।।

आज शराफत की जिन्दगी को खो रहे हैं लोग,
स्वयं की जिन्दगी में शूल बो रहे हैं लोग।
इंसानियत कैसे कायम रह सके प्यारे भाई,
जब विलासिता के दीवाने हो गये हैं लोग।।396।।

मोहब्बत का रिश्ता जो कर्ज बन जाए,
वह फरिश्ता जो दिल का दर्द बन जाए।
वह मोहब्बत नहीं मौत होती है,
जो स्वयं की जिन्दगी में मर्ज बन जाए।।397।।

संगीत स्वयं बजता नहीं बजाया जाता है,
खुशियों का सरोवर आता नहीं लाया जाता है।
आकाश में फूल उगाने की व्यर्थ की कोशिश है,
इतिहास स्वयं का बनता नहीं बनाया जाता है।।398।।

मारना चाहो गर किसी को तो मार दो एहसान से,
क्या मिलेगा गर किसी को मार दोगे जान से।
जान से मारा गया वापस कभी आता नहीं है,
अहसान से मारा गया फिर सिर उठा पाता नहीं।।399।।

गुणगान शायरी का होता है शायरों का नहीं,
धर्म आर्यों का होता है अनार्यों का नहीं।
मान और सम्मान सभी चाहते हैं प्यारे भाई,
सम्मान वीरों का होता है कायरों का नहीं।।400।।

आज दुनिया में लोग विश्वासी नहीं दिखते,
आज दुनिया में कर्म विनाशी नहीं दिखते।
उपदेशक तो बहुत है इस दुनिया में,
आज जहाँ में लोग आगमाभ्यासी नहीं दिखते।।401।।

हम इंसान हैं इंसान को इंसान बनायेंगे,
हम विज्ञान से विज्ञान को विज्ञान बनायेंगे।
हम महान् वैज्ञानिक महावीर की संतान है बन्धु,
हम इंसान से इंसान को भगवान बनायेंगे।।402।।

गीत गुरुवर ने जो गाये वह हम भी गाएँगे,
छोड़कर सारी दुनियां गुरु शरण में आएँगे।
भटके हैं बहुत इस संसार में बन्धु,
गुरु की राह पर कदम हम भी बढ़ाएँगे।।403।।

आज मानव धर्म से कितने दूर हैं,
आज लोग भोगों के प्रति मजबूर हैं।
जादूगर दूर खड़े हो जाते अपने काम करके,
बदनाम होते हैं वह बेचारे जो बेकसूर हैं।।404।।

कठिनाईयों में ही धर्म की साधना होती है,
असावधानी में लोगों से विराधना होती है।
समता से सहन कर लेना दुनिया के कड़वे घूँट,
संयम पाने वालों की सच्ची आराधना होती है।।405।।

इन श्वाँसों का नहीं कोई लेखा जोखा है,
मोह के कारण अपने आपको भूले इसलिए टोका है।
कुछ भी भरोसा नहीं है इन छैल छबीली श्वाँसों का,
श्वाँसें कब छल जाए इनका पल-पल पर धोखा है।।406।।

मुस्लिम दर्शन करके कहता तुम गुरुवर में पीर हो,
सिक्ख जब दर्शन करता है तो कह देता तुम मेरे बलवीर हो।
सभी रूप समाहित हैं इन गुरुवर में मेरे बन्धुओ,
वास्तविकता यह है कि तुम गुरुवर मेरे महावीर हो।।407।।

हमें दीप की भाँति जलाए रखिए,
हमें फूल की तरह खिलाए रखिए।
हम हैं चरणों के सेवक आपके,
हमें दीप में ज्योति सा मिलाए रखिए।।408।।

वह रंग किस काम का जो बाद में धोना पड़े,
ऐसा संगीत किस काम का कि सब कुछ खोना पड़े।
जीवन को हमेशा ही संजोकर रखना मेरे बन्धुओ,
ऐसा हँसना किस काम का कि पीछे रोना पड़े।।409।।

जन्म होने पर मानव के साथ कुछ नहीं आता है,
पुण्य उदय से इंसान अच्छा बुरा सब कुछ पाता है।
ये धन-दौलत कुछ भी साथ नहीं जायेगा बन्धु,
अपने हाथों किया पुण्य पाप ही तेरे साथ जाता है।।410।।

भाग्य सभी का साथ नहीं देता है,
भाग्य आपके पास आकर के कहता है।
विजय उसको प्राप्त होती है मेरे बन्धुओं,
भाग्य हमेशा जिसके साथ रहता है।।411।।

मोही मुनि से साधक श्रेष्ठ होता है,
मिथ्या दृष्टि से सम्यक्दृष्टि ज्येष्ठ होता है।
मोक्ष का मार्ग उन्हें प्राप्त होता है मेरे बंधुओ,
जिन्हें वीतरागता पर श्रद्धान यथेष्ठ होता है।।412।।

वे जीवित होकर भी मुर्दा हैं जिन्हें श्रद्धान नहीं है,
वह जैन के नाम पर कलंक हैं जिन्हें धर्म ज्ञान नहीं है।
वे बिना सींग-पूँछ के पशु हैं मेरे जैन बन्धुओ,
जिनके हृदय में इन गुरुओं का सम्मान नहीं है।।413।।

आज इंसान से इंसानियत की नहीं दिखती आशा है,
आज इंसान का तो देखते ही बनता तमाशा है।
कैसे इंसान सुखी हो पायेगा इस जहाँ में बन्धुओ,
जब इंसान ही इंसान के खून का प्यासा है।।414।।

सब कुछ पाकर भी संसार का अंत ना मिला,
ज्ञानी तो मिला पर कोई धीमंत न मिला।
संत तो पाये बहुत हैं इस संसार में,
पर विरागसागर जैसा कोई संत ना मिला।।415।।

भूलने लग जाऊँ तो मुझे आगाह कर देना,
भूल को मेरी तुम गुमराह कर देना।
पाप और शाप से पार पा लेंगे हम,
तुम जरा सिर पर मेरे हाथ रख देना।।416।।

झुके जो प्रभु के चरणों में उसे सच्चा माथ कहते हैं,
दान हेतु उठे ऊपर उसे हम हाथ कहते हैं।
शांति दे रहे हैं जो देश दुनियाँ को मेरे बन्धु,
उन अरिहंत प्रभु को हम शान्तिनाथ कहते हैं।।417।।

बढ़ो तुम इस तरह कि जग को साथ बन जाओ,
करो पुरुषार्थ इतना कि स्वयं दो हाथ बन जाओ।
समता और शांति पाओ कुछ इस तरह से कि,
स्वयं इस जहाँ में शांतिनाथ बन जाओ।।418।।

चंद्रमा भी दाग से दागी हो गया,
सज्जन भी राग से रागी हो गया।
संत तो वही हैं वास्तव में बन्धु,
जो मन वचन काय से वीतरागी हो गया।।419।।

तुम्हारी पहिचान क्या कोई रूप नहीं है,
स्वभाव से कोई दानी कोई भूप नहीं है।
फिर भी तुम्हारे समान कोई चीज नहीं जहाँ में,
'विशद' आत्मा का कुछ भी स्वरूप नहीं है।।420।।

मात्र धन का ही नहीं जीवन का भी हिसाब रखना है,
मात्र तन का ही नहीं चेतन का भी हिसाब रखना है।
हिसाब रखते आये अनादिकाल से सभी वस्तुओं का बन्धु,
कुछ आत्मा के उत्थान और पतन का भी हिसाब रखना है।।421।।

जिसके हृदय में गुरु का सम्मान होगा,
वास्तव में उस इंसान को ही सम्यक् ज्ञान होगा।
रोशनी फैलेगी चारों दिशाओं में उसकी,
जिसके सौभाग्य का सितारा उदीयमान होगा।।422।।

शर्बत में सेंट और स्क्रीन घुला रहता है,
न्यायालय में रखी पुतली के हाथ में तुला रहता है।
दुनियाँ के सब द्वार बंद हो जाने पर भी बंधु,
भगवान महावीर का द्वार हमेशा खुला रहता है।।423।।

अभी नहीं अभी नहीं में तो जमाने गुजर गये,
स्वयं की मंजिल को भूल न जाने किधर गये।
अब तो बता दो मुक्ति पथ की राह मेरे गुरुवर,
दुनियाँ की शरण छोड़ तुम्हारी शरण आ गये।।424।।

जो संतों की शरण में आ जाते हैं,
श्रद्धा भक्ति से उनके चरण पा जाते हैं।
उनकी किस्मत का चमकता है भाग्य सितारा,
संत चरण छूते-छूते संत सा आचरण पा जाते हैं।।425।।

कितने लोग हैं जो ये दृश्य देखकर तरसते हैं,
एकांत में बैठने पर आँखों से आँसू बरसते हैं।
जिन्होंने अवसर को समझा है मेरे बन्धु,
वह सभी अपने मन ही मन में हरसते हैं।।426।।

आज का कषायी इन्सान बात-बात में गरजता है,
तेज बिजली सा चमकता है और पानी सा बरसता है।
जियों और जीने दो नहीं पियो और पीने दो की भाषा है,
सही राह दिखाने को महावीर की आवश्यकता है।।427।।

कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता है,
कौन कहता है कि इन्सान खाक नहीं हो सकता है।
अरे इन्सान पाक राहों पर चलकर तो देख,
कौन कहता है कि इन्सान पाक नहीं हो सकता है।।428।।

इन्सान तू संतों की राह पर आकर तो देख,
उनकी राह पर कदम से कदम मिला कर तो देख।
आज भी जल रहा है विशद ज्ञान का चिराग,
उससे अपने बुझे चिराग को जला के तो देख।।429।।

शूल को ठुकराने वालों को कभी फूल नहीं मिलते,
मोह के चक्र में घूमने वालों को भव कूल नहीं मिलते।
इन्सान तो बन जाते हैं मनुष्य गति पाकर कई लोग,
श्रद्धा के बिना इन्सानियत के मूल नहीं मिलते।।430।।

माँझी कौन सा रहा जो तीर ना हो गया,
स्वर्ण कौन सा रहा जो जंजीर ना हो गया।
प्रभु का भक्त तो स्वर्ण से भी चोखा है बन्धु,
भक्त कौन सा रहा जो महावीर ना हो गया।।431।।

फूल के बिना कभी मकरन्द नहीं मिलता,
वर्ण के अभाव में सुन्दर छन्द नहीं मिलता।
प्रभु की भक्ति से रहे दूर अनादि से,
भक्ति के अभाव में जिन्दगी का आनंद नहीं मिलता।।432।।

जिन्दगी के लम्बे सफर में रात अंधेरी है,
जिस्म ने आत्मा की फोटो ना उकेरी है।
विशद भोर होते ही रोशनी जरूर होगी,
मंजिल भी मिलेगी बस जागने की देरी है।।433।।

इन्सान अपनी अंजली में आकाश लिए बैठा,
कुछ संसार लिए बैठा है सन्यास लिए बैठा है।
परमाणु अस्त्र पाकर प्रसन्न हो रहा है विशद,
विज्ञान की आड़ में स्वयं का नाश लिए बैठा है।।434।।

इस मकान के कितने मेहमान बन चुके हैं,
कुछ मूर्ख बने कुछ विद्वान बन चुके हैं।
चार दिन की जिन्दगी में कैसे पूर्ण होंगे प्यारे बन्धु,
आपके जो अंतहीन असीम अरमान बन चुके हैं।।435।।

कुछ लोग लक्ष्मी का अभिमान कर रहे हैं,
औरों की जिन्दगी में व्यवधान कर रहे हैं।
सम्मान मिले तो कैसे उन्हें प्यारे बन्धुओ,
जो दूसरों का घोर अपमान कर रहे हैं।।436।।

फूल झड़ते हैं तब पुनः फिर से खिलते हैं,
जो बिछड़ते हैं वह पुनः आकर मिलते हैं।
नहीं करना हमें खेद मन में 'विशद'
आगमन के साथ में गमन लेकर चलते हैं।।437।।

लोग कहते हैं कि व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान् होते हैं,
लोग कहते हैं व्यक्ति कर्म से नहीं धर्म से महान् होते हैं।।
नाभिनंदन तो मेरे बन्धु जन्म से भी महान् हो गये,
अरे ! वह विशद ज्ञान पाकर के भगवान हो गये।।438।।

यह संत दिखाई देते जो वह बड़े अनोखे होते हैं,
यह मोह तोड़कर चलते हैं जो नहीं किसी के होते हैं।
जो आते हैं वहीं तो जाते हैं इसमें खेद क्यों करना है,
वह जहाँ पर भी जाते हैं तो पुण्य के बीज बोते हैं।।439।।

भोग भूमि के समय में मंदिर नहीं होते हैं,
धर्म और भक्ति के परिणाम उनके अन्दर नहीं होते हैं।
भोग भूमि में सभी प्रकार के लोग तो होते हैं बन्धु,
किन्तु दर्शन हेतु जिनबिम्ब सुन्दर नहीं होते हैं।।440।।

माँ की ममता को लोक में महान् कहा गया है,
माँ को सौ शिक्षक समान विद्वान कहा गया है।
माँ की ममता को नहीं समझा है जिसने मेरे बन्धु,
विशद ज्ञानियों के द्वारा उन्हें हैवान कहा गया है।।441।।

यहाँ पर इन्द्र इन्द्राणियाँ नृत्य करते नहीं थकते हैं,
कुछ लोग बाहर खड़े शर्म से अपने मुँह ढ़कते हैं।
यह संगीतकार की स्वर लहरी का कमाल है,
कि लोगों के घर बैठे-बैठे ही पैर थिरकते हैं।।442।।

जिस क्षण आपके हृदय में विश्वास उभर जायेगा,
सत्य कहते हैं उसी क्षण ज्ञान का समंदर भर जायेगा।
इस जहाँ से जाने का समय जब आयेगा,
सब देखते रहेंगे कोई नहीं रोक पायेगा।।443।।

ये रंगीन महफिल ये गुलशन उजड़ जायेगा,
इन महानुभावों का साथ बिछुड़ जायेगा।
बाद में कुछ भी होता रहे हम नहीं जानते,
यह माहौल यादगार बन के रह जायेगा।।444।।

इस जहाँ में फूल नहीं शोले बरसते हैं,
कभी तेज कभी हौले-हौले बरसते हैं।
कितने लोग हैं इस जहाँ में सौदागर,
जो जिन्दगी भर खुशियों की याद में तरसते हैं।।445।।

मुझे जिन्दगी से कोई शिकायत नहीं है,
मुझे अपनों से भी अपनायत नहीं है।
जो शिकायत के मुँहताज होते हैं,
उनकी जिन्दगी में विशद हिफाजत नहीं है।।446।।

जल से भरे स्थल को सागर कहते हैं,
रत्न से भरे समुद्र को रत्नाकर कहते हैं।
जो रत्नत्रय की मूर्ति स्वरूप हैं मेरे बन्धु,
उन्हें हम प.पू. आचार्य विराग सागर कहते हैं।।447।।

हमने देखा कि चन्द्रमा में तो दाग है,
सूर्य तो दिन में भी उगलता आग है।
गुरु विराग सागर की महिमा का कहाँ पार है,
वह तो कलिकाल में अनुपम विराग हैं।।448।।

हमने महावीर को नहीं देखा इसका हमें गम है,
अनादि काल से संसार सागर में भटकते रहे हम हैं।
महावीर के लघुनन्दन आचार्य गुरुदेव हमने पाए हैं,
हम सभी के लिये यह सौभाग्य भी क्या कम है।।449।।

आज लोग भौतिकता की चकाचौंध में बह रहे हैं,
अपने आप को बहुत बड़ा ज्ञानी कह रहे हैं।
इन्सान विद्वान और भगवान सारे रूप हैं इन संतों में,
यह कलिकाल में भी विशद परिषह सह रहे हैं।।450।।

संत होकर यह सम्यक् ज्ञान के आलय हैं,
ज्ञानी होकर भी चारित्र के हिमालय हैं।
लोगों की दृष्टि में होंगे यह संत मेरे बन्धु,
मैं तो कहता हूँ यह चलते फिरते जिनालय हैं।।451।।

समुद्र के जल को कोई माप नहीं सकता,
तूफान आने पर भी मेरु काँप नहीं सकता।
दुनियाँ को मुट्ठी में बन्द करने वालो याद रखो,
इन संतों के गुणों को कोई आंक नहीं सकता।।452।।

मुरादें पूर्ण कर दे जो उसे वरदान कहते हैं,
मुख की शोभा बढ़ाये जो उसे हम पान कहते हैं।
भगवान कोई खान से निकलकर नहीं आते बन्धु,
जो विशद ज्ञान प्राप्त करते उन्हें भगवान कहते हैं।।453।।

जिनदेव चरण की भक्ति से मिलता भव सिन्धु किनारा है,
गुरुदेव चरण का जीवन में शुभ सिन्धु बीच सहारा है।
सब क्लेश त्याग कर अपने मन में बढ़ना यह फर्ज तुम्हारा है,
तुम बढ़ो मोक्ष की मंजिल तक तुमको आशीष हमारा है।।454।।

वीतरागता सहित ज्ञान को विज्ञान कहते हैं,
तत्त्वों के प्रति आस्था को श्रद्धान कहते हैं।
एकाग्रचित्त होकर भव पार होने की सोची कब है,
हो जाए भव से पार उन्हें भगवान कहते हैं।।455।।

जिसके हृदय में प्रभु का वास नहीं है,
जिसे धार्मिक कार्यों के लिए अवकाश नहीं है।
वह इन्सान अपनी ही नजरों से गिरा है,
जिसे अपनी ही हालत का अहसास नहीं है।।456।।

गीत सुनने को लोग यहाँ पर आज बैठे हैं,
तराना गाने वाले संगीत के मोहताज बैठे हैं।
करें चिन्ता लोग दुनियाँ के जमाने की,
हम तो निश्चिन्त होकर के आबाद बैठे हैं।।457।।

जिन्दगी कोई जुल्फ नहीं जो सँवर जाएगी,
ये रंगीन दुनियाँ भी आखिर उजड़ जायेगी।
ये जिन्दगी जो महफिल सी नजर आती है,
फिर ना सिमटेगी यदि यह बिखर जाएगी।।458।।

सितम करने वाले रहम क्या करेंगे,
बुझे हुए अंगारे गरम क्या करेंगे।
बैठे मोहताज हैं विशद औरों के,
वफा वह करेंगे, तो फिर हम क्या करेंगे।।459।।

दर्शन करूँ मैं तेरे आँखें हजार दे,
आस्था विशद हमारी तू ही सँवार दे।
दिल अरु दिमाग ऐसा परवरदिगार दे,
हर रोज की घड़ी को हँस के गुजार दें।।460।।

जब से आये हैं हम प्रभु के मुकाम पर,
नफरत सी हो गई है दुनियाँ के ताम-झाम पर।
शिकायतें मिट गईं हैं विशद दुनियाँ के लोगों से,
हर इन्सान गरूर करता है हमारे नाम पर।।461।।

हमने तो आपकों आँखों में बसा रक्खा है,
हमारे तो रग-रग में आपका ही नाम लिक्खा है।
लोग स्वयं को देखने के लिए आइना खोजते हैं,
विशद आइना छोड़िये आइना में क्या रक्खा है।।462।।

मन नहीं भरता मेरा यूँ देखकर तस्वीर से,
प्यास ना बुझती विशद अन्तर हृदय की नीर से।
काल यह विकराल है प्रभु हो नहीं इस क्षेत्र में,
आस होती कुछ यदि तो माँगते तकदीर से।।463।।

रहने दो मित्र पत्थर पर फूल खिलाते क्यों हो,
अरे ! ये बाती बिन दीप जलाते क्यों हो।
मिलना और मिलाना मात्र दस्तूर नहीं है,
दिल तो मिलता नहीं फिर हाथ मिलाते क्यों हो।।464।।

नीर के भरने के लिए गागर चाहिए,
रत्न खोजने के लिए रत्नाकर चाहिए।
ज्ञान की मशाल लेकर गुरुवर चल रहे हैं,
वीतरागता पाने के लिए संत विराग सागर चाहिए।।465।।

अनादि से घूमने पर भी लोक का अन्त ना मिला,
पतझड़ तो मिला सुख भरा बसन्त ना मिला।
मोक्ष मंजिल की राह प्रशस्त कर दे जो विशद,
इस जहाँ में ऐसा कोई महा संत ना मिला।।466।।

लोग कहते हैं जिन्दगी में कौन किसका है,
तुमने जिन्दगी को नहीं समझा आश्चर्य इसका है।
स्वयं के गिरेबान में झाँककर जिसने देखा,
विशद विश्व में विश्वास मात्र उसका है।।467।।

तन मन सहित है बोझिल होता हृदय हमारा,
रोके ना रुक रही है नयनों से नीर धारा।
अब पैर थक गये हैं इस गम भरे जहाँ में,
कोई मिला ना हमको देगा हमें सहारा।।468।।

दुनियाँ में कोई दोस्त गम से बड़ा नहीं,
दुनियाँ में कोई दुश्मन यम से बड़ा नहीं।
शत्रु और मित्र किसे कहते हो विशद,
दुनियाँ में दोस्त और दुश्मन स्वयं से बड़ा नहीं है।।469।।

रही न आरजू मेरी गाने को तराने की,
सजा ये कैसी दी हमको जरा सा दिल लगाने की।
मिटा दी एक पल में ही बनी फितरत जमाने की,
आँखें डबडबाई हैं तमन्ना है मुस्कराने की।।470।।

नदी की पहिचान 'विशद' पतवार से होती है,
तलवार की पहिचान उसकी धार से होती है।
शैतान और इन्सान की पहचान क्या है,
इन्सान की पहिचान उसके व्यवहार से होती है।।471।।

जिससे अन्धकार ना मिटे वह दीप नहीं है,
जिसमें मोती ना हो वह सीप नहीं है।
वह इन्सान नहीं विशद हैवान है भाई,
तो संत और भगवन्त के समीप नहीं है।।472।।

कौन कहता है कि मौत अन्जाम होना चाहिए,
जिन्दगी विशद ज्ञान का पैगाम होना चाहिए।
जिन्दगी जीने का नाम है मौत का नहीं मेरे बन्धु,
जिन्दगी पाकर सिद्ध शिला पर विश्राम होना चाहिए।।473।।

जुल्म की कहानी कभी फलती नहीं है,
दीप बिन ज्योति कभी जलती नहीं है।
समन्दर पार करने बैठे हैं कागज की नाव पर,
विशद कागज की नाव कभी चलती नहीं है।।474।।

सुख में डूबे इन्सान भी हैवान बन जाते हैं,
लाचार खाने के कभी–कभी शैतान बन जाते हैं।
दुनियाँ के सफर में कई लोग ऐसे हैं जो,
इन्सान होकर भी विशद भगवान बन जाते हैं।।475।।

जो फरिस्तों से ना हो वह काम इन्सान का है,
ना कर पावें जिन्दगी में वह काम अपमान का है।
कर दिखाते अगर नजारे जिन्दगी में अय विशद,
वह नजारा जिन्दगी में संत के वरदान का है।।476।।

जल की बूँद मिटने पर सागर बन जाता है,
मिट्टी पिटने पर गागर बन जाता है।
अपना अस्तित्व मिटाकर तो देखो 'विशद',
गुरु चरणों में जाने वाला रत्नाकर बन जाता है।।477।।

छाया माया और काया पर विश्वास नहीं होता है,
इनकी प्राप्ति का समय भी कोई खास नहीं होता है।
अरे ! इनके बीच बैठे विशद चेतन को पहचानो,
चेतन कब छल जाए कोई विश्वास नहीं होता है।।478।।

ज्वालामयी जलन में इन्सान जल रहा है,
विषयों की पीड़ा से नारकी सा उछल रहा है।
इन्सान स्वयं की पहिचान से बहुत दूर है,
धर्म गुरुओं से उनका व्यवहार बदल रहा है।।479।।

वीर के इल्म की छाया ऐसी लगी इतिहास पर,
भारत वर्ष दुगुना निखरा है अपने विकास पर।
फिर भी सचेत रहने की आवश्यकता है हर समय,
क्योंकि विश्वास नहीं जिन्दगी में किसी भी श्वाँस पर।।480।।

क्या अक्ल है, क्या होश है, क्या जिस्म और जान है,
खुद अपने ही स्वभाव से नावाकिफ इन्सान है।
दुनियाँ में सभी से तो पहचान कर ली मेरे बन्धु,
किन्तु जिन्दगी में विशद तेरी क्या पहिचान है।।481।।

संतों के हर चलन ही कुछ निराले हैं,
इस दुनियाँ के सारे गम उनके हवाले हैं।
संसार में रहकर भी संसार से विरक्त हैं जो,
वह संत अब तो विशद मोक्ष जाने वाले हैं।।482।।

औरों को चलाने के लिये खुद चलना सीखो,
ज्ञान का प्रकाश करने के लिये दीपक सा जलना सीखो।
धर्म समाज और देश के विकास की चाह है बन्धु,
तो जल में विशद दुग्ध के समान मिलना सीखो।।483।।

संत हमें जिन्दगी जीने का आधार दे गये,
भगवन्त हमें दिव्य देशना का उपहार दे गये।
संतों ने सदाचरण की गंगा बहाई है मेरे भाई,
संत हमें विशद जिन्दगी का सार दे गये।।484।।

ये संत सम्यक्ज्ञान की मशाल बनकर आये हैं,
ये संत सम्यक्चारित्र की ढाल बनकर आये हैं।
ये संत विशद अन्जान मुसाफिर होते हैं मेरे बन्धु,
ये संत अहिंसा धर्म की मिशाल बनकर आये हैं।।485।।

इन्सान वह हैं जिनके हौसले बुलन्द होते हैं,
इन्सान नहीं शैतान हैं वह जो स्वच्छन्द होते हैं।
इन्हें किस श्रेणी में रक्खा जाय मेरे बन्धुओ,
जिनके हौसले मुट्ठी में बन्द होते हैं।।486।।

जिसके चेहरे पर विशद मुस्कान नहीं हैं,
जिनकी जिन्दगी में कोई अरमान नहीं है।
उन्हें इन्सान भला ही कहलें मेरे बन्धुओं,
किन्तु वास्तव में वह सच्चे इन्सान नहीं हैं।।487।।

जिगर से उठी एक उम्मीद तेरी तकदीर बन गई,
दुश्मन को गले लगाना मेरी तासीर बन गई।
प्रातः के सूर्य उदय में रोशनी के समान,
विशद एक रोशनी उठी जो महावीर बन गई।।488।।

चलें हम साथ में उनके जो निर्भय होके जीते हैं,
शुभम् यह जिन्दगी पाकर जो कड़वे घूँट पीते हैं।
रहें क्या साथ में उनके जीवन भार जो समझें,
सम्हल क्या पायेंगे वह जो विशद भावों से रीते हैं।।489।।

तुम दुग्ध में जल की भाँति मिलते रहना,
तुम फूल की तरह सदैव ही खिलते रहना।
कितनी ही कठिनाइयाँ क्यों न आ पड़ें बन्धु,
किन्तु संयम के पथ पर सदा चलते रहना।।490।।

सुन्दर दिखते बाग बगीचे सुन्दर दिखती क्यारी है,
अनुपम फूल खिले हैं कितने खिली हुई फुलवारी है।
नित्य प्रति मेरे गुरुवर जी मुद्रा दिखे तुम्हारी यह,
परम पूज्य गुरुवर के पद में वन्दन सतत् हमारी है।।491।।

हम सत् श्रद्धा के फूल चाहते हैं,
हम सम्यक् ज्ञान का मूल चाहते हैं।
नहीं हैं कुछ भी चाहें हमारे जीवन में,
हम गुरुदेव के चरणों की धूल चाहते हैं।।492।।

अपने सलौने नयनों से प्रभु दर्शन कर लो,
गुरु चरणों में मेरे भाई तुम वन्दन कर लो।
पुनः कब मिलेंगे इन गुरुवर के पावन दर्शन,
एक बार पवित्र भावना से अभिनन्दन कर लो।।493।।

दीपावली के दीप चारों ओर जगमगा रहे हैं,
भक्त दौड़-दौड़ कर प्रभु चरणों में आ रहे हैं।
दीपावली ज्ञान रोशनी का पर्व है मेरे बन्धु,
लोग प्रसन्नता से मिलकर दीपावली मना रहे हैं।।494।।

हम इन्सानियत का दर्जा शैतान को नहीं देंगे,
वीरानगी का नारा हैवान को नहीं देंगे।
प्राण न्यौछावर कर देंगे गुरुओं की रक्षा में हम,
अपने माथे का ताज श्मशान को नहीं देंगे।।495।।

जिन्दगी जीते समय ताने रोज देते हैं लोग,
उनकी शक्ति से अधिक लाद बोझ देते हैं लोग।
जीते जी दाने को तरसते रहते हैं बन्धुओ,
मरने पर अवश्य ही भोज देते हैं लोग।।496।।

जिसे भव भ्रमण से भय नहीं होगा,
जिसे दुराचरण से भय नहीं होगा।
वह अपनी जिन्दगी में सफल नहीं हो सकता,
जिसे जन्म मरण से भय नहीं होगा।।497।।

पर को कष्ट देने वाला वे पीर होता है,
रोटी के पीछे भागने वाला फकीर होता है।
चारित्र का पालन करना आसान नहीं,
रत्नत्रय पालन करने वाला महावीर होता है।।498।।

दीप प्रकाश देता है जल जाने के बाद,
चोला याद आता है बदल जाने के बाद।
समय की कोई कीमत नहीं प्यारे बन्धु,
समय याद आता है निकल जाने के बाद।।499।।

बिना तेल के दीपक कब तक जलता रहेगा,
बिना राह के आखिर कब तक चलता रहेगा।
लोगों की समझ पर बड़ी तरस आती है,
मानव अपने आपको कब तक छलता रहेगा।।500।।

महावीर निर्वाण दिवस पर दीपावली मनाते हैं,
ज्ञान ज्योति की यादगार में मिलकर दीप जलाते हैं।
महावीर गौतम स्वामी की दीपक याद दिलाते हैं,
केवल ज्ञान जगाए हम भी विशद भावना भाते हैं।।501।।

हम स्वयं के जीवन का लेख नहीं पाते हैं,
हम बीते हुए दिनों का उल्लेख नहीं पाते हैं।
क्या जमाना आ गया है आज मेरे बन्धुओ,
हम दूसरों को उठता हुआ देख नहीं पाते हैं।।502।।

उगते हुए सूर्य में बन्धु दिखती अनुपम लाली है,
ज्ञानामृत से गुरु हृदय की भरते गागर खाली है।
विराग सिन्धु से संत ना मिलते इनकी बात निराली है,
संयम की बगिया के अनुपम बने विशद यह माली हैं।।503।।

हम राग द्वेष के मेले में अनुदान सहन ना कर सकते,
हम कायर बनकर के बन्धु रसपान सहन ना कर सकते।
इन्साफ हेतु हम हँसकर के विषपान सहन तो कर सकते,
पर आँख मींचकर संतों का अपमान सहन ना कर सकते।।504।।

आज तक लोगों की मनमानी चलती रही है,
आज तक चूल्हे में आग जलती रही है।
अब नहीं छलने देंगे हम अपने भाई और बन्धुओं को,
आज तक भोलीभाली जनता को जादूगर की चाल छलती रही है।।505।।

कीमत संत की नहीं साधना की होती है,
कीमत धन की नहीं आराधना की होती है।
भक्त तो बहुत हुए इस दुनियाँ में बन्धु,
कीमत भक्त की नहीं भावना की होती है।।506।।

जिनकी चर्चा चर्या दोनों मोक्ष मार्ग की दर्पण है,
जिनका अपना सारा जीवन संयम के हेतु समर्पण है।
ऐसे संतों की वाणी ही जन-जन की कल्याणी है,
नहीं खोजना और कहीं पर विशद यही जिनवाणी है।।507।।

ब्रह्मचर्य क्या ? निज स्वरूप में रमण को कहते हैं,
मोक्षमार्ग पर बढ़ने वाले गमन को कहते हैं।
इन्द्रिय दमन का नाम ब्रह्मचर्य नहीं होता,
ब्रह्मचर्य सम्पूर्ण कर्म शमन को कहते हैं।।508।।

हमने देखा सूरज भी रोशन करने को आता है,
भाग्यहीन के जीवन में फिर भी तम छाया रहता है।
अगर प्रकाशित होना चाहो प्रभु पद अर्घ्य प्रदान करो,
हो जायेगा पावन जीवन प्रभु चरणों का ध्यान करो।।509।।

मिट्टी के दीप जलाना मात्र दीवाली नहीं है,
औरों के दिल जलाना खुशहाली नहीं है।
रोशनी बाहर में नहीं अन्दर में खोजिए प्यारे बन्धु,
स्वयं को जाने बिना दीवाली होने वाली नहीं है।।510।।

कषायी कभी विषयों से उदार नहीं होता,
प्रमादी का कभी विकास नहीं होता।
समय रहते कुछ कर लीजिए जीवन में,
क्योंकि समय का कुछ भी विश्वास नहीं होता।।511।।

समता भाव के बिना जीवन बेकार होता है,
समता से इन्सान का बड़ा उपकार होता है।
समता संतों की विशद धरोहर है प्यारे बन्धु,
समता से नव जीवन का श्रृंगार होता है।।512।।

यदि मारना इष्ट है तो अहसान से मारो,
गर धारना है कुछ तो संयम को धारो।
यूँ हारने मारने से कोई जीत नहीं है,
गर तारना है तो विशद संसार से तारो।।513।।

संतों के दर्शन से तो पत्थर भी पिघल गये,
विशद भक्तों के मुरझाए चेहरे भी खिल गये।
भगवान का नाम बहुत सुना था हमने,
आज संत के भेष में हमें भगवान मिल गये।।514।।

आज हमारा मुकद्दर हमारे साथ हो गया,
गुरुदेव के चरणों में हमारा माथ हो गया।
अब विशद जिंदादिली से जिन्दगी बीतेगी हमारी,
क्योंकि गुरुदेव का हमारे सिर पर हाथ हो गया।।515।।

सज्जन लोग कभी गिरते नहीं हैं,
वीर पुरुष कभी आँहें भरते नहीं हैं।
महल बनाने के लिए मकान गिराना पड़ता है,
इन्सान कभी व्यर्थ कार्य करते नहीं हैं।।516।।

हृदय के समन्दर में कुछ ऐसी सुरा भर ली,
कि कटुता की रेखा कुछ और बड़ी कर ली।
सदियों से हम पास-पास रहते चले जा रहे हैं
पर सम्बन्धों के बीच में दीवार खड़ी कर ली।।517।।

नई राहें नई चाहें नये अरमान पैदा कर,
नये इस साल को पाकर नया श्रद्धान पैदा कर।
दिल में झाँक ले इन्सान तू स्वयं की खातिर,
असत् माटी के पुतले में विशद भगवान पैदा कर।।518।।

नई यह साल आकर के नया संदेश देती है,
नये कुछ कारनामों से नया उपदेश देती है।
नयापन है विशद इन्सान के कुछ कारनामों में,
नया जीवन बना इन्सान यह आदेश देती है।।519।।

रूप देखने के लिए हमें दर्पण चाहिए,
स्वरूप देखने के लिए हमें समर्पण चाहिए।
जिन्दगी में उत्कर्ष प्राप्त करने के लिए बन्धु,
विशद सम्यक् चारित्र का उत्कर्षण चाहिए।।520।।

नीरस है वह काव्य जिसमें अलंकार नहीं है,
वीणा है वह व्यर्थ जिसमें टंकार नहीं है।
संगीत नहीं भक्ति संगीत जीवन का आधार है बन्धु,
विशद सरगम है बेकार जिसमें झंकार नहीं है।।521।।

मन में विकार आते ही हृदय गति रूठ जाती है,
पत्थर से टकराते ही काँच की शीशी टूट जाती है।
चार दिन की जिन्दगानी पर क्यों गरुर करता है नादान,
श्वाँसों के रुकते ही हृदय की धड़कन छूट जाती है।।522।।

धर्म की क्षति मूर्ख नहीं ज्ञानियों से हो रही है,
आज सिद्धान्तों की क्षति मानियों से हो रही है।
अब कौन सहारा दे धर्मायतन और धर्मगुरुओं को,
क्योंकि उनकी क्षति आज दानियों से हो रही है।।523।।

जो संयम के भाव से जितना भरा होता है,
उसका जीवन उतना ही खरा होता है।
आस्था के बिना सब कुछ निरर्थक है बन्धु,
आस्था से जिन्दगी का बाग हरा होता है।।524।।

दुनियाँ में इंसानियत को पाते हैं कोई-कोई,
विशद संतों की शरण में जाते हैं कोई-कोई।
जिन्दगी तो हर जीव प्राप्त करता है धरती पर,
संयम से अपना जीवन सजाते हैं कोई-कोई।।525।।

व्यर्थ है वह फूल जिसमें मकरन्द नहीं है,
व्यर्थ है वह शब्द जिसमें छन्द नहीं है।
वह जिन्दगी 'विशद' मौत से बदतर है,
जिसमें प्रभु भक्ति का आनन्द नहीं है।।526।।

क्या जिन्दगी की राह बेराह हो गई,
क्या यह जिन्दगी मेरी तबाह हो गई।
जब से पकड़ लिए गुरुदेव के विशद चरण,
तो हमें भी जिन्दगी की परवाह हो गई।।527।।

क्या जिन्दगी मेरी यह खार बन गई,
क्या जिन्दगी मेरी यह व्यापार बन गई।
जिन्दगी हमको जीना है गुजारना नहीं,
इसलिए भक्ति जीवन का आधार बन गई।।528।।

हम संयम प्राप्त करके अब संत हो गए,
हमारे सम्बन्ध और व्यवहारों के अन्त हो गए।
जिसने बढ़ाया विशद मोक्षमार्ग पर कदम,
ऐसे अनन्त संत भी अरहन्त हो गए।।529।।

न जाने क्यों लोग इतने निहाल हो गए,
विशद जिन्दगी पाकर स्वयं बेहाल हो गए।
कुछ लोगों ने तो मोक्षमार्ग पर कदम बढ़ाया,
किन्तु कुछ लोग मोह की नींद में ही खो गए।।530।।

वह बड़े खुशनसीब है जिनका जीवन उपहार बन गया,
वह नर धन्य है जो मोक्ष का आधार बन गया।
हम तो समता के दीवाने हैं ममता के नहीं,
संयम भवसागर से निकलने का द्वार बन गया।।531।।

सत् संगति से लोगों का उद्देश्य बदल जाता है,
उनके साथ रहने से लोगों का देश बदल जाता है।
राग और द्वेष में बीत गया सारा जीवन,
संतों के आशीष से यह भेष बदल जाता है।।532।।

अन्धेरी रात में एक दीप जलाना है हमें,
इन्सानियत की राह पर चलना-चलाना है हमें।
यह जिन्दगी धूप-छाँव है प्यारे बन्धु,
अब अपनों से अपनों को मिलाना है हमें।।533।।

जहर को अमृत में बदलना है हमें,
जिन्दगी में चिराग की भाँति जलना है हमें।
हम इन्सान है शैतान और हैवान नहीं,
विशद इन्सानियत की राह पर चलना है हमें।।534।।

हम गैर नहीं अपनों के सताए हैं,
हम और नहीं स्वयं से धोखा खाए हैं।
लोग कहते हैं कि शूलों से जख्म होते हैं,
एक हम हैं कि हमने फूलों से जख्म पाए हैं।।535।।

जन्म होता है किन्तु जीवन बनाया जाता है,
उपादान स्वयं पुरुषार्थ से जगाया जाता है।
भाग्य स्वयं पुरुषार्थ का कायिल है बन्धु,
जिन्दगी को आस्था के फूलों से सजाया जाता है।।536।।

जिन्दादिली से जीने को जिन्दादिल चाहिए,
जिन्दगी चलाने को जीवन्त महफिल चाहिए।
इस जहाँ में भटकते आ रहे हैं हम सदियों से,
अब तो विशद जिन्दगी और श्रेष्ठ मंजिल चाहिए।।537।।

विश्व शांति के नित नारे दिए जा रहे हैं,
जहर के कड़वे घूट भी सहर्ष पिए जा रहे हैं।
सपना ही जिन्दगी है सपना ही मौत है,
स्वप्न के सहारे पर लोग जिए जा रहे हैं।।538।।

राग से भरी आँखों को गम से भरा देखा है,
पायेंगे हम वही जो माथे पर लिखी रेखा है।
पुरुषार्थ ने हैवान को भी इन्सान बना दिया बन्धु,
पुरुषार्थ के आगे शैतान ने भी सर टेका है।।539।।

तर्ज के बिना गीत कभी गाये नहीं जाते,
फूटे हुए बाजे कभी बजाए नहीं जाते।
जिन्दा रहते हुए जिन्दगी बनालो प्यारे बन्धु,
मुर्दों को देख आँसू बहाए नहीं जाते।।540।।

जिगर की पीड़ा को किसे सुनाए हम,
बिगड़ी हुई बात को कैसे बनाये हम।
अपने ही लोग रुठकर बैठे हैं जब यहाँ,
अपनों को अपने आप ही कैसे मनाए हम।।541।।

दोस्तों के बीच मिलकर तकदीर नहीं बटती है,
भरने से आँहें दिल की पीर नहीं घटती है।
जिन्दगी हँसकर गुजराना सीखो प्यारे बन्धु,
आँसू बहा-बहाकर यह जिन्दगी नहीं कटती है।।542।।

यह जिन्दगी फूल की तरह है शूल नहीं,
यह जिन्दगी अंगूर की तरह है बबूल नहीं।
जीवन को यों ही व्यर्थ गँवाने वालो सोचो,
यह जिन्दगी उत्तम रत्न है विशद धूल नहीं।।543।।

सूर्य का जहाँ उदय है वहाँ अस्त भी है,
इन्सान जहाँ सुखी है वहाँ त्रस्त भी है।
हम अपने को बदनसीब माने या खुशनसीब,
परमात्मा दूर है फिर भी सिर पे वरद हस्त भी है।।544।।

बहुत पुण्य संयोग होने पर कहीं दीक्षा होती है,
दीक्षा की सभी को बड़ी प्रतीक्षा होती है।
इन्सान की जिन्दगी क्या विशद परीक्षा है,
इन्सान की जिन्दगी में हर क्षण परीक्षा होती है।।545।।

विराधन सावधानी नहीं चूक में होता है,
स्वर कोयल नहीं उसकी कूक में होता है।
आनन्द और चमत्कार संत नहीं भक्त की भक्ति में है,
आनन्द भोजन में नहीं इंसान की भूख में होता है।।546।।

हृदय से उठी ज्वाला जो पीर बन गई,
वात्सल्य की खुमारी जो छीर बन गई।
रोशन किया धरा को विशद सूर्य की तरह,
उठी एक किरण जो महावीर बन गई।।547।।

चेतन जिसमें रहता उसे शरीर कहते हैं,
बुझाए प्यास जग की उसे नीर कहते हैं।
औरों को जो सताए वह कायर कहा मेरे भाई,
जीते जो स्वयं आपको उसे महावीर कहते हैं।।548।।

कोई दर्दे दिलों की पीड़ा क्या पहिचाने,
औरों के दर्द को वह दर्द क्या माने।
इन्सानियत और हिमायत नहीं जिनके दिल में,
विशद वह अन्जान की पीड़ा क्या जाने।।549।।

सूर्य के उदय से पूर्व दिशा पावन हो गई,
राम के जन्म से नौमी तिथि पावन हो गई।
भारत भूमि कंकरों की नहीं तीर्थंकरों की भूमि है,
महावीर के जन्म से यह धरा पावन हो गई।।550।।

बढ़ो तुम और के मन्तव्य को भी ताड़ सकते हो,
बढ़ो तुम कर्म की मजबूत चादर फाड़ सकते हो।
बढ़ो तुम राह पर बन्धु छोड़कर सारे रिश्तों को,
बढ़ो तुम मोक्ष मंजिल पर भी झण्डा गाड़ सकते हो।।551।।

आज बाप बेटे की नादानी को किस तरह झेलता है,
आज इन्सान तेल की चाहत में रेत को पेलता है।
भौतिकता की चकाचौंध का विशद नजारा है यह,
आज बेटा बाप की इज्जत और जिन्दगी से खेलता है।।552।।

समयसार के ग्रन्थों से जोड़ बैठे कुछ लोग नाता है,
उपन्यास पढ़ने से मिलती कुछ लोगों को साता है।
दीमक बनकर लगे हुए हैं धर्म की जड़ काटने में,
तू-तू मैं-मैं करने में लोगों का समय व्यर्थ जाता है।।553।।

गुलशन से बहारों का नजारा ही अलग है,
इन्सान के नसीब का सितारा ही अलग है।
लोग बैठे रहते हैं मोहताज रिश्ते नातों के,
विशद जिन धर्म का सहारा ही अलग है।।554।।

धर्म के नाम पर इन्सान आज सो रहा है,
अपना स्वयं आदर्श भी इन्सान खो रहा है।
इन्सान की करामात पर विशद शर्म आती है,
इन्सान अपनी करामात पर स्वयं ही रो रहा है।।555।।

जिन्दगी के बीते क्षण जब हम याद करते हैं,
तो परमात्मा से यह फरियाद करते हैं।
हम अपना कदम पीछे नहीं हटने देंगे राह से,
आज यह खुले आम हम सिंहनाद करते हैं।।556।।

कदम संतों के बढ़ते ही निशाएँ भाग जाती हैं,
तपस्या देखकर उनकी दिशाएँ काँप जाती हैं।
सरल शीतल वचन उनके हृदय किसके ना उतरेंगे,
इशारे मूक संतों के हवाएँ भाँप जाती हैं।।557।।

धर्म हैवान को भी इन्सान बना देता है,
धर्म मृत्यु के नाम को निर्वाण बना देता है।
जिन्दगी पाकर धर्म और संयम पालो,
धर्म विशद पत्थर को भी भगवान बना देता है।।558।।

जुदाई का गम मीठा है खारा नहीं है,
जुदाई के बिना और कोई चारा नहीं है।
ऊँचाई को उसी ने पाया है बन्धु,
जो कभी हार से भी हारा नहीं है।।559।।

मेहन्दी को पीसे बिना रंग आता नहीं है,
ठोकर खाये बिना शौर्य जग पाता नहीं है।
बेरंग का रंग अन्दर में समाया है बन्धु,
संयम के बिना जीवन का रंग आता नहीं है।।560।।

कोई दीपक की भाँति तिल-तिल कर जलते हैं,
वह जहर का घूंट पीकर अमृत उगलते हैं।
काल भी सामने आकर क्यों न खड़ा हो जाए,
फिर भी विशद वह अपना पथ नहीं बदलते हैं।।561।।

यह दुनियाँ क्या एक इन्द्र जाल है,
दुनियाँ में इन्सान की अजब चाल है।
यह दुनियाँ आनी जानी है प्यारे बन्धु,
इन्सान हमेशा जाता तो फटेहाल है।।562।।

दुनियाँ के लोग अपने स्वार्थ में पगे होते हैं,
स्वार्थ के कारण ही औरों के पीछे लगे होते हैं।
अपने आप को सगा बताते हैं लोगों के,
निःस्वार्थ व्यक्ति ही वास्तव में सगे होते हैं।।563।।

पाप और पारा कभी भी पचता नहीं है,
मोही प्रभु नाम कभी भजता नहीं है।
जिन्दगी रहते कुछ कर लीजिए प्यारे बन्धु,
अन्तिम क्षणों में कुछ करने लायक बचता नहीं है।।564।।

सुमन शूलों से लड़ते हैं तभी पाते बहारों को,
किश्ती तूफां से टकराती तभी पाती किनारों को।
कौन है तुम्हें जो रोक सकता है मंजिल तक जाने से,
चुनौती तुमने दी है जब आकाश के चंद तारों को।।565।।

अग्नि के संताप से पत्थर भी पिघल गया,
पाया कभी रत्न तो कागा निगल गया।
दुनियाँ की खाक छानने पर कुछ नहीं पाया हमने,
अपने आप को देखा एक बार तो जीवन बदल गया।।566।।

सूर्य नहीं तो विशद दीप सा जलते रहिए,
शुभम् यह जिन्दगी पाकर फूल से खिलते रहिए।
एक स्थान पर ठहर कर थक जाओगे बन्धु,
धीरे-धीरे ही सही सद्मार्ग पर चलते रहिए।।567।।

स्वयं की ओर जाते ही स्वयं का लक्ष्य बदल जाता है,
संस्कार प्राप्त करते ही साधक का भेष बदल जाता है।
दीक्षा प्राप्त करते ही साधक किसी एक नहीं अनेक का होगा,
संत का तो देश बदल जाता है प्रदेश बदल जाता है।।568।।

जिस समय इन्सान के दिल में ज्ञान की ज्योति जल जाएगी,
उसी क्षण हृदय के अन्दर से टीस निकल जाएगी।
एक बार अपने अन्दर झाँककर तो देखिए प्यारे बन्धु,
उसी क्षण आपकी यह जिन्दगी बदल जाएगी।।569।।

बहुत अच्छा हुआ कि दुनियाँ से जुदाई हो गई,
हृदय के अन्दर से मोह की विदाई हो गई।
दुनियाँ के रिश्ते बने हैं दुनियाँ में फँसाने के लिए,
उन सारे रिश्ते और नातों की सफाई हो गई।।570।।

अगर शांति चाहो तो करो समता धारण,
समता विशद राह पर मोड़ देगी।
चाहते मुक्ति मार्ग इस संसार से तो,
समता तुम्हें मोक्ष से जोड़ देगी।।571।।

क्रोध करना सदा क्रोध पर बन्धुओ,
शोध करना स्वयं क्रोध पर बन्धुओ।
क्रोध के फल को जाना नहीं ये विशद,
बोध पाना स्वयं क्रोध पर बन्धुओ।।572।।

क्रोध को हृदय से हटाना चाहिए,
मोह को भी मन से घटाना चाहिए।
शांति की चाह यदि मन में है विशद,
तो अन्दर से क्रोध को मिटाना चाहिए।।573।।

अंधेरा नहीं उजाले को बुलाना है हमें,
मोह नींद में सोने वालों को जगाना है हमें।
महावीर की सन्तान हैं हम सभी बन्धुओ,
सत्य अहिंसा के गीत जग को सुनाना है हमें।।574।।

शांति जिन शांति से शांति पा गये,
स्वयं से स्वयं में जो स्वयं आ गये।
कर लिया है स्वयं से स्वयं को चमन,
उनके चरणों में हो विशद शिरसाः नमन्।।575।।

हम स्वयं के जीवन का लेख नहीं पाते,
हम बीते हुए दिनों का उल्लेख नहीं पाते।
क्या जमाना आ गया है आज मेरे बन्धुओ,
हम दूसरों को उठता हुआ देख नहीं पाते।।576।।

मना रहे हर्ष हम तो अपने ही वास्ते,
बना रहे घर हम तो अपने ही वास्ते।
कई बनाए हैं मकान हमने और टूट गये क्षण में,
बना रहे हैं कब्र हम अपने ही वास्ते।।577।।

आज धर्म के इम्तहां की घड़ी है,
आज मोह की धुन मानव के सिर पर चढ़ी है।
हम आज इंसाफ की माँग लेकर खड़े हैं,
अब इतिहास में जोड़ना एक नई कड़ी है।।578।।

कीमत संत की नहीं साधना की होती है,
कीमत धन की नहीं आराधना की होती है।
भक्त तो बहुत पड़े हैं इस दुनिया में बन्धु,
कीमत भक्त की नहीं भावना की होती है।।579।।

कुछ लोग देखने में लगते बड़े भोले हैं,
दुकान पर नोटों के भरते बोरे के बोरे हैं।
कमाने और खाने का ज्ञान तो बहुत है बन्धुओ,
मगर धर्म के नाम पर तो बिल्कुल ही कोरे हैं।।580।।

संत विषय भोगों का नाम नहीं लेते हैं,
संत जबर्दस्ती किसी से काम नहीं लेते हैं।
लगे रहते ज्ञान ध्यान तप में हर दम,
संत अपने जीवन में विश्राम नहीं लेते हैं।।581।।

लोग गाते तो हैं किन्तु धर्म गीत नहीं,
दुनियाँ के मीत है पर स्वयं के मीत नहीं।
जीतने में लगे हैं लोग दुनियाँ वालों को,
पर स्वयं इन्द्रिय और मन की जीत नहीं।।582।।

थोड़ा सा यत्न करके तुम भी एक बार गुरु का वंदन कर लो,
कृपा उस तत्त्वज्ञानी की मिथ्यात्म का खण्डन कर लो।
जब भी समय मिले तुमको मेरे कहने से मुनि दर्शन कर लो,
कुछ और न कर पाओ गर तो उनके चरणों का चुम्बन कर लो।।583।।

गुरु का नाम हो दिल में सभी वरदान मिलते हैं,
भले वीरान गुलशन हो महकते फूल खिलते हैं।
गुरु अन्धों की आँखें हैं अपाहिज की गुरु लाठी,
जिसे गुरु का सहारा हो उसी के दीप जलते हैं।।584।।

नमन अरिहंत को मेरा सभी सिद्धों को हैं वंदन,
सभी आचार्य वृन्दों को हमारा कोटिशः वंदन।
उपाध्यायों के गुण गाएँ मिटे सब दुःख आक्रन्दन,
जगत के सर्व ऋषियों को नमन् वंदन हैं अभिनन्दन।।585।।

सभी अरिहन्तों को वंदन नमन् सिद्धों को मेरा हो,
सभी आचार्य को वंदन मेरे दिल में सवेरा हो।
उपाध्यायों को अभिवंदन जो मुनियों को पढ़ाते हैं,
लोक में सर्व मुनियों को नमन् आदर से मेरा हो।।586।।

करोड़ों मुख से गुरुवर के गुणों को गा नहीं सकता,
जहाँ गुरुदेव पहुँचे हैं वहाँ मैं जा नहीं सकता।
गुरु ने हाथ खुश हो दिल से सिर पर रख दिया जिसके,
हजारों गर्दिशों में भी वो ठोकर खा नहीं सकता।।587।।

आजकल दिन में भी उल्लू दिखने लगे हैं,
कवि अपनी कविता को स्याही से लिखने लगे हैं।
गीत कवि की अंतर की पुकार है प्यारे भाई,
आज वही गीत नोटों में बिकने लगे हैं।।588।।

इंसान से इंसानियत का असर चला गया,
कतरे की आरजू में समन्दर चला गया।
कर्ज लिया था शादी के वक्त घर पे,
बेटी को घर मिला तो मेरा घर चला गया।।589।।

फूल खिलाये नहीं जाते स्वयं खिलते हैं,
सूर्य चाँद चलाये नहीं जाते स्वयं चलते हैं।
चित्त का चिंतन बदलने पर प्यारे भाई,
इंसान के चेहरे बदले नहीं जाते स्वयं बदलते हैं।।590।।

काँच के टुकड़े उठाने पर तो हाथ से लहू बहेगा,
काँच का टुकड़ा उठाने वाला अनेकों कष्ट सहेगा।
काँच नहीं कंचन को खोजने की कला सीखो,
रत्न पाने वाला महान् जौहरी बनके रहेगा।।591।।

जिसने कड़वे घूंट हमेशा स्वयं ही पिये हैं,
जीवन में अमृत निकालकर औरों को दिये हैं।
उन्होंने ही समझा है विशद जीवन का राज,
जो स्वयं ही क्षमा और वात्सल्यमय जीवन जिये हैं।।592।।

आप औरों के इतिहास पढ़ते आये हैं और भी पढ़ते जाएंगे,
लेकिन औरों के इतिहास आपके किस काम आएंगे।
अब इतिहास पढ़ने की नहीं गढ़ने की आवश्यकता है,
स्वयं के इतिहास तो स्वयं ही बनाये जाते हैं।।593।।

वह घर-घर नहीं जो जलने लग जाए,
उस सूर्य से क्या लाभ जो ढ़लने लग जाए।
रंग बदलने में तो गिरगिट माहिर होता है,
वह इंसान क्या जो रंग बदलने लग जाए।।594।।

दीप का प्रकाश अंधकार का नाश करता है,
सरल शुद्ध हृदय में धर्म अपना वास करता है।
जहाँ पर इंसान और देवों की पहुँच नहीं है,
वहाँ पर सम्यक्ज्ञान अपना प्रकाश करता है।।595।।

कृपा आपकी बनी रहे तो हम आगे बढ़ जाएंगे,
मुश्किल कोई भी आ जाए उससे न घबराएंगे।
आशीर्वाद चाहिये हमको और न कोई चाहत है,
इसका विशद सहारा पाकर मंजिल तक बढ़ जायेंगे।।596।।

गौतम स्वामी कर्म घातिया, नाश केवली आप बने,
कर्म श्रृंखला महावीर जिन, प्रातःकाल में पूर्ण हमने।
घर-घर में खुशियों को लेकर पर्व दीवाली आया है,
दीपमालिका के अवसर पर, ज्ञान रोशनी लाया है।।597।।

दीपावली पर्व की खुशियाँ सदा आपके साथ रहें,
परम सौख्य समता के निर्झर, सदा आपके हृदय बहें।
विशद गुणों के साथ आपका, जीवन यह उपकारक हो,
विशद भाव से मेरे बंधु, दीपावली मुबारक हो।।598।।

पर्व दीवाली के अवसर पर, महावीर की जय-जय हो,
विशद भावना भाते हैं हम, पर्व श्रेष्ठ मंगलमय हो।
करो सदा उपकार सभी का, जीवन यह उपकारक हो,
श्रेष्ठ भावना रहे साथ यह, दीपावली मुबारक हो।।599।।

आज को इस तरह जिएँ कि कल यादगार बन जाए,
काम वह करो कि स्वयं को मददगार बन जाए।
वह कार्य कभी भी नहीं करना प्यारे भाई,
कि जिन्दगी में इंसान किसी का कर्जदार बन जाए।।600।।

नफरत नहीं हम तो प्यार करना जानते हैं,
गैरों को भी हम तो अपने समान जानते हैं।
गुजरी होगी लोगों की जिन्दगी रो-रोकर के,
हम तो हँसकर जीना ही जिन्दगी मानते हैं।।601।।

विशद अन्तस का प्रेम कभी टूटता नहीं है,
भाई-भाई के लिए कभी लूटता नहीं है।
यह अटल नियम है संसार का मेरे मित्र,
हृदय से बनाया गया संबंध कभी छूटता नहीं है।।602।।

रोज मंदिर जाकर भी यदि उपकार करना नहीं सीखा,
अपनों के बीच रहके भी अपना सा व्यवहार करना नहीं सीखा।
बहुत दूर होगा स्वर्ग और मोक्ष उस इंसान से मित्र,
जिसने दुःखी प्राणी के प्रति हमदर्द ये प्यार करना नहीं सीखा।।603।।

अपना कार्य इस तरह कीजिये कि अपनी पहचान बन जाए,
जिन्दगी इस तरह जिएँ कि हर किसी को याद आए।
इंसान इंसान ही नहीं भगवान भी होता है प्यारे भाई !
संत बनकर जिएँ तो हर व्यक्ति श्रद्धा से सिर झुकाए।।604।।

मन को आराधना में लगाए रखिए,
इस तन को साधना में लगाए रखिए।
यही जिन्दगी की सार्थकता है मित्र,
जीवन को कर्म की विराधना में लगाए रखिए।।605।।

तकली धागे में फंसकर उसके ईर्द-गिर्द घूमती है,
कली हवा के झोखे से वृक्ष पर विशद झूमती है।
इंसान भाग्य से नहीं पुरुषार्थ से बड़ा बनता है प्यारे भाई,
जो निरन्तर परिश्रम करते सफलता उनके चरण चूमती है।।606।।

क्या वृक्ष की भाँति कोई फलना सीख पाया है,
क्या दीप की भाँति कोई जलना सीख पाया है।
असफलता से कभी घबराना नहीं ये विशद !
क्या बिना गिरे कोई चलना सीख पाया है।।607।।

आपके कर्त्तव्य का फल आपके साथ है,
गुरुदेव का आशीष तो सदा आपके माथ है।
रात होना तो प्रकृति प्रदत्त है कोई टाल नहीं सकता,
किन्तु दीप जलाना तो विशद आपके हाथ है।।608।।

कहानी इतनी मत सुनाइये कि सुनने वाला ही सो जाए,
किसी को इतना मत सताइये कि वह पागल ही हो जाए।
धन को इतना महत्त्व नहीं देना प्यारे भाई जीवन में,
कि धन की लालच में आपका चारित्र ही खो जाए।।609।।

रोते को हँसाने वाले कोई-कोई हुआ करते हैं,
मरते को बचाने वाले कोई-कोई हुआ करते हैं।
खोटा आचरण खोटी राह पर चलने वाले बहुत हैं बंधु,
सही राह पर चलाने वाले कोई-कोई हुआ करते हैं।।610।।

सत्कर्म से इंसान की तकदीर बनती है,
कागज पर कलम फेरने पर लकीर बनती है।
जिस पत्थर को बेरहम होकर कुचला गया हरदम,
तरासने पर वही शिला महावीर बनती है।।611।।

ठहरना नहीं पड़ाव पर कुछ आगे चलना चाहिये,
जिससे कभी न मिले उस चेतना से मिलना चाहिये।
वह है बहुत ही दूर, हमारी गाफिल निगाहों से,
इस दीप से विशद कोई ज्योति जलाना चाहिए।।612।।

एक बार पावन तीर्थ पर आकर देखिए,
श्रद्धा अपनी पावन जगाकर देखिए।
जीवन चमन न हो जाए तो कहना,
एक बार अपनी भक्ति आजमा कर देखिए।।613।।

हमने किसी और से नहीं अपनों से चोट खाई है,
इसलिए किसी को अपना न बनाने की कसम खाई है।
धन छोड़ वन को जाने वाले पार्श्वनाथ बन गये,
हम भी पार्श्वनाथ बन जाएँ हमने यही भावना भाई है।।614।।

खुशियों में कभी-कभी गम के हेतु निकल आते हैं,
कभी-कभी हँसने में भी आँसू निकल आते हैं।
अपनी तासीर को बदल के देखो प्यारे भाई,
सरलता से इंसान क्या पत्थर भी पिघल जाते हैं।।615।।

सत्कर्म से इंसान की तकदीर बनती है,
कागज पर कलम फेरने पर लकीर बनती है।
जिस पत्थर को बेरहम होकर कुचला गया हरदम,
तरासने पर वही शिला पार्श्वनाथ बनती है।।616।।

आधुनिकता की होड़ में मानवता खोती जा रही है,
आज की दुनियाँ स्वयं की राहों में शूल बोती जा रही है।
तरक्की के नाम पर आज की पागल दुनियाँ विशद,
आर्य सभ्यता विवेक और बुद्धि खोती जा रही है।।617।।

तुम्हें परम वीतरागता से किसने सजाया होगा,
तुम्हें उपसर्गजयी किसने बनाया होगा।
आप परमात्मा बनकर जो आये थे धरा पर,
अवश्य ही सब कुछ अपनी योग्यता से पाया होगा।।618।।

जहाँ भटकते हुए इंसान को मुकाम मिल जाए,
जहाँ थके हुए इंसान को विश्राम मिल जाए।
चरणों में समर्पण करने वाला क्या नहीं पा लेता,
पार्श्व प्रभु के चरणों में तो शिवधाम मिल जाए।।619।।

जो कल था उसे भुलाकर तो देखो,
जो आज है उसे पाकर तो देखो।
आने वाला पल खुद ही संवर जाएगा,
एक बार प्रभु के पास आकर तो देखो।।620।।

परमात्मा के चरणों में ये फरियाद करते हैं,
उन्हें सलामत रखना जिन्हें हम याद करते हैं।
अपना जीवन समर्पित कर दिया आपके चरणों में,
विशद हृदय से हम यह सिंहनाद करते हैं।।621।।

एक तो हमें गुरुवर आपके दर्श नहीं होते,
दर्श हो भी जाएँ तो चरण स्पर्श नहीं होते।
चरण-स्पर्श कभी-कभी हो जाते हैं,
किन्तु चाहते हुए भी नये वर्ष नहीं होते।।622।।

जरा सा भी प्रमाद आते ही दोष हुआ करते हैं,
लोग शायद उस समय मदहोश हुआ करते हैं।
जब भी अहसास होता अपनी गलती का,
उस समय इंसान को अफसोस हुआ करता है।।623।।

बंद थे द्वार कमरे के हम नहीं खुला सके,
जाते समय गुरुवर को हम नहीं बुला सके।
देखते ही देखते बहुत दूर निकल गये गुरुवर,
उन्होंने तो याद नहीं किया पर हम उन्हें नहीं भुला सके।।624।।

हमारी आवाज दूर से भी सुनाती तो होगी,
तुम्हारी ध्वनि साथ में गुनगुनाती तो होगी।
हँसे बगैर नहीं रह पाते होंगे आप स्वप्न में भी,
आपको हमारी याद आने पर हँसी आती तो होगी।।625।।

यह जिन्दगी एक काँटों का सफर है,
न तेरी यहाँ कोई मकाँ है न घर है।
क्यों खोज रहे हो ठिकाना यहाँ रहने का,
ये जिन्दगी तो विशद अंजाना शहर है।।626।।

हमें न फूलों की न बहारों की तलाश है,
न मन में चाँद सितारों की आश है।
हर जनम में आपको ही पाएँगे गुरुवर,
हमारे लिए तो यह पूरा विश्वास है।।627।।

जिन्दगी की राहों में हर जगह नये चेहरे मिलेंगे,
कहीं पर कम तो कहीं पर अधिक भी मिलेंगे।
हर समय सोच-समझ कर कार्य करना,
जरूरी नहीं कि हर जगह हम जैसे मिलेंगे।।628।।

कभी जिन्दगी में किसी के लिए नहीं रोना,
रोकर अपने आँसुओं से व्यर्थ चेहरा नहीं धोना।
यह जिन्दगी प्राप्त की है कुछ कर गुजरने को,
रोकर इन पलों को व्यर्थ नहीं खोना।।629।।

बिखरे आँसुओं के मोती हम जोड़ न सकेंगे,
आपकी भक्ति से कभी मुख मोड़ न सकेंगे।
छूट जाए सारी दुनियाँ सारा संसार हमसे,
पर गुरुदेव आपके चरण छोड़ न सकेंगे।।630।।
वह पल भी क्या पल रहा होगा,
जब पूर्व से सूरज निकल रहा होगा।
उस समय की छटा भी निराली होगी विशद,
जब दीक्षा दिवस का कार्यक्रम चल रहा होगा।।631।।
जो चारों धाम के भी दर्शन कर आया होगा,
जिसने सभी तीर्थों पर भी पूजा और विधान रचाया होगा।
फिर भी उसकी तीर्थ यात्रा अधूरी है पार्श्व प्रभु के दर्शन बिन,
जो अतिशय क्षेत्र चँवलेश्वर पर नहीं पहुँच पाया होगा।।632।।
आज की दुनियाँ संस्कृति खो रही है,
तरक्की के नाम पर इज्जत भी धो रही है।
आज के इस मिलावट के जमाने में प्यारे भाई !
अमृत तो क्या जहर में भी मिलावट हो रही है।।633।।
तुम्हारे कदमों में गर करामात होगी,
तो हर फरिस्ते से तुम्हारी मुलाकात होगी।
नजरिया बदलने की आवश्यकता है विशद,
हर दिल से प्रेम की बरसात होती होगी।।634।।
दीक्षा दिवस का अवसर आया झूम-झूम गुण गाने को,
आते हैं सब गुरु चरणों में गुरुवर के गुण पाने को।
देते हैं उपदेश गुरुजी मोक्षमहल में जाने को,
लगे हुए क्यों तुम बंधु अंतिम सेज सजाने को।।635।।
चरण कमल में गुरु आपके सादर शीश झुकाते हैं,
भक्तिभाव से प्रमुदित होकर गीत आपके गाते हैं।
दीक्षा दिवस मुबाकर हो गुरु चरणों वंदन करते हैं,
तुम जियो हजारों साल विशद हम यही भावना भाते हैं।।636।।

आश्चर्य है आज सागर को भी पानी की तलाश है,
बड़े महासागर को भी पानी की प्यास है।
आज इंसान सब कुछ पाकर भी दुःखी नजर आता है,
हर शहर में जाके देखो इंसान कितना उदास है।।637।।
पता नहीं फूल खिलकर भी क्यों उदास नजर आता है,
पता नहीं दुःखी क्यों आकाश नजर आता है।
जितनी तरक्की हो रही है आज देश की,
उतना ही इंसान के जीवन का ह्रास नजर आता है।।638।।
लिखा किस्मत में जो होता वही इंसान पाते हैं,
न जाने स्वप्न क्यों यों ही व्यर्थ मानव सजाते हैं।
विशद पुरुषार्थ जो करते जिन्दगी प्राप्त करके यह,
वही इंसान दुनियाँ में पूज्यता श्रेष्ठ पाते हैं।।639।।
सगाई होते ही गुरुदेव न याद आते हैं,
विवाह होते ही माँ-बाप को भूल जाते हैं।
पुत्र पैदा होते ही होता है विशेष परिवर्तन,
पुत्र जन्म होते ही लोग स्वयं के भी नहीं रह पाते हैं।।640।।
जिसके अन्दर इंसानियत है वही सच्चा इंसान कहलाता है,
विशद इंसान को अपने कर्त्तव्यों का भान कराता है।
कृतघ्न नहीं कृतज्ञता इंसान के जीवन का श्रेष्ठ भूषण है,
कृतज्ञ इंसान उपकारों का बदला जीवन भर चुकाता है।।641।।
सद्चिन्तन के अभाव में इंसान हैवान बन जाता है,
खोटी संगति पाकर मानव शैतान बन जाता है।
सद् चिन्तन विशद एक बार करके तो देखो जीवन में,
सद् चिन्तन से अपराधी भी एक क्षण में महान् बन जाता है।।642।।
मोह के अंधकार में इन्सान का जीवन निकल जाता है,
नोट की चाहत में इंसान कभी नहीं सम्हल पाता है।
सत्य का अहसास करना कराना बहुत मुश्किल है,
सत्य का अहसास होते ही जीवन ही बदल जाता है।।643।।

इंसान अंहकार की कार में सवार हो गया,
इसलिए इंसान ही इंसान को भार हो गया।
जिसने त्याग दिया सिर से अहंकार का भार,
उस इंसान का भवसागर से उद्धार हो गया।।644।।

लालच के कारण इंसान बुद्धिहीन हो जाता है,
लालची इंसान बिल्कुल ही दीन हो जाता है।
इसलिए कहा है लालच बुरी बला होती है विशद,
लालची इंसान अपराधों के अधीन हो जाता है।।645।।

कर्म का उदय हमेशा इंसान के साथ रहता है,
विशद कर्म करना तो इंसान के हाथ रहता है।
इसीलिए भगवान महावीर ने कहा हमेशा सत्कर्म करो,
कर्म का सुफल दुष्फल इंसान के माथ रहता है।।646।।

आज का इंसान अपनी मान मर्यादा खोता जा रहा है,
अपने हाथों अपने ही मार्ग में काँटे बोता जा रहा है।
स्वयं के द्वारा किए गये अपराध के फल पर विशद,
अज्ञानी होकर इंसान रोने को मजबूर होता जा रहा है।।647।।

लक्ष्मी चंचल है दुनियाँ में किसी की नहीं होती है,
जब पास रहती तो चैन खोती जाती है तो चाम खोती है।
लक्ष्मी की महिमा बड़ी विचित्र है प्यारे भाई जग में,
लक्ष्मी पाके दुनियाँ कभी हँसती है तो कभी रोती है।।648।।

आज का इंसान पाश्चात्य सभ्यता का दीवाना होता जा रहा है,
पाश्चात्य सभ्यता की दौड़ में आर्य सभ्यता को खोता जा रहा है।
अब इंसान के माथे पर कलंक और कुल के विनाश की नौबत आने लगी है
इस कालचक्र में फंसकर एक-एक इंसान रोता जा रहा है।।649।।

आदत इंसान के जीवन को निस्सार बना देती है,
आदत फूल सी जिन्दगी को भी भार बना देती है।
विशद आदत के कायिल नहीं होना अपनी जिन्दगी में,
आदत इंसान को जीवन में गुनहगार बना देती है।।650।।

इंसान नहीं समय सबसे बड़ा बलवान होता है,
श्रेष्ठ इंसान नहीं उसके द्वारा किया सम्मान होता है।
दुनियाँ में लोग किसी को श्रेष्ठ अथवा अपना माने,
अपने पास जो है सर्वश्रेष्ठ वह इंसान होता है।।651।।

तृष्णा के कारण इंसान बड़ा रागी हो जाता है,
आवेश में आने पर इंसान बागी हो जाता है।
तृष्णा नागिन इंसान का ज्ञान और बुद्धि छीन लेती है,
इंसान अपराध करके महापाप का भागी हो जाता है।।652।।

परोपकार के समान कोई दान नहीं है,
परोपकार के समान कोई सम्मान नहीं है।
परोपकारी को सब कुछ प्राप्त हो जाता है विशद,
परोपकार के समान कोई विद्वान और भगवान नहीं है।।653।।

लघुता इंसान की पहिचान बना देती है,
लघुता इंसान को महान बना देती है।
लघुता इंसान के जीवन का अमृत है प्यारे भाई,
लघुता जीवन को स्वर्ग के समान बना देती है।।654।।

झूठ आग की चिन्गारी के समान होती है,
झूठ हमेशा पापों के बीज ही बोती है।
झूठ से हमेशा बचकर रहने की आवश्यकता है,
झूठ सुख-चैन तो ठीक कभी-कभी जान भी खोती है।।655।।

जीव अजर-अमर होता है कभी मरता नहीं है,
इंसान महाभूत है भूतों से भी कभी डरता नहीं है।
दुनियाँ में रहने वालो हमेशा कर्म से डरते रहो,
कर्मों का घाव बड़ा विचित्र है कभी भरता नहीं है।।656।।

विशद संत लोगों में संस्कार के बीज बोते हैं,
उनकी खोटी आदतों और दुराचारों को खोते हैं।
इसलिए संत और भगवंतों की जयंती मनाई जाती है,
क्योंकि वह संसारी नहीं मोक्ष के राही होते हैं।।657।।

भूल पर अपनी हमें अफसोस होना चाहिए,
अपना विशद जीवन निर्दोष होना चाहिए।
हमें अच्छा-बुरा सब कर्म के फल से मिलता है,
अतः जिन्दगी की हर घड़ी में संतोष होना चाहिए।।658।।

हर सुबह अपने साथ, नया हर्ष लेकर आती है,
एक-एक दिन व्यतीत होकर, नव वर्ष लेकर आती है।
एक बार अपना पुरुषार्थ, जगाकर देखो मेरे मित्र,
हर सुबह अपने साथ, नया उत्कर्ष लेकर आती है।।659।।

जिनने अंधेरों में, ज्ञान के दीपक जलाए हैं,
औरों की राहों में, बिछे शूल भी हटाए हैं।
वह इन्सान नहीं देवता है, इस पृथ्वी पर।
जो अपनी जिन्दगी, परोपकार के लिए बिताए हैं।।660।।

कोई इंसान ऐसा भी है, जो प्यार करने को मजबूर है,
वह प्यार भरे विशद, भावों से भी भरपूर है।
किन्तु मैं कहता हूँ प्यार करना तुझे मंजूर है,
तो प्यार उससे कर, जो नूर का भी नूर है।।661।।

(खण्ड 'ब')

मंगलाचरण

तुभ्यं नमः सहज भाव स्वभावकाय,
तुभ्यं नमः दृग-चारित्र विकासकाय।
तुभ्यं नमः सकल पाप विनाशनाय,
तुभ्यं नमः गुरु 'विराग' हितंकराय।।1।।

ज्ञानोपयोग अति निर्मल भाव युक्तं,
सिद्धान्त शास्त्र निपुणं कालुष्य मुक्तं।
स्याद्वाद न्याय-नय युक्त विमल मनस्वी,
वन्दे 'विनम्र' गुरुवर त्वं श्रेष्ठ संतम्।।2।।

आदि जिन आदिकर चल दिये धर्म का,
हेतु जिनने बताया हमें शर्म का।
आदि जिन हो गये जग में तारण तरण,
उनके चरणों में हो मेरा शत् शत् नमन्।।3।।

जीतना कर्म का नहीं होता सरल,
कर्म को जीतने वाले होते विरल।
कर्मों को जीतकर हुए अजितनाथ जिन,
बन सकूँ मैं अजित 'विशद' करता नमन्।।4।।

कर असम्भव को सम्भव हुए आप जिन,
कर्म नाशी कहो कौन है आप बिन।
तुम सा बनने को आये हैं हम तव चरण,
सम्भव जिनके चरण में 'विशद' हो नमन्।।5।।

छोड़कर आ गये सारे जग की शरण,
मैट दो अब हमारा भी जन्म मरण।
अभिनन्दन कर रहे प्रभु पद में विशद,
मैट दो कर्म मेरे लगे जो अशद।।6।।

मति जिन की हुई सु मति धर्म से,
हो गये हैं रहित जो वसु कर्म से।
शांति पायेंगे जो करते प्रभु का मनन,
उनके चरणों में हो विशद सिरसा नमन्।।7।।

पद्म पर शोभते पद्म प्रभु पद्म रंग,
वह गगन में विराजे चतुष्टय के संग।
कर्म का कर रहें हम सभी के शमन,
पद्म करके समर्पित विशद हो नमन्।।8।।

हे सुपारस प्रभु ! शुभ मुझे दर्श दो,
सद् चरण का मुझे आप स्पर्श दो।
ना मिली शांति हमको प्रभु दर्श बिन,
नमन् करते विशद पाने को तव चरण।।9।।

चन्द्र सम कान्ति है चिह्न भी चन्द्र है,
तब चरण में नमन् करते शत् इन्द्र हैं।
भक्ति करने को आते सभी साथ हैं,
तब चरण में विशद मम झुका माथ है।।10।।

विधि को सु विधि करके सुविधि जिन हुये,
लोक के शीश को आप जाकर छुये।
सन्त हो अन्त कर कन्त शिव के परम,
तब चरण द्वय में हो विशद शिरसा नमन्।।11।।

शील को पूर्ण कर ज्ञान की झील में,
शांति से खो गये हैं स्वयं शील में।
प्रभु शीतल करो मेरा जीवन चमन,
तब चरण में विशद करूँ ज्ञानाचरण।।12।।

स्वयं से स्वयं को स्वयं ही पा गये,
स्वयं से स्वयं पर स्वयं ही छा गये।
श्रेय पाकर हुए निःश्रेयस् श्रेय जिन,
जिनके दोनों चरण में विशद शुभ नमन्।।13।।

आपने आपको आप में वर लिया,
ज्ञान केवल स्वयं में प्रकट कर लिया।
स्वयं ही स्वयं में कर रहे हैं रमण,
वासुपूज्य प्रभु पद में शिरसा नमन्।।14।।

त्याग मल कर्म का हो गये हैं अमल,
ज्ञान पाकर 'विशद' बना आसन कमल।
विमल दो ज्ञान हमको, हे विमल ! जिन,
विमल जिन के चरण में हो शत् शत् नमन्।।15।।

संत बनकर किया लोक का अंत है,
ज्ञानधारी विशद जिन हुये ऽनन्त हैं।
हो गये हैं जहाँ में जो तारण तरण,
जिन चरण में विशद करे शत् शत् नमन्।।16।।

धर्म से धर्म में धर्म मय हो गये,
धर्म मय धर्म में जो स्वयं खो गये।
धर्म जिन दो मुझे धर्म शुभ जिन परम,
धर्म जिन के चरण में हो शिरसा नमन्।।17।।

शांति से शांति को पा गये शांति जिन,
बीते हैं शांति से जिन्दगी के भी दिन।
शांति जिन की मिले शांति से शत् शरण,
द्वय चरण में विशद शांति जिनके नमन्।।18।।

कुन्थु जिन कुन्थु आदिक सभी के प्रभु,
नर खचर सुर पशु जिन सभी के विभु।
कुन्थु जिन के चरण में हो शिरसा नमन्,
राह पर कुंथु जिन को करूँ में नमन्।।19।।

विरह हो कर्म से स्वयं ही इस तरह,
दोष का कर सकें नाश श्री जिन अरह।
पा सकूँ मैं प्रभु जिन अरह की शरण,
तब चरण में विशद मेरा शिरसा नमन्।।20।।

मोह के मल्ल को मल्लि जिन जीतकर,
कर्म को वीरता से भयभीत कर।
मल्लों में मल्ल हो गये हैं वह परम्,
मल्लि जिन के चरण विशद शिरसा नमन्।।21।।

ज्ञान से ज्ञान पाकर हुये ज्ञानधर,
दृष्टा ज्ञाता हुये प्रभु जी दर्श कर।
दर्श ज्ञानाचरण दो मुनिसुव्रत नाथ जिन,
तव चरण में करे विशद शिरसा नमन्।।22।।

नृप विजय के हैं सुत बहुत ही श्रेष्ठतम्,
सद्गुणों में हैं जो लोक में ज्येष्ठतम्।
नमि जिन ने किया है गगन से गमन,
तव चरण में करे विशद शिरसा नमन्।।23।।

कर्म घाती किये नाश तुमने प्रभु,
पा चतुष्टय हुये हो स्वयं ही विभु।
मिट गया नेमि का भाई जन्म मरण,
चरण वन्दन करूँ विशद पाऊँ शरण।।24।।

ज्ञान ज्योति जली पार्श्व के नाम पर,
बन गये पार्श्व जिन ये शुभम् कार्यकर।
पार्श्व जिन हैं विशद जग में तारण तरण,
हो ! प्रभु तव चरण में समाधि मरण।।25।।

सन्मति प्राप्त कर सन्मति हो गये,
स्वयं से स्वयं में स्वयं ही खो गये।
हो मति सन्मति हे महावीर ! जिन,
तव चरण द्वय में हो विशद शिरसा नमन्।।26।।

पंच आचार जिनके हृदय भर गये,
कूच सारे जहाँ के विषय कर गये।
विराग सागर गुरु हे विरागी ! रतन,
तव चरण में विशद मेरा शिरसा नमन्।।27।।

ज्ञान से ध्यान से स्वयं को जानते,
ज्ञान से जानते दर्श से मानते।
हो गये राग से ये विरागी चरण,
कर नमन् विशद पाना गुरु की शरण।।28।।

दर्श से दर्श पाया है जिनदेव के,
बन गये हैं भ्रमर जिन चरण सेव के।
वीतरागी गुरु हे विराग ! परम,
तेरे चरणों में हो विशद शत् शत् नमन्।।29।।

वीर ने वीरता को वरण कर लिया,
जन्म पाया है अन्तिम मरण कर लिया।
ज्ञान पाया विशद किया अंतिम मरण,
कर नमन् मैं चरण कर रहा हूँ वरण।।30।।

दर्श करने प्रभु की शरण आ गये,
गीत गुरुवर के मन में मेरे छा गये।
खिंचे आते हैं श्रावक प्रभु के चरण,
मैट दीजे प्रभु मेरा जन्म मरण।।31।।

घूमकर लोक में चैन पाया नहीं,
द्रव्य है कौन सा जो कि खाया नहीं।
धर्म वह है जहाँ में मेरे बन्धुओ,
आज तक जो कभी हमने पाया नहीं।।32।।

कहते शैतान उसको जो हिंसक अरे !
मान से आज मानव कपट से भरे।
कैसे हो शांति मन में मेरे बन्धुओ,
धर्म से जो रहें सर्वथा ही परे।।33।।

अस्त्र परमाणु का बन गया आज है,
मगर जाना नहीं शक्ति का राज है।
विशद जीवन बने शक्ति के योग से,
शक्ति से बनते सबके सभी काज हैं।।34।।

इज्जत करते जहाँ में सभी नोट की,
चल रही राजनीति यहाँ वोट की।
नहीं दिखता यहाँ पर कोई वीर है,
बात करते है पंडित भी अब खोट की।।35।।

जीवन अपना तू खोता है क्यों व्यर्थ में,
लगा रहता है तू क्यों सदा अर्थ में।
साथ तेरे नहीं जाये धन ये बदन,
जानकर क्यों पड़ा मोह के गर्त में।।36।।

लोग दौलत को पाकर हुए चूर हैं,
आस में धन की मानव हुए क्रूर हैं।
शांति कैसे मिले जीवन में ये विशद,
सर्वदा जा रहे धर्म से दूर हैं।।37।।

आज दुनियाँ खड़ी मौत के ढेर पर,
बम को माने सहारा यहाँ देश हर।
कल्पना विश्व शांति की करते विशद,
ध्वस्त होने का लगता यहाँ आज डर।।38।।

मोह का जोर शायद बढ़ा है यहाँ,
मोह का भूत सिर पर चढ़ा है यहाँ।
बात करते हैं अब देखकर धर्म की,
खड़े होंगे प्रबंधक बड़े सब जहाँ।।39।।

लोग करते फिरें औरों का पता,
बना देते हैं मरने पर उनकी चिता।
अवसरवादी जहाँ में बड़े लोग हैं,
गधे को भी समय पर कहते हैं पिता।।40।।

लोभ करते हैं लोग इस जहाँ में बड़ा,
पाप का भूत उनके भी सिर पर चढ़ा।
अवगुण होंगे सभी माफ तब तक तेरे,
नहीं तेरा भरा पाप का फुल घड़ा।।41।।

देव दर्शन कभी करने जाते नहीं,
ज्ञान का योग भी कहीं पाते नहीं।
कैसे हो बंधु उनका ये जीवन चमन,
संयम से आपको जो सजाते नहीं।।42।।

कहाँ जाना हमें राह क्या है सही,
कार्य क्या है गलत हमको करना नहीं।
वीर वाणी बताती मेरे बंधुओ,
मुक्ति हेतु शरण वीर की हम गही।।43।।

कौन राही है जो कभी बढ़ता नहीं,
पर्वतारोही कैसा जो चढ़ता नहीं।
छात्र कैसे कहें हम उन्हें बन्धुओ,
गुरु पाकर भी जो स्वयं पढ़ता नहीं।।44।।

मूँछ पर ताव देना सभी जानते,
दूसरों को कोई कुछ नहीं मानते।
कैसे हो शांति जीवन में उनके विशद,
जो स्वयं आपको भी ना पहिचानते।।45।।

शास्त्र पढ़ना पढ़ाना सरल है बड़ा,
शास्त्र पढ़ने का रंग माथे पर चढ़ा।
मोक्ष मंजिल रहे दूर उनसे विशद,
आचरण से बहुत दूर जो है खड़ा।।46।।

बढ़ते हैं जो नहीं मोक्ष की राह पर,
भरने में जो लगे रहते अपना ही घर।
हीन पुरुषार्थ से नारियाँ वह सभी,
करें पुरुषार्थ जो वही होते हैं नर।।47।।

वानरों के कहीं कोई घर हैं नहीं,
कहाँ पक्षी भी कोई जिसके पर हैं नहीं।
नहीं पुरुषार्थ जो कभी करते विशद,
नारियाँ हैं सभी वह नर हैं नहीं।।48।।

ज्ञान से दूर भगते मनुज आज हैं,
तन पे करते फिरें वह तो नाज हैं।
हो गये हैं दिवाने भोगों के विशद,
अपनी आदत से आते नहीं बाज हैं।।49।।

बिना ईंधन के जलती नहीं आग है,
वस्त्र रखकर भी कहते नहीं राग है।
छोड़ दो ये परिग्रह तुम अपना विशद,
बनकर डसता तुम्हें कालिया नाग है।।50।।

संतों को लोग अब करते बदनाम हैं,
खोजना उनकी कमियाँ बना आम है।
कीचड़ कितना उछालो तुम उन पर विशद,
दिखे आदर्श उनका खुले आम है।।51।।

जीवन अर्पण करें लोग धन के लिए,
जीते हैं आज मानव तन के लिए।
नहीं होगा ये तन मन धन तेरा विशद,
संदेश है वीर का जन-जन के लिए।।52।।

दाम के हेतु प्राणों को हरने लगे,
मूक प्राणी अब बेमौत मरने लगे।
कितने हैं निर्दयी आज मंत्री विशद,
माँस का आज निर्यात करने लगे।।53।।

आते-जाते जहाँ में बहुत लोग हैं,
धर्म का पाते कुछ ही संयोग हैं।
कैसे पायेंगे शांति जीवन में विशद,
लगे कर्मों का जिनको महा रोग है।।54।।

जिनका आदर्श ही एक दर्पण रहा,
साधना हेतु यह जीवन अर्पण रहा।
लक्ष्य पाकर के उनका कदम चूमता,
गुरु चरणों में जिनका समर्पण रहा।।55।।

आस्था से खुले मोक्ष का रास्ता,
ज्ञान से पथ स्वयं को स्वयं भासता।
दुनियाँ की उलझनों से तुम बचना विशद,
मुक्ति पाने से है बस मेरा वास्ता।।56।।

जीत सकते नहीं हो तुम दुत्कार से,
मिले सम्मान तुमको भी सत्कार से।
जीतना चाहो यदि औरों को विशद,
जीत लो तुम उन्हें हृदय के प्यार से।।57।।

आत्म ज्योति कभी भी जलाई नहीं,
ज्ञान ज्योति से ज्योति मिलाई नहीं।
कैसे हो तेरा जीवन प्रकाशित विशद,
समता की सरिता अब तक बहाई नहीं।।58।।

भोग को भोगकर भोगे खुद ही गये,
भोगने पर उसे मानते हैं नये।
भूलकर सभी अज्ञानता में विशद,
भोगों के पीछे ही सभी अंधे भये।।59।।

कितने संकट उठाते फिरे लोक में,
जीवन बीता सदा शोक ही शोक में।
आस्था न जगी कभी मेरी विशद,
लुट गया सारा जीवन मोह के योग में।।60।।

पतंग उड़ती सदा ही आकाश में,
दूर होकर भी होती सदा पास में।
पास में हैं सभी दूर होकर विशद,
बस गये हैं प्रभु जिनके विश्वास में।।61।।

मेघ कितने उठे मगर बस नहीं,
मेघ आगे बढ़े और बरसे कहीं।
आस करते रहे देखकर हम विशद,
श्री गुरुदेव को बैठकर भी यहीं।।62।।

नीम शक्कर से भी मिष्ट होगी नहीं,
दीप के बिन उजाला क्या होता कहीं।
छोड़कर के गुरु को जाओगे कहाँ,
घूमकर अंत में आना होगा यहीं।।63।।

संत सच्चे सभी वीतरागी कहे,
जिनकी वाणी से सद्ज्ञान गंगा बहे।
ज्ञान पाया नहीं हमने जब तक विशद,
चरणों में माथा गुरु के झुका यह रहे।।64।।

चाहते अब नहीं लोग हैं धर्म को,
आज करने लगे हैं असत् कर्म को।
व्यसन करने लगे हैं अब मानव विशद,
छोड़कर सारी मर्यादा अरु शर्म को।।65।।

दुःखी दिखता नहीं कोई स्वयं से यहाँ,
दुःख मनाते पड़ोसी के सुख में यहाँ।
फोड़ लेते हैं आँखें स्वयं की विशद,
कितनी ईर्ष्या करे आज सारा जहाँ।।66।।

रात दिन कटती है उम्र तेरी अरे !
क्यों तू संयम को पाने में देरी करे।
है भरोसा नहीं श्वाँस पर ये विशद,
फिर तू मरने से क्यों आज इतना डरे।।67।।

स्वयं से स्वयं में जो स्वयं खो गये,
कर्म आतम के वह तो सभी धो गये।
दौड़कर के सहारा जगत् के विशद,
बेसहारा स्वयं के विशद हो गये।।68।।

दूध को छोड़कर जाम पीने लगे,
नाम के ही सहारे अब जीने लगे।
कितनी कर ली तरक्की मानव ने विशद,
जिंदा मानव को भी आज सीने लगे।।69।।

लड़ रहे लोग अब धर्म के नाम पर,
आत्म पर नहीं विश्वास है चाम पर।
धन को ही मान बैठे हैं सब कुछ विशद,
नहीं विश्वास है अब उन्हें राम पर।।70।

कौन से कर्म हमने पूरब में किए,
कष्ट हमने क्या औरों को थे दिए।
मिलकर आये सभी आज हैं वह विशद,
बदला हमसे यहाँ लेने के लिए।।71।।

देखने को विनय आज दिखती नहीं,
भक्ति मानव की अब खो गई है कहीं।
कामिनी कुर्सी कंचन के जो दास हैं,
देखते हैं जहाँ दौड़ जाते वहीं।।72।।

मोह शत्रु का करते जो संहार हैं,
ज्ञान संयम का करते जो विस्तार हैं।
बढ़ रहे मोक्ष मारग पर जो विशद,
साधुओं को नमन् मेरा शत् बार है।।73।।

प्रभु अर्हत् हुए शांतिनाथ हैं,
कामदेव चक्री दोनों हुए साथ हैं।
ज्ञान पाकर विशद मोक्ष पाए हैं जो,
उनके चरणों में हम जोड़ते हाथ हैं।।74।।

देव आगम गुरु को ना पहिचानते,
जैन आगम को पढ़ना नहीं जानते।
फिल्मी गानों में उनका लगा आज मन,
पुण्य के फल को भी वह नहीं मानते।।75।।

मात्र फैशन बनी मानव की शान है,
दौलत का हृदय में उनके सम्मान है।
सागर के जल में जितनी हैं बूँदें विशद,
उससे ज्यादा कहीं उनके अरमान हैं।।76।।

फिक्र करके तू शक्ति क्यों खो रहा,
पाप का बीज तू क्यों स्वयं बो रहा।
लाख चिंतन करो लाभ कुछ हो नहीं,
जो कुछ होना है तो बस वही हो रहा।।77।।

पुण्य करते हैं जो चैन वह पायेंगे,
करने को पूजन जो मंदिर में आयेंगे।
खोटे परिणाम जिनके जहाँ में विशद,
पाप करते हैं जो नर्क वह जायेंगे।।78।।

एक अंगुल जगह में छियानवे रोग हैं,
मौत आने पर मरते सभी लोग हैं।
भोगता तू नहीं भोगों को ये विशद,
भोगते जा रहे तुझको भोग हैं।।79।।

अस्त्र परमाणु का बन गया आज है,
मगर जाना नहीं शक्ति का राज है।
शक्ति भी नष्ट हो जायेगी एक दिन,
शक्ति तो विजयश्री का शुभ ताज है।।80।।

गर्व तुम कर रहे अपनी जिस शक्ति पर,
नष्ट होगा उसी से तुम्हारा बसर।
भाई पाओ सदा ज्ञान का योग तुम,
अमृत भी फिर बनेगा तुम्हारा जहर।।81।।

इस जहाँ में अनादि से भटके फिरे,
मोह ममता के घेरे में थे हम घिरे।
पार चाहा सदा हमने संसार से,
तिर गये हैं अनेकों पर हम न तिरे।।82।।

पेड़ से न गिरा कौन वह फूल है,
अर्थ तो व्यर्थ ही कर्म का मूल है।
चैन किसको मिला अर्थ की चाह में,
श्वाँस के रुकते ही हाथ में धूल है।।83।।

दर्श करने में करते हैं आलस यहाँ,
खाने की बाँधे रहते हैं हरदम समां।
बड़ा धिक्कार मय जीवन उनका विशद,
मोह की बात हो जायेंगे वह वहाँ।।84।।

पूर्ण हो जायेगी आपकी क्या कभी,
भावनाएँ बनी हैं जो मन में सभी।
नहीं मर के कहीं विशद संसार में,
चेत जाओ तुम चेतन यहाँ पर अभी।।85।।

सिर पे मानव के आकर खड़ा काल है,
मौत का आज फैला विशद जाल है।
मौत की कर रहे हैं व्यवस्था सभी,
आज दुनियाँ का दिखता विकट हाल है।।86।।

गिर रहा आज मानव स्वयं आप से,
भर गया पैर से सिर तक पाप से।
डर रहा है विशद धर्म के नाम से,
तप रहा है सदा वह संताप से।।87।।

राह पर जो बढ़े सत्य राही वही,
एक पग भी बढ़े पर बढ़े वह सही।
कभी मंजिल मिली है क्या उनको विशद,
राह पर जो कभी आप बढ़ता नहीं।।88।।

लक्ष्य पा जो बढ़े उन्हें ठोकर मिली,
ठोकरें खाने पर जीवन बगिया खिली।
कष्टों की नहीं परवाह की है विशद,
ज्ञान की ज्योति उनके हृदय में जली।।89।।

धर्म आवश्यक है आज संसार में,
धरा दबती गई पाप के भार में।
श्रद्धा नष्ट हो गई मानव की विशद,
मानव का विश्वास है आज संहार में।।90।।

पुरुषार्थ आज का भाग्य बनता है कल,
धर्म से होता है कर्म का नाश मल।
धर्म पाया नहीं यदि जीवन में विशद,
दुर्गति में ये जाये तेरा जीवन बदल।।91।।

कौन है लोक में दूध का जो धुला,
किसको संसार में सत्य साथी मिला।
जिसने पायी विशद वीतरागी शरण,
मोक्ष का मार्ग जीवन में उनका खुला।।92।।

बैर प्रीति के कारण शब्द ही मूल हैं,
कभी मानव के मुख से झरें फूल हैं।
वही मानव कभी बोलते हैं विशद,
शब्द उनके चुभे ज्यों चुभें शूल हैं।।93।।

मानव तन तेरा यह एक उपहार है,
धर्म से अधिक धन से जिन्हें प्यार है।
समय पाकर धरम से रहें दूर जो,
उनके जीवन को बार-बार धिक्कार है।।94।।

प्राणों का घात करते बहुत लोग हैं,
श्वाँस चलने तक इस तन का संयोग है।
आज तक न मिला इस जहाँ मैं विशद,
मुर्दे में प्राण भरने के कई योग हैं।।95।।

नहीं कोई है अच्छा-बुरा लोक में,
देख पर को सभी डूबते शोक में।
डूबे आकण्ठ हैं मोह अंधकार में,
नहीं देखा विशद ज्ञान आलोक में।।96।।

ज्ञान पाओ विशद फिर चमन ही चमन,
मोक्ष मारग पर होगा फिर सीधा गमन।
चाह करते फिरेंगे सभी लोक में,
छूने को आपके शुभम् है द्वय चरण।।97।।

लोग विपरीत जो हुए श्रद्धान से,
आज वंचित हुए संत सम्मान से।
राह पर उन्हें लाना विशद प्यार से,
जीत सकते नहीं उन्हें अपमान से।।98।।

ज्ञान के हैं जहाँ में समुन्दर गुरु,
श्रद्धा से होगा मानव का जीवन शुरू।
रहे मेरी शुभम् भावना ये विशद,
नित्य प्रति भक्ति गुरुवर की मैं करूँ।।99।।

मैटने हेतु रोगों के खाई दवा,
नित्य घूमे सुबह शीतल पाई हवा।
रोग मिट न सके जन्म मृत्यु जरा,
व्यर्थ ही कई जीवन दिए यूँ गवाँ।।100।।

स्वयं को जान ले वह सद्ज्ञान है,
ज्ञान होने पर हो निज का भान है।
जान पाये नहीं स्वयं को जो विशद,
ज्ञान उसको नहीं वह तो अज्ञान है।।101।।

खोदने पर निकलता है जल कूप में,
सूखता नहीं जल कूप का धूप में।
है ये शिक्षा परम जीवन में विशद,
धर्म से चैन आये स्रोत के रूप में।।102।।

वीतरागी है जो सत्य वह संत हैं,
अष्टादश दोष से रहित भगवंत हैं।
पूर्ण ज्ञानी नहीं कोई संसार में,
विशद ज्ञानी यदि हैं तो अरहंत हैं।।103।।

विश्व है यह टिका आज विश्वास पर,
उड़ान भरता है इन्सान आकाश पर।
खतरा सिर पर खड़ा दिखता है ये विशद,
कैसे कर पायें विश्वास हम श्वाँस पर।।104।।

ठोकरें खाईं कई लोक में घूमकर,
रह गये लेकिन हम स्वयं को चूमकर।
मोह मदिरा ने इतना बढ़ाया नशा,
उठते गिरते रहे आज तक झूमकर।।105।।

शीश अपना झुकाते हम उनके चरण,
सकल संयम को जिसने किया है वरण।
कर्म नाशे जिन्होंने विशद ज्ञान से,
इस जहाँ में कहाते जो तारण तरण।।106।।

काया के चक्र को छोड़ देना सभी,
माया के चक्र को मोड़ देना अभी।
माया को छोड़ना होगा तुमको विशद,
मुक्ति पा सकते हो इस जहाँ से तभी।।107।।

देख लो सिर झुकाकर स्वयं के हृदय,
जान लोगे किया कितना जीवन ये क्षय।
खो दिया है समय व्यर्थ अपना विशद,
नहीं पाई कभी चेतना ने विजय।।108।।

जन्म मृत्यु जरा जीवन के खेल हैं,
जिसे कहते मकां वह तो जेल है।
फँस गया चक्र में मोह के जो विशद,
मुक्ति पथ से हुआ वह तो फैल है।।109।।

लोग करते हैं गणना यहाँ नोट की,
योग्यता से अधिक चाह है वोट की।
फूट सकती नहीं शिला मिथ्यात्व की,
है जरुरत उसे श्रद्धा के चोट की।।110।।

वीर चरणों में करता जो अनुराग है,
उस मानव का सदा होता सत् भाग है।
सुख का सागर लहराये जीवन में विशद,
खिले जीवन का उसके शुभम् बाग है।।111।।

धन को पाकर हुआ किसका जीवन चमन,
संग लेकर हुआ किसका मुक्ति गमन।
छूट जायेगा सब कुछ यहीं पर विशद,
जानकर भी लगी क्यों है उसमें लगन।।112।।

धरा रोती फिरे विहंसे आकाश है,
प्रकृति में भी अंतर हुआ खास है।
बढ़ते पापों का परिणाम है ये विशद,
सभ्यता में भी देखो हुआ ह्रास है।।113।।

जन्म जिसने दिया करते फरियाद हैं,
उनका उपकार किसको रहा याद है।
कैसे शांति मिले इस हालात में,
माँ का रोता जहाँ में आह्लाद है।।114।।

खोजते हम रहे चमन वीरान में,
फूल की खोज की हमने श्मशान में।
कभी पाया नहीं प्यार इस लोक में,
छुपा बैठा मगर तेरी मुस्कान में।।115।।

आत्म ज्योति कभी न जलाई गई,
शांति भी तेरे दिल में न आई सही।
रही बेचैनियाँ मम् हृदय में विशद,
क्योंकि समता हृदय में न पाई गई।।116।।

आस पूरण हुई न कभी अर्थ में,
बीता जीवन तुम्हारा यूँ व्यर्थ में।
लोक का द्रव्य भी कम पढ़ेगा विशद,
भरने हेतु तेरे आस के गर्त में।।117।।

स्वार्थ से भर चुका आज इन्सान है,
छुप के बैठा हुआ अन्दर शैतान है।
कितनी बदली है करतूत इन्सान की,
बना फिरता स्वयं आज भगवान है।।118।।

स्वार्थ सिद्धी के हेतु ही दर्शन किया,
तन, मन, धन का सदा ही वर्णन किया।
किया सब कुछ है इस जीवन में विशद,
आज तक न कभी आत्म दर्शन किया।।119।।

मूक रहकर भी मूर्ति करे ये कथन,
आत्म हित हेतु करना तू चिंतन मनन।
पा गये लोग यदि ज्ञान चारित्र का,
फिर तो जीवन में होगा चमन ही चमन।।120।।

मूक होकर भी मूर्ति का उपदेश है,
वीतरागी स्वयं तेरा भी भेष है।
त्यागकर राग तुम देख लो ये विशद,
त्याग सब कुछ दिया क्या रहा शेष है।।121।।

मूर्ति की वंदना जो भी मानव करे,
पुण्य से कोष अपना वह मानव भरे।
दूर रहता है जो दर्शन से विशद,
सुख व शान्ति से रहता सदा वह परे।।122।।

छुप गया चाँद है आज आकाश में,
फिर रहे हैं सभी चैन की आस में।
बस गई मूर्ति नयनों में मेरे विशद,
नाम आता मेरी हर इक श्वाँस में।।123।।

राम को खोजने हम कहाँ जायेंगे,
बिन ठिकाने के उनको कहाँ पायेंगे।
करो भक्ति तुम शबरी के जैसी विशद,
राम द्वारे स्वयं ही चले आयेंगे।।124।।

राम भी आज है रावण भी हैं यहाँ,
सीता के जैसी सतियाँ हैं कई एक महा।
फेर दृष्टि में आया विशद आज है,
जहाँ देखों तो कलयुग ही दिखता वहाँ।।125।।

करना पाखंड का अब हमें नाश है,
ज्ञान दीपक जलेगा यह विश्वास है।
मोक्ष मंजिल की हमको लगी है लगन,
बढ़ते जायेंगे जब तक चले श्वाँस है।।126।।

सबसे पहले प्रभु जी की जय बोलिए,
जय ध्वनि से ही अपना ये मुँह खोलिए।
आ गये हम सभी आज सत्संग में,
हर विकल्पों से हम भी खाली हो लिए।।127।।

पहुँच पाता नहीं है जहाँ पर रवि,
कल्पना करके जाता वहाँ पर कवि।
जा सकेंगे नहीं मोक्ष यह सब विशद,
निर्विकारी दिगम्बर हो पहुँचे तभी।।128।।

मृदु वाणी आलौकिक है जिनराज की,
सत्य तारण तरण शुभम् वह आज की।
नहीं जिनवर यहाँ हैं तो क्या गम हमें,
वाणी देती है सद्ज्ञान मुनिराज की।।129।।

रूप सुन्दर जहाँ में जो सत् संत हैं,
नहीं उनकी सुनाते जो भगवंत हैं।
मुक्ति रानी के बनने चले कंत हैं,
उनके चरणों में वंदन मेरा ऽनंत है।।130।।

सबसे पहले प्रभु (गुरु) को नमन् कीजिये,
ध्यान चरणों में अपना लगा दीजिये।
होगा जीवन चमन ये तुम्हारा विशद,
नीर चरणों का माथे लगा लीजिये।।131।।

वृक्ष में वृक्षता का गुण पाया गया,
बीज में अंकुरण फिर से आया नया।
वृक्ष से जीवन चलता तुम्हारा विशद,
भर गई वृक्ष में इस जहाँ की दया।।132।।

फूले फिरते हो क्यों नाम की ऐंठ में,
डरते हो क्यों स्वयं मित्र से भेंट में।
देखते क्यों फुली और की आँख में,
झाँककर देख लो स्वयं के टेंट में।।133।।

देखने को नहीं आज समता मिले,
ज्ञान के दीप कैसे हृदय में जले।
समता को पाया था पारस ने विशद,
पत्थर भी बरसे थे पर नहीं वह हिले।।134।।

वाणी भाती नहीं अब हमें वीर की,
चाह भी न रही है महावीर की।
बन गये हैं दीवाने मदिरा के यहाँ,
नहीं इज्जत रही है यहाँ क्षीर की।।135।।

उड़ रहे आज मानव भी आकाश में,
हर कदम उठ रहा शांति की आस में।
है तरक्की यह मानव की अपनी विशद,
खतरा दिखता है उसको हरेक श्वाँस में।।136।।

शिला पाषाण पर कमल खिलता नहीं,
घोर तूफान में मेरु हिलता नहीं।
लाख पोथी उठा पढ़ डालो ये विशद,
बिना गुरु के कभी ज्ञान मिलता नहीं।।137।।

कर्म जैसा भी मानव यहाँ पर करे,
उसका फल वह स्वयं अपने हाथों भरे।
जैसा करता है जो फल भी वैसा मिले,
सत् नियम को क्यों भूला तू मानव अरे !।।138।।

लोग होते जिन्हें देखकर के मगन,
करते हैं जो सदा गगन में ही गमन।
वीतरागी हैं जिन वह हमारे विशद,
उनके चरणों में करते हैं शत्-शत् नमन्॥139॥

कौन शब्दों में इनका अभिनन्दन करें,
जिनके चरणों में गणधर भी क्रन्दन करें।
वीतरागी प्रभु तारण हारे 'विशद',
उनके चरणों में हम शत् शत् वंदन करें॥140॥

गुरु चरणों को हमने वरण कर लिया,
उनके जैसा स्वयं आचरण कर लिया।
बड़ी मोहक है मुद्रा गुरुदेव की,
मन को मेरे गुरु ने हरण कर लिया॥141॥

घोर उपसर्ग करता रहा था कमठ,
जान पाया नहीं प्रभु भक्ति को शठ।
'विशद' शक्ति के धारी थे पारस प्रभु,
छोड़ना ही पड़ी काल को अपनी हठ॥142॥

मोक्ष मारग मिला लेकिन बढ़ न सके,
कर्म शत्रु से हम कभी लड़ न सके।
ज्ञान कैसे मिले आत्म परमात्म का,
जैन आगम उठाकर के पढ़ न सके॥143॥

ज्ञान के तुम हिमालय हो जग में महाँ,
तव वचन सरिता के जल को खोजें कहाँ।
पीकर पीयूष मिटता है क्लेश सब,
भाव रहने का है रहते गुरुवर जहाँ॥144॥

साथी होकर भी साथ निभाया नहीं,
आप बैठे यहाँ पर वो पहुँचे कहीं।
साथी होते वही साथ जीवन रहें,
साथी के साथ ही जाते साथी वहीं॥145॥

उठ गया धर्म शायद इस संसार से,
दब गया मानव अब कर्म के भार से।
पार करने चला पार सागर 'विशद'
मानव अब देखो कागज की पतवार से॥146॥

आते जाते जहाँ में बहुत लोग हैं,
धर्म का पाते कुछ ही संयोग हैं।
कैसे पायेंगे शांति जीवन में 'विशद',
लगा रहता महामोह का रोग है॥147॥

संत का हाथ हरदम ही ऊपर रहे,
उनके द्वारा सदा धर्म सरिता बहे।
संत का हाथ नीचे जब होता विशद,
वेदना उस समय की वह किससे कहे॥148॥

कर्म जो भी करो व्यर्थ जाते नहीं,
कर्म के फल को दूजे कोई पाते नहीं।
कर्म होते बड़े स्वाभिमानी विशद,
बिन बुलाए कभी पास आते नहीं॥149॥

स्वप्न कई इक सजाए थे आकर महाँ,
हाथ आई निराशा जब देखा यहाँ।
शायद हो पूर्ण कोई तरीका मिले,
आज है तेरी भक्ति की इम्तहाँ॥150॥

देव आते नहीं आज इस काल में,
मोक्ष जाते नहीं जीव अब हाल में।
छूट पाएँ हम कर्मों से कैसे विशद,
फँसा फिरता ये मानव मोह जंजाल में।।151।।

शीश अपना झुकाते हैं उनके चरण,
सकल संयम को जिसने किया है वरण।
कर्म नाशे जिन्होंने विशद ज्ञान से,
इस जहाँ में कहाते वह तारण तरण।।152।।

मोह के चक्र में घूमते हम रहे,
शूलों को हृदय से चूमते हम रहे।
संत भगवन्त को भी ना जाना कभी,
मोह मदिरा को पी झूमते हम रहे।।153।।

मूल गुण और कर्त्तव्य कितने रहे,
ना पता उनको अरहंत कितने कहे।
रात में होटल जाकर भी खाने लगे,
रूढ़ि वश शायद जैनी कहाने लगे।।154।।

अपने ही अपनों को अब गिराने लगे,
धर्म और त्याग से भी डराने लगे।
क्या हुआ आज लोगों के मन को विशद,
अपने ही अपनों को अब जलाने लगे।।155।।

मोह के वश में होकर सभी घूमते,
राग अरु द्वेष की मद्य पी झूमते।
भव भ्रमण कर रहे जन्मों से 'विशद'
कर्म शत्रु रहे सदा से घूमते।।156।।

विशद सिद्धान्त को भूले जैनी सभी,
धर्म स्थल भी जाकर ना देखे कभी।
आँसू उनकी क्रिया पर बहाने लगे,
जैन कहते किसे नहीं जाना अभी।।157।।

भोगों में लीन होकर रहे हम सदा,
योग को हम नहीं पा सके हैं कदा।
धर्म की राह पर हम बढ़ेंगे 'विशद',
शांति का सूत्र हमको मिलेगा सदा।।158।।

धर्म करना नहीं जानते हैं सभी,
वीर होते नहीं पुत्र सबके कभी।
धर्म के सूत्र देते हैं संतान को,
वीर बनती है सन्तान उनकी तभी।।159।।

आप चरणों तले आचरण है मिला,
आपके ही चरण में ये जीवन पला।
चरणों में है विनय आप दो आचरण,
विशद सिन्धु करे पद में शिरसा नमन्।।160।।

जिन अजितनाथ जी वीतरागी परम,
मार्ग दर्शक बने देते सबको धरम।
जीते कर्म सभी दे दो हमको शरण,
श्रद्धा भक्ति से करते हैं पद में नमन्।।161।।

फूल श्रद्धा का जिनके हृदय में खिला,
मोक्ष का मार्ग तो सही उनको मिला।
वीतरागी हुए जो स्वयं ही 'विशद'
ज्ञान का दीप जिनके हृदय में जला।।162।।

स्वप्न में हम सभी व्याकुल हो रहे,
आप को भूलकर नींद में सो रहे।
स्वप्न में जिन्दगी खो रहे व्यर्थ ही,
कर्म का बीज हम तो स्वयं बो रहे।।163।।

कर्म का बोझ जग में सभी ढ़ो रहे,
जिन्दगी को भी पाकर के यूँ खो रहे।
स्वप्न है यह तुम्हारा सभी तन वदन,
मोह की नींद में क्यों 'विशद' सो रहे।।164।।

शांति जिससे मिले धर्म वह फूल है,
धर्म से जिन्दगी का मिले कूल है।
धर्म से ही बने जिन्दगी ये 'विशद'
धर्म तो अपने जीवन का शुभ मूल है।।165।।

धर्म को भूलकर कर रहे पाप हैं,
भोगों में लीन होकर रहे आप हैं।
धन को माता-पिता देव मानें विशद,
धन का ही लोग अब कर रहे जाप हैं।।166।।

कर्म जैसा करो फल भी वैसा मिले,
धर्म से जिन्दगी में सुमन शुभ खिले।
हम करें वह जो हमने किया न कभी,
ज्ञान से विशद ज्ञान की ज्योति जले।।167।।

ज्ञान का दीप जिनकी शिखा से जला,
आचरण का सुमन जिनके द्वारा खिला।
विराग सागर गुरु को मैं करता नमन्,
जिनकी छाँव तले मेरा जीवन पला।।168।।

ज्ञान सम्यक् नहीं पा सके हम कभी,
ज्ञान बिन हम भटकते रहे हैं सभी।
हो समर्पण वचन काय मन से विशद,
ज्ञान को हम सभी पा सकेंगे तभी।।169।।

मंदिर कितने बनाए हैं हमने सदा,
मन ये मंदिर नहीं बन सका है कदा।
हृदय मंदिर बनेगा 'विशद' जब तेरा,
दर्श होगा प्रभु का स्वयं को तदा।।170।।

व्यर्थ बीता है इतना समय इस तरह,
भूल करके स्वयं को हुआ यूँ विरह।
छूट जाए हमारा ये जग का भ्रमण,
बन सकें हम भी जैसे बने जिन अरह।।171।।

लोग पशुओं को भी बेचकर आयेंगे,
वृद्ध कहकर के वे उनको कटवायेंगे।
नष्ट होंगे पशु लोलुपी माँस के,
काटकर पिता माता को खा जायेंगे।।172।।

विमल सिंधु की महिमा कहाँ तक कहें,
धर्म की गंगा ऐसी हमेशा बहे।
बह रहें चाहे ना इस भरत भूमि पर,
उनके चरणों में माथे झुके यूँ रहें।।173।।

झंझटें कितनी बढ़ गई हैं लोक में,
डूबते दिख रहे लोग हैं शोक में।
कैसे हो धर्म उद्धार अब ये विशद,
व्याधियाँ जब पले धर्म की कोख में।।174।।

रूप सुन्दर सलौना है जिनदेव का,
अवसर हमको मिला उनकी पद सेव का।
करते वन्दन 'विशद' हम त्रियोग से,
अब श्री विराग सिन्धु जी गुरुदेव का।।175।।

पूजन करना कराना सरल है बड़ा,
पूजन करने को यह लोक सारा खड़ा।
पूजन करते हुए पूजन होती नहीं,
मोह का भूत जिनके भी सिर पर चढ़ा।।176।।

जन्म पाते अनेकों इस संसार में,
दबे रहते हैं वह कर्म के भार में।
जन्म पाया ऋषभनाथ के सम विशद,
अपना जीवन बिताये परोपकार में।।177।।

छूट पाते नहीं लोग संसार से,
दबे रहते हैं वह कर्म के भार से।
धर्म से सुधर जाता है जीवन विशद,
बने आदर्श नर धर्म के प्यार से।।178।।

करने अभिषेक लेकर चले बाल को,
सहस नेत्रों से इन्द्र देखे लाल को।
जन्म अंतिम ये पाया प्रभु ने विशद,
छोड़कर चल दिए कर्म के जाल को।।179।।

भक्त होकर भी भक्ति नहीं जानते,
भक्त होकर प्रभु को नहीं मानते।
कहते भगवान हैं जो स्वयं को विशद,
अतः भगवान को भी न पहिचानते।।180।।

ज्ञान चरित्र को हम नहीं पा सके,
हम स्वयं में स्वयं ही नहीं आ सके।
गीत गाते रहे इस जहाँ में विशद,
हम स्वयं का कभी गीत नहीं गा सके।।181।।

हम कहाँ थे कहाँ से कहाँ आ गये,
हम विषय भोगों को नित ही माने नये।
हमने अब तक किया क्या जीवन में विशद,
हमने पर के कारण से बहुत दुःख सहे।।182।।

द्रव्य है कौन सा जो हमें न मिला,
सब कुछ पाकर भी न मेरा जीवन खिला।
पर का उपकार करते रहे हम विशद,
एक कदम भी नहीं मोक्ष मारग पर चला।।183।।

सत्य संयम को पाना मेरा फर्ज है,
बिना संयम के होता बड़ा हर्ज है।
विषय भोगों से तुम सदा डरना विशद,
विषय ही लोक में एक बड़ा मर्ज है।।184।।

ज्ञान ही लोक में धर्म का मूल है,
आचरण से मिले लोक का कूल है।
ज्ञान चरित्र को नहीं पाया विशद,
जिन्दगी की ये सबसे बड़ी भूल है।।185।।

शीश अपना झुकाते हैं उनके चरण,
सकल संयम को जिसने किया है वरण।
कर्म नाशे जिन्होंने विशद ज्ञान से,
इस जहाँ में कहलाते वह तारण तरण।।186।।

जिनको पाने में हमको जमाने लगे,
जिन धरम को भी जैनी भुलाने लगे।
जैन कुल में हमें जन्म कैसे मिला,
पुण्य के फल को भी हम मिटाने लगे।।187।।

श्रद्धा हमें दिल से जगाना चाहिए,
प्रभु को हृदय में बसाना चाहिए।
दुनियां में हमसे कोई कुछ भी कहें,
उनको कभी न भुलाना चाहिये।।188।।

देव तो सुदेव है जो ध्याना चाहिए,
भक्ति से गुण उनके गाना चाहिए।
भक्ति का फल यदि पाना है तुम्हें,
तो प्रभु गुण पे ध्यान जाना चाहिए।।189।।

मोक्ष मार्ग पर बढ़े जिनके चरण,
मुक्ति रमा को जिसने किया है वरण।
मुक्ति पद को यदि पाना है तुम्हें,
तो मोक्ष मार्ग को विशद कर लो ग्रहण।।190।।

प्रभु के चरण में जाना चाहिए,
भाग्य के सितारें जगाना चाहिए।
सम्यक् ज्ञान गर विशद पाना है तुम्हें,
तो भक्ति सहित सर ये झुकाना चाहिए।।191।।

जिन्दगी सजाने वाले प्रभु हैं महान्,
प्रभु की कृपा से सारा खड़ा ये जहान।
लघु से प्रभु यदि बनना हैं तुम्हें,
तो प्रभुता हृदय में बसाओ अब आन।।192।।

अपने अपनों को ही यहाँ छलने लगे,
देखकर भाई को भाई जलने लगे।
कैसे जीवन सुखी हो हमारा विशद,
आस्तीन में यहाँ साँप पलने लगे।।193।।

विमलसागर गुरु ने मरण कर लिया,
शुभ समाधि को उनने वरण कर लिया।
ज्ञान पाया उन्होंने विशद आचरण,
उनके चरणों में हो मेरा शत् शत् नमन्।।194।।

क्षमा होती है क्या जान पाये नहीं,
क्षमा के भाव अन्तर में छाये नहीं।
क्षमा करना कराना कठिन है 'विशद',
क्षमा के भाव मन में तुम लाये नहीं।।195।।

विराग से विराग पा विराग सिन्धू बने,
संत तारागणों में जो इन्दू बने।
कर्म करते हैं गुरुवर हमारे शमन,
उनके चरणों में हो विशद शिरसा नमन्।।196।।

वीर ने शांति से शांति को वर लिया,
जिन्दगी को स्वयं ही अमर कर लिया।
ज्ञान पाकर विशद बन गये वीर जिन,
आपके द्वय चरण में विशद है नमन्।।197।।

पर्व शुभ पर्यूषण चल रहा है अभी,
होके प्रमुदित करें यहाँ भक्ति सभी।
पर्व करते हमारे वसु कर्म दहन,
पर्व पावन को हम करते शिरसा नमन्।।198।।

मानव मानव नहीं रह गया आज है,
मानव को मानव पर तो बड़ा नाज है।
मानव को जानना है तुम्हें ये विशद,
मानव बनना शुभम् जीवन का राज है।।199।।

कर्म से कर्म का बंध होता अरे !
कर्म से कर्म करके रावणादि मरे।
कर्म की होती लीला बड़ी ही विकट,
कर्म से कर्म का बंध मानव करे।।200।।

विमल से विमल हो विमलता पा गये,
विमल गुण से विमल लोक में छा गये।
विमल सागर मेरे हैं गुरुणां गुरु,
उनके चरणों को पा किया जीवन शुरू।।201।।

श्रद्धा जागृत करो बस यही सार है,
बिना श्रद्धा के यह जीवन बेकार है।
श्रद्धा जागृत नहीं हुई अब तक हृदय,
विशद श्रद्धा मोक्ष मारग का द्वार है।।202।।

शूल बोकर के हम चाहते फूल हैं,
फूल पाना ही सबसे बड़ी भूल है।
फूल पाते नहीं इस जहाँ में विशद,
रागियों को मिले धूल ही धूल है।।203।।

ज्ञान दर्शन जगाले हृदय में अरे !,
देव आगम गुरु पर भी श्रद्धा करे।
जीवन होता है उनका चमन ये विशद,
वह यहीं जन्म लेकर स्वयं क्यों मरे।।204।।

तू स्वयं को स्वयं से स्वयं जान लें,
तू स्वयं से स्वयं को स्वयं मान ले।
तू स्वयं ही स्वयं का है कर्त्ता स्वयं,
अब स्वयं ही स्वयं से स्वयं ज्ञान ले।।205।।

अब हमें आप से आपको जानना,
आप ही आपकी बात को मानना।
आपको आप ही जान पाये नहीं,
आपको आप से ही अब पहिचानना।।206।।

आदमी आदमी के लिये भार है,
आदमी को नहीं अब रहा प्यार है।
आदमी जान लें आदमी को विशद,
आदमी को मिले आदमी से सार है।।207।।

कर्म शत्रु किसी को नहीं छोड़ता,
ज्ञानी मारग से मुख को नहीं मोड़ता।
कर्म के वश है सारा जहाँ ये विशद,
फिर रहा चउ गति दौड़ता दौड़ता।।208।।

क्षमा से हृदय में क्षमा को वर लिया,
क्षमा से हृदय को भी वरण कर लिया।
सबको करके क्षमा करता हूँ मैं वरण,
क्षमा से विशद हो मम् समाधि मरण।।209।।

क्षमा से वीर जिन क्षमा को पा गये,
समय से समय में स्वयं ही छा गये।
सिर झुकाकर के चाहूँ क्षमा गुरु चरण,
वीर कर दो क्षमा विशद करता नमन्।।210।।

चल दिये छोड़कर सभी घर बार को,
सभी माता-पिता राज्य के भार को।
लगन उनकी लगी है विशद ज्ञान में,
छोड़कर चल दिये सारे संसार को ।।211 ।।

चल पड़े पार्श्व जिन यह जग छोड़कर,
इस जमाने से भी प्रीति तोड़कर।
स्वार्थ का है ये सारा जमाना विशद,
जाना है इससे अपना मुख मोड़कर ।।212 ।।

धर्म से लोग अब कितने डरने लगे,
धर्म को छोड़कर पाप करने लगे।
कैसे हो शांति विशद इस संसार में,
प्राण पशुओं के माँस हेतु हरने लगे ।।213 ।।

ज्ञान को प्राप्त करने यहाँ आ गये,
सूत्र पायेंगे हम कुछ यहाँ पर नये।
ज्ञान सम्यक् नहीं पाया है आज तक,
प्रभु के चरण में आज हम आ गये ।।214 ।।

लोग कितने हुये आज वे दर्द हैं,
धर्म को छोड़ बैठे बने मर्द हैं।
मानव होते वहीं वास्तव में विशद,
जिनके होते स्वयं इरादे सर्द हैं ।।215 ।।

मोक्ष मार्गी है वह सदा बढ़ते रहें,
मोक्ष मंजिल पे जो सदा चढ़ते रहें।
वीर होते हैं वह लोक में ये विशद,
कर्म से जो निरन्तर ही लड़ते रहें ।।216 ।।

विशद मुक्तावली

दीप से सूर्य की आरती कर रहे,
हो न त्रुटियाँ कहीं इसलिए डर रहे।
हैं खजाना प्रभु सद्गुणों के 'विशद',
नमन् चरणों में उनके सतत् कर रहे ।।217 ।।

लगी आकाश में अग्नि, सतत् अंगार झरते हैं,
यहाँ इंसान इंसानों का, आके चैन हरते हैं।
जरा तू सोच ले इंसान, तेरी शान की खातिर,
हजारों जीव जगती पर, विशद बेमौत मरते हैं ।।218 ।।

मान सकते नहीं बात को तुम कदा,
करना जिद बन गया है नियम से बात सदा।
बात पूरी नहीं होगी जब तक विशद,
सोच हमने लिया फर्ज करना अदा ।।219 ।।

दूर दर्शन करे दूर हमको अरे !
धर्म से होता मानव बहुत ही परे।
स्वयं हो दूर दर्शन से इन्सान यह,
धर्म से दूर औरों को भी करें ।।220 ।।

पूर्ण अरमान मेरे नहीं हो सके,
चैन से नींद भर हम नहीं सो सके।
गम से गमगीन होकर रहे हम 'विशद',
सदा हँसते रहे हम नहीं रो सके ।।221 ।।

नहीं थी कल्पना जिसकी करिश्मा कर दिखाया है,
हरेक इन्सान या भगवान को भी आजमाया है।
गुरु की ही कृपा का फल यहाँ पर आज बैठे हम,
गुरु के पाक चरणों में अतः ये सर झुकाया है ।।222 ।।

विरागी संत हैं ऐसे दिगम्बर भेष धारा है,
जो भूले मार्ग को राही दिया उनको सहारा है।
झुकाते शीश हे गुरुवर ! विशद आशीष पाने को,
चरण में आपके गुरुवर नमन् शत् शत् हमारा है।।223।।

बहाते ज्ञान की गंगा यहाँ पर आप आये हैं,
मुनि क्षुल्लक व्रती त्यागी सभी को साथ लाए हैं।।
तमन्ना थी बड़ी सबकी गुरु नगरी में आएंगे,
बड़े सौभाग्य हैं हमरे चरण गुरुवर के पाए हैं।।224।।

गुरु को जो नहीं जाने उसे नादान कहते हैं,
गुरु को जो नहीं माने उसे हैवान कहते हैं।
किया उपकार गुरुवर ने उन्हीं के गुण सदा गाए,
उसी इन्सान को बन्धु सही इन्सान कहते हैं।।225।।

करे कर्त्तव्य का पालन वही इन्सान शाही है,
करे चिन्तन निजातम का वही मुक्ति का राही है।
प्रशंसा से कभी भी तुम नहीं संतुष्ट हो जाना,
प्रशंसा चंद क्षण की है विशद बस वाह वाही है।।226।।

करें अर्चा प्रभु की जो बड़ा पुण्यवान होता है,
करे चर्चा जिनागम की वही विद्वान होता है।
परम चारित्र के धारी जहाँ में संत होते हैं,
चले जो मोक्ष मारग पर वही भगवान होता है।।227।।

गुरु भक्ति की गंगा में, सभी मिलकर नहाएँगे,
धर्म का हम सभी मिलकर, यहाँ दरिया बहाएँगे।
सताया कर्म ने हमको, अनादिकाल से बन्धु,
उन्हीं कर्मों की सेना को, यहाँ आकर हटाएँगे।।228।।

हो वर्षायोग गुरुवर का, सभी यह अर्चना करते,
गुरु आशीष दो हमको, चरण में शीश हम धरते।।
हमारी भावनाएँ हैं, समर्पित आपके चरणों,
सुना है आप भक्तों की, हमेशा झोलियाँ भरते।।229।।

किसी की भावना को तुम कभी न ठेस पहुँचाओ,
नहीं लोगों के आग्रह को कभी भी आप ठुकराओ।
समझकर मर्म को भाई धरम की राह पर चलना,
करो कर्त्तव्य अपना तुम विशद जिनधर्म अपनाओ।।230।।

ढ़के जो लाज सतियों की विशद वह चीर कहलाए,
करे रक्षा जो दीनों की जहाँ में वीर कहलाए।
जीतकर और को कोई नहीं महावीर बन पाता,
स्वयं को जीत ले इन्सान वह महावीर कहलाए।।231।।

करे जो धर्म की चर्चा उसे धर्मात्मा जानो,
गुरु भक्ति करें नर जो उसे भी कम नहीं मानो।
देव जिन शास्त्र गुरुवर ही धर्म के आयतन होते,
करे उपकार ये जग का हितैषी आप पहिचानो।।232।।

मेरे गुरुवर यहाँ आके जरा आवाज दे देना,
चलूँ अपने ही कदमों से हुनर वो साथ दे देना।
दिले हसरत यही हरदम तेरा दीदार हो दिल में,
समाधि के समय आकर आशीर्वाद दे देना।।233।।

झरे स्तन से गैया के विशद वह क्षीर कहलाए,
ढके जो लाज सतियों की जहाँ में चीर कहलाए।
विजय करता स्वयं अपनी कषायों इन्द्रिय पर जो,
वही इंसान दुनियाँ में विशद महावीर कहलाएँ।।234।।

रहम करता जो औरों पर विशद इंसान कहलाए,
दिले न प्यार जिसको है वही शैतान कहलाए।
नहीं भगवान बनकर के कोई आता जमीं पर हैं,
करे सत्कर्म दुनियाँ में वही भगवान कहलाएँ।।235।।

विशद आशीष पाने को, शरण में आज आए हैं,
हृदय के पात्र में अपने भाव के पुष्प लाए हैं।
गुरु आशीष दो हमको हाथ अपना उठाकर के,
चरण में आपके अपना कि हम भी सिर झुकाए हैं।।236।।

है साहसवान जो इंसान, वही बलवीर होता है,
समंदर भी तो दुनियां में, बड़ा गंभीर होता है।
जो करता है रहम जग में, सभी जीवों के ऊपर ही,
विशद संसार में इंसान वह महावीर होता है।।237।।

कि नजरों के बदलते ही नजारे भी बदलते हैं,
समन्दर में उठे तूफान फिर भी नाव चलते हैं।
विशद कठिनाई आने पर कभी भी हार न जाना,
रात्रि व्यतीत होते ही पुनः सूरज निकलते हैं।।238।।

पड़ी मझधार में नैया, किनारे पर लगा देना,
हृदय में ज्ञान का दीपक, मेरे गुरुवर जला देना।
भ्रमण कीन्हा है इस जग में, महा मिथ्यात्व में फंसकर,
मेरे गुरुवर मेरे दिल में, विशद श्रद्धा जगा देना।।239।।

वही इंसान हैं शाही जिन्हें श्रद्धान होता है,
उन्हें विद्वान् कहते हैं जिन्हें कुछ ज्ञान होता है।
विशद संयम सुतप करते वही इंसान हे भाई !
चतुष्टय चार पाकर के विशद भगवान होता है।।240।।

मिले आशीष गुरुवर का जिसे वह धन्य हो जाए,
जगे सौभाग्य उसका शुभ हृदय खुशियों से भर जाए।
जमीं पर स्वर्ग मिल जाए, विशद इंसान को भाई,
विशद इंसान भूमि पर, स्वयं भगवान बन जाए।।241।।

गुरु चरणों में आके जो, भक्ति से सिर झुकाएगा,
शरण में भक्ति से आकर, गुरु के गीत गाएगा।
विशद जपता है जो हरदम, गुरु के नाम की माला,
वही आशीष गुरुवर का, यहाँ आकर के पाएगा।।242।।

मुझे अपनी ही राहों पर, मेरे गुरुवर चला देना,
मेरी खोई हुई मंजिल, मेरे गुरुवर दिला देना।
बुझाया ज्ञान का दीपक, मोह मिथ्यात्व ने मेरा,
विशद विज्ञान का दीपक, गुरु मेरा जला देना।।243।।

मुझे जीने को जीवन का, विशद आधार मिल जाए,
मुझे जन्मादि रोगों का, श्रेष्ठ उपचार मिल जाए।
नहीं पाई कभी शायद, गुरु आशीष की छाया,
विशद महकेगा ये जीवन, गुरु का प्यार मिल जाए।।244।।

तड़पते हम रहे भारी, गुरु न और तड़पाओ,
चरण के हम बने सेवक, जरा सा तो रहम खाओ।
तुम्हें जाना है तो जाओ, नहीं हम रोक सकते हैं,
उठाकर हाथ गुरु अपना, विशद (मुझे) आशीष दे जाओ।।245।।

गुरु चरणों विशद हमने, ये अपना माथ रक्खा है,
मुझे गुरुवर ने तब से ही, हमेशा साथ रक्खा है।
मुझे न मौत से डर है, नहीं परवाह किसी की है,
मेरे गुरुवर ने मेरे सिर, विशद जब हाथ रक्खा है।।246।।

नहीं अर्हंत का जग में, पुनः अवतार होता है,
बने त्यागी दिगम्बर जो, विशद अनगार होता है।
संत भगवंत का जिसको, सदा आशीष मिलता है,
उसी बन्दे का जीवन में, विशद उद्धार होता है।।247।।

महाव्रत प्राप्त करता जो, विशद वह संत होता है,
घातिया कर्म नाशे तब, वही अर्हंत होता है।
त्रिलोकीनाथ बन जाएँ विशद वह ज्ञान को पाकर,
रहम करता सदा जग में, वही भगवंत होता है।।248।।

जिन्हें जिनवर की वाणी पर नहीं श्रद्धान होता है,
उन्हें न आत्मा का कुछ जरा भी ध्यान होता है।
भटकते मोह की अंधेरी राह में हरदम,
नहीं उनका कभी जीवन में सम्यक्ज्ञान होता है।।249।।

कोई रो-रोके जीता है, कोई हँसता ही रहता है,
कोई कठिनाई या गम हो, उसे हँसकर के सहता है।
शिकायत जो नहीं करता है अपनों से जमाने में,
घूंट पीता है कडुवे भी, किसी से कुछ न कहता है।।250।।

गुरु दुनियाँ में शिष्यों की, श्रेष्ठ पहिचान होते हैं,
गुरु शिष्यों की इस जग में, निराली शान होते हैं।
गुरु गरिमा को बंधु तुम, कभी भी कम नहीं आँको,
गुरु शिष्यों के इस जग में, स्वयं भगवान होते हैं।।251।।

पूर्व के कर्म का फल सब, अभी पाते जमाने में,
अनागत के लिए रस्ता, बनाते अब जमाने में।
करे जैसा भरे जैसा, यही भगवान कहते हैं,
न जाने क्यों जानकर न सम्हल पाते जमाने में।।252।।

तुझे ससुराल में जाके नये रिश्ते जगाना है,
तुझे ससुराल वालों से सभी रिश्ते निभाना है।
हमारे नाम की अब लाज रखना है तुझे बेटी,
वहाँ पर प्रेम से रहकर स्वर्ग घर को बनाना है।।253।।

मुझे मुक्ति की हे भगवन् !, श्रेष्ठ अब राह मिल जाए,
पड़ा वीरान उपवन है, जिन्दगी का भी खिल जाए।
नहीं मैं चाहता हूँ हे प्रभु !, संसार की दौलत,
बुझा जो ज्ञान का दीपक, विशद वह दीप जल जाए।।254।।

मुझे संसार की दौलत, मेरे भगवान मिल जाए,
बढ़े कीर्ति उपाधि भी, श्रेष्ठ सम्मान मिल जाए।
लगाऊँ हाथ जिसमें ही, स्वर्ण वह वस्तु हो जावे,
मेरे भगवान मुझे तेरा, ये आशीर्वाद मिल जाए।।255।।

किसी के आँख का आँसू, किसी का चैन खोता है,
उदासी देख चेहरे पर, बड़ा बेचैन होता है।
नजारा क्या है दुनियाँ का, समझ में कुछ नहीं आता,
कोई गमगीन हो गम से, स्वयं इंसान रोता है।।256।।

मेरे भगवन् मुझे बंगला और गाड़ी भी दिला देना,
बड़ी सी रोड़ के ऊपर मुझे फैक्ट्री दिला देना।
मिले आशीष हे भगवन् ! मेरी हो कामना पूरी,
रूप सी श्रेष्ठ कन्या से मेरी शादी करा देना।।257।।

आज मंदिर में महिलाएँ करें, घर-वार की चर्चा,
अभी शादी की बेटे की, किया दस लाख का खर्चा।।
स्वाध्याय जाप पूजा में, नहीं लगता है मन उनका,
न संयम तप सुहाता है, सुहाती है न जिन अर्चा।।258।।

मेरा मेरे ही जीवन पर, विशद अधिकार हो जाए,
मेरे गुरुवर तेरा मुझ पर, जरा उपकार हो जाए।
रहेंगे हम बने सेवक, रहेगी श्वांस जीवन में,
मिले आशीष हे गुरुवर ! मेरा उद्धार हो जाए।।259।।

मुझे अपनी ही शक्ति का, जरा सा ज्ञान हो जाए,
ये चेतन भिन्न है तन से, भेद-विज्ञान हो जाए।
मुझे मुक्ति मिलेगी यह, विशद विश्वास है इतना,
विशद एकाग्र मन होकर, जरा सा ध्यान हो जाए।।260।।

मेरे गुरुवर ! मुझे तेरा जरा आशीष मिल जाए,
तेरा आशीष पाकर के हृदय का नूर खिल जाए।
मेरे गुरुवर मेरे सिर पे ये अपना हाथ रख देना बस,
मेरा बिगड़ा हुआ जीवन पलों में ही सम्हल जाए।।261।।

मुझे अपनी ही कमियों का, जरा सा भान हो जाए,
'विशद' कर्त्तव्य क्या मेरे, जरा सा ज्ञान हो जाए।
मेरी है भावना इतनी, बनूँ इंसान मैं शाही,
मुझे इंसानियत की बस, जरा पहिचान हो जाए।।262।।

हमेशा साथ पाने का, विशद सपना सजाया है,
प्राप्त कर पुत्र पत्नी को, महत उत्सव मनाया है।
हुआ बेचैन मन मेरा, व्यथा किससे कहें अपनी,
उसी ने चैन खोया है, जिसे अपना बनाया है।।263।।

किसे अपना बनाएँ हम, ये तन भी है नहीं अपना,
स्वजन परिजन महल वाहन, सभी हैं मात्र इक सपना।
यदि अपने कोई हैं तो, परम परमात्मा भाई,
रहे श्वांसे ये जीवन की, प्रभु का नाम तू जपना।।264।।

प्रभु की देशना बंधु, हमें जीना सिखाती है,
गमे दिल में कोई आये, हमें पीना सिखाती है।
हुए टुकड़े किसी आघात से, जब बंधु इस दिल के,
शीघ्र टूटे दिलों को भी, विशद जुड़ना सिखाती है।।265।।

भूलकर भी दोष नहीं करना चाहिए,
गल्तियों से हरदम डरना चाहिए।
धोखे से भूल यदि हो जाए विशद,
तो शीघ्र अपने को भी सुधरना चाहिए।।266।।

दर्श हमें गुरुवर के पाना चाहिए,
गीत हमें भक्ति से गाना चाहिए।
उत्साह लोगों का बढ़ाने के लिए,
तालियाँ मिलकर के बजाना चाहिए।।267।।

गुरु महिमा को बढ़ाना चाहिये,
चरणों में अर्घ्य चढ़ाना चाहिये।
ज्ञान यदि पाना है तुमको ऐ विशद,
तो सुबह शाम पढ़ना पढ़ाना चाहिये।।268।।

त्याग के रूप तुम धर्म के रूप तुम,
ज्ञान के हार तुम ध्यान के सार तुम।
हे विरागी गुरो ! दो विरागी नयन,
है नमन् दे शरण दो समाधि मरण।।269।।

निर्विकारी हुए वस्त्र अम्बर किये,
छोड़कर राग को जो दिगम्बर हुये।
वीतरागी गुरो ! दो विरागी नयन,
कोटिशः है नमन् दो चरण की शरण।।270।।

ज्ञान से दूर भागे मानव आज है,
तन पर करता फिरे वह तो नाज है।
हो गया है दीवाना भोगों का विशद,
अपनी आदत से आता नहीं बाज है।।271।।
इस जहाँ में अनादि से भटके फिरे,
मोह ममता के घेरे में थे हम घिरे।
पार चाहा सदा हमने संसार से,
तिर गये हैं अनेकों पर हम न तिरे।।272।।
चरणों में शीश झुकाते जाएँगे,
गीत गुरु के हम गाते जाएँगे।
मिले आशीष गुरु का हमें,
तो ज्ञान का दीप जलाते जाएँगे।।273।।
राहों में फूल बिछाना चाहिए,
बिछे हुए शूल हटाना चाहिए।
भाव सहित गुरु भक्ति करिए विशद,
फर्ज अपना हरदम निभाना चाहिए।।274।।
भक्ति की माला बनाना चाहिए,
श्रद्धा का धागा लगाना चाहिए।
गुरु चरणों में प्रेम से विशद,
दोनों हाथों से चढ़ाना चाहिये।।275।।
भक्ति की कुटिया सजाना चाहिये,
श्रद्धा का चौक पुराना चाहिए।
रामजी को दर पे बुलाना है अगर,
तो शबरी तुम्हें बन जाना चाहिए।।276।।
आस्था की बेड़ियाँ लगाना चाहिये,
संयम की कैद सजाना चाहिये।
प्रभु महावीर द्वारे आएँगे विशद,
चंदना तुम्हें बन जाना चाहिये।।277।।

राह अपनी मिथ्या बदलते जाइये,
मुक्ति के मारग पे चलते जाइये।
सिद्धि यदि पाना है तुमको विशद,
तो संयम के रंग में ढलते जाइये।।278।।
जीवों को राह पर चलाना चाहिये,
रोशनी को दीपक जलाना चाहिये।
मोह नींद में जो सोये हैं यहाँ,
उन्हें खींचकर के जगाना चाहिये।।279।।
जीवों में मैत्री जगाना चाहिये,
गुणियों के गुण हमें गाना चाहिये।
धारो माध्यस्थ इस लोक में विशद,
दुखियों के दुःख मिटाना चाहिये।।280।।
गुरु गरिमा को बढ़ाना चाहिये,
चरणों की धूलि सर चढ़ाना चाहिये।
राह जो दिखाएँ हमें गुरु ऐ विशद !
उसी राह पर चलते जाना चाहिये।।281।।
ज्ञान हमें सम्यक् जगाना चाहिये,
संयम शीघ्र हमें पाना चाहिये।
मोक्ष यदि पाना है तुमको विशद,
तो आतम का ध्यान लगाना चाहिये।।282।।
आतम का ध्यान लगाना चाहिये,
कर्मों की फौज भगाना चाहिये।
सिद्ध श्री पाना है गर तुमको विशद,
तो भेद विज्ञान जगाना चाहिये।।283।।
गुण परमात्मा के गाना चाहिये,
दर्श करने चरणों में जाना चाहिये।
धर्म के हैं आलय परमात्मा विशद,
चरणों में शीश झुकाना चाहिये।।284।।

दीप विशद ज्ञान के जलाना चाहिए,
भावना जिनधर्म की भाना चाहिए।
संयम को पाकर के जीवन में विशद,
मुक्ति मार्ग पर बढ़ते जाना चाहिए।।285।।
गुरुवर की महिमा को गाते जाइये,
चरणों में शीश झुकाते जाइये।
महिमा है गुरुवर की अनुपम विशद,
आशीष गुरुवर का पाते जाइये।।286।।
मुक्ति के मार्ग पर चलते जाएँगे,
तो ज्ञान के दीपक भी जलते जाएँगे।
यदि शक्ति जगाई हृदय में विशद,
तो विघ्न सारे स्वयं ही टलते जाएँगे।।287।।
श्रद्धा के फूल खिलाना चाहिये,
ज्ञान के दीपक जलाना चाहिये।
मुक्ति का मारग है अनुपम विशद,
संयम से जीवन सजाना चाहिये।।288।।
पर्व हमें दिल से मनाना चाहिये,
गुण हमें गुरुवर के गाना चाहिये।
धर्म के हिमालय हैं गुरुवर विशद,
चरणों में माथ झुकाना चाहिये।।289।।
गुण हमें मुनियों के गाना चाहिए,
भक्ति से शीश झुकाना चाहिए।
परमेष्ठी पावन हैं जग में विशद,
श्रद्धा हृदय में जगाना चाहिए।।290।।
स्वर्गों के गीत हम गाते आये हैं,
सुनकर के नाम लुभाते आये हैं।
पुण्य नहीं कीन्हा है हमने विशद,
अतएव ठोकरें हम खाते आए हैं।।291।।

जिन्हें अपना बनाया है उन्हीं की राह पर चलना,
ज्ञान की रोशनी देने, सदा ही दीप सा जलना।
बनाया लक्ष्य जो अपना, उसी का ध्यान रखना है,
गुरु जो राह दिखलाएँ, उसी अनुरूप तुम ढलना।।292।।
चले जो राह पर जिन की, उन्हीं ने लक्ष्य पाया है,
विरागी जो हुए जग से, उन्हें न भोग भाया है।
'विशद' गुरुवर की वाणी सुन, बढ़े जो राह पर अपनी,
लक्ष्य खुद ही स्वयं चलकर, उन्हीं के पास आया है।।293।।
सदा कर्त्तव्य अपना ही, स्वयं हमको निभाना है,
ज्ञान अरु ध्यान में अपना, स्वयं ही मन लगाना है।
यही है सार जीवन का, सदा यह ध्यान रखना है,
विशद चारित्र को पाकर, ज्ञान कैवल्य पाना है।।294।।
करे जो धर्म की चर्चा उसे धर्मात्मा जानो,
गुरु भक्ति करे नर जो उसे तुम भक्त पहिचानो।
देव जिन शास्त्र गुरुवर ही धर्म के आयतन होते,
करें उपकार ये जग का हितैषी आप पहिचानो।।295।।
मेरे गुरुवर यहाँ आकर, हमें जीना सीखा जाओ,
कई जीवन में गम आते, उन्हें पीना सीखा जाओ।
कि हम पाषाण अनगढ़ हैं, निकलकर खान से आए,
चढ़ाकर शान पर गुरुवर, नगीना तुम बना जाओ।।296।।
कोई इंसान राजा है, कोई बनता भिखारी है,
कोई रानी है महलों की, कोई अबला बिचारी है।
नहीं आता समझ में कुछ, कर्म का खेल कैसा है,
रचे नारक पशु सुर नर, तेरी क्या चित्रकारी है।।297।।
इरादे बुझ दिलों के तो सदा ही सर्द होते हैं,
मुसीबत उनसे भय खाती जो सच्चे मर्द होते हैं।
नहीं परवाह करते हैं जो आँधी और तूफां की,
जमाने के हितैषी जो विशद हमदर्द होते हैं।।298।।

जीवों में प्रेम बढ़ाना चाहिए,
हिंसा की वृत्ति घटाना चाहिये।
विश्वशांति यदि लाना है विशद,
तो वीर का संदेश सुनाना चाहिये।।299।।
चंदना पुकारे स्वामी द्वार पे खड़ी,
आइये प्रभु जी उस पे विपदा पड़ी।
बाट जोहती है प्रभु द्वार आएंगे,
कर्मों की आकर के तोड़िए कड़ी।।300।।
अर्चना को प्रभु तेरे द्वार आएँगे,
नाच-गान करके हम गीत गाएँगे।
दूर हमें कितनी भी भेज दीजिए,
द्वार पे तुम्हारे बार-बार आएँगे।।301।।
दर्श करने गुरु के तरसते रहे,
कष्ट पाने गुरु के अनेकों सहे।
दीजिए आप आशीष गुरुवर हमें,
ज्ञान का दरिया हृदय में बहे।।302।।
गुरुवर की भक्ति है जग से भली,
श्रद्धा की खिलती है जिससे कली।
प्राप्त आनंद जीवन का हो उसे,
ज्ञान की ज्योति जिसके हृदय में जली।।303।।
कोई खाने को रोता है, कोई रोता खिलाने को,
कोई रोता स्वयं को है, कोई रोता जमाने को।
लुटाई जिन्दगी अपनी, विशद जिनके लिए तूने,
वही तैयार बैठे हैं, तेरी अर्थी सजाने को।।304।।
किसी की आँख का आँसू, किसी का दिल दुखाता है,
कोई गिरते हुए आँसू, को देखे चैन पाता है।
विशद क्या मोह की महिमा, समझ में कुछ नहीं आती,
यहाँ अपने पराए का भी, नाता टूट जाता है।।305।।

कोई बेटा कोई बेटी, कोई पोते खिलाते हैं,
कोई माता-बहिन भाई, का मुँह न देख पाते हैं।
विशद कई देखते सपने, स्वयं की जिन्दगी पाकर,
कोई जीवन सजाने को, कई रिश्ते मिलाते हैं।।306।।
किसी के हाथ में मोती, किसी का हाथ खाली है,
कोई वीरान में रहता, कोई बगिया का माली है।
करे पुरुषार्थ जो जैसा, उसी का फल उसे मिलता,
कोई रोता है किस्मत पर, विशद कोई भाग्यशाली है।।307।।
हृदय श्रद्धा नहीं जागी, अतः जग में भ्रमाए हैं,
न सम्यक्ज्ञान पाया है, न ही चरित्र पाए हैं।
महा मिथ्यात्व ने अपनी, विशद शक्ति दिखाई है,
अतः जिन देव, गुरु आगम, हमें किंचित् न भाए हैं।।308।।
कोई फूलों की सेजों पर,कोई शूलों पे सोते हैं,
कोई हँसते हैं औरों पर, कोई अपने पे रोते हैं।
सजी रंगीन दुनियाँ के, विशद सपने सजाता क्यों,
स्वप्न तो स्वप्न है भाई, कभी पूरे न होते हैं।।309।।
स्वप्न तूने संजोए जो, क्या पूरे कर सकेगा तू,
ये माना पुण्य के फल से, पेटियाँ भर सकेगा तू।
ये दौलत का सजा उपवन, तेरा साथी बनेगा क्या,
छूटने पर क्या दौलत के, चैन से मर सकेगा तू।।310।।
नहीं तेरा कोई होगा, जिसे अपना बनाया है,
न कुछ भी साथ जायेगा, यहाँ तूने जो पाया है।
विशद क्यों पाप का बोझा, तू अपने शीश धरता है,
धर्म ही साथ जाएगा, नहीं तुझकों जो भाया है।।311।।
किसी के घर लगा मेला, कोई रहता अकेला है,
कोई रहता अंधेरे में, किसी के घर उजेला है।
कहीं खुशियाँ कहीं मातम, कहीं बजते नगाड़े हैं,
कहीं पर जन्म-मृत्यु है, कहीं शादी की बेला है।।312।।

कोई ख्वाबों में जीते हैं, कोई कुछ कर दिखाते हैं,
कोई जीते हैं किस्मत पर, कोई किस्मत बनाते हैं।
करो पुरुषार्थ हे भाई !, इसी से भाग्य बनता है,
पुण्य या पाप के फल से, विशद जीवन सजाते हैं।।313।।
कहीं सागर भरा दिखता, कहीं गागर भी खाली है,
किसी के हाथ में सोना, किसी का नोट जाली है।
कोई रत्नों को छूता है, बने पाषाण हे बन्धु !
रत्न पाषण बनता, विशद जो भाग्यशाली है।।314।।
कोई राजा कोई श्रेष्ठी, कोई दिखता भिखारी है,
कोई मंत्री कोई सेवक, कोई तो चक्रधारी है।
क्या लीला प्रभु तेरी, करिश्मा क्या दिखाता है,
कोई जगपूज्य बनता है, कोई बनता पुजारी है।।315।।
पड़ी मझधार में नैया, निकालो तुम मेरे गुरुवर,
भँवर में डोलती डगमग, सम्हालो तुम मेरे गुरुवर।
कहीं यह डूब न जाए, समंदर है बड़ा गहरा,
डूबती नाव जीवन की, बचालो तुम मेरे गुरुवर।।316।।
प्रभु पारस यहाँ आये, सभी के कष्ट हरते हैं,
करे अर्चा प्रभु की जो, विशद सिंधु से तरते हैं।
बताया मोक्ष का मारग, प्रभु पारस ने हम सबको,
तभी से हम सभी उनकी, सदा जयकार करते हैं।।317।।
प्रभु पारस रहे अनुपम, सदा हम गीत गाएँगे,
प्रभु का दर्श करने को, यहाँ हम नित्य आएँगे।
इन्होंने कर दिखाया वह, नहीं जो कोई कर सकता,
शरण की प्राप्त करके हम, चरण माथा झुकाएँगे।।318।।
करे न दर्श पारस का, अभागा वह कहा जाए,
कहीं जाए कहीं भटके, कहीं न चैन वह पाए।
घूमकर आएगा इक दिन, करे महसूस जब गलती,
सही इंसान वह जानो, प्रभु के दर्श को आए।।319।।

शरण को प्राप्त करके जो भाव से गीत गाता है,
विशद श्रद्धान हो दिल में वही जिनधर्म पाता है।
विराजे पार्श्व जिनवर हैं परम तीरथ निराला है,
कहा जाए वही श्रावक प्रभु पद सिर झुकाता है।।320।।
झुकाए शीश चरणों में हृदय से भक्ति को पाकर.
करे पूजा विशद अर्चा चरण में द्रव्य को लाकर।
उसे फल प्राप्त होता है भक्ति जो भाव से करता,
झुकाते शीश चरणों में स्वर्ग से देव भी आकर।।321।।
नहीं सोचा किसी ने जो भक्ति से काम हो जाए,
जगे सौभाग्य मानव का जगत में नाम हो जाए।
प्रभु पारस बसे दिल में हमारे भी विशद आकर,
प्रभु के पाक चरणों में सतत् प्रणाम हो जाए।।322।।

(बसन्ततिलका छन्द)

श्री शांति नाथ भगवंत सत् ज्ञान धारी,
शुद्धात्म में निरत हैं वे चक्रधारी।
पाये चतुष्य अनंत अघ कर्म नाशे,
शत इन्द्र पूज्य प्रभुवर जग में प्रकाशे।।323।।
गुरु विराग सिन्धु को उर में बसालूँ,
तुम सा चरित्र ही, मैं इस तन से पालूँ।
आचार्य वर्य तरण तारण ज्ञान दाता,
तव चरण द्वय में अपना सिर ये झुकाता।।324।।
आचार्य देव तुम हो मम् बोधि दाता,
आध्यात्म वारिधि सुधी सद्धर्म ज्ञाता।
आध्यात्म मूर्ति गुरुवर्य विराग सिन्धु,
मैं बार-बार तव पाद पयोज वन्दूँ।।325।।

अरहंत को विनय से उर में बसालूँ,
श्री सिद्ध को स्वयं के सिर पर बिठालूँ।
आचार्य देव गुरु है सत् ज्ञान दाता,
श्री विराग सिन्धु पद में सिर को झुकाता ।।326 ।।
हे सन्मति वीर भगवन् ! तुभ्यं नमोस्तु,
श्री कुन्द-कुन्द आचार्य तुभ्यं नमोस्तु।
श्री आदि सागर विमल सु साधु सिंधु,
श्री विराग सागर सुधी पाद पयोज वंदूँ ।।327 ।।
हे अरहंत देव ! जिनवर मुझे बोधि देओ,
श्री सिद्ध शाश्वत् सुपद मुझे शीघ्र देओ।
ओंकार ध्वनि अरु सर्व साधु ज्ञाता,
इनके चरण में विनय से सिर को झुकाता ।।328 ।।
श्री आदिनाथ परमेश्वर ज्ञान धारी,
श्री सिद्ध शुद्ध परमातम निर्विकारी।
आचार्य वर्य उपाध्याय सु साधु प्यारे,
वंदूँ सदैव पद में आगम हैं प्यारे ।।329 ।।
जिनदेव के चरण में सुख बोधि पाऊँ,
मोहादि के तिमिर से मैं दूर जाऊँ।
श्री विराग सिन्धु हैं मम् बोधि दाता,
गुरुदेव के चरण में नित सिर झुकाता ।।330 ।।
जिनदेव ही पतित को पावन बनाते,
भक्ति करे विनय से फल शीघ्र पाते।
आचार्य वर्य गुरुदेव मुझे पथ दिखा दो,
लेकर शरण में मुझको अघ से छुड़ा दो ।।331 ।।
श्री वीतराग भगवंत सत् ज्ञान धारी,
शुद्धात्म में निरत हैं कल्याण कारी।
श्री जैन शासन रहे जयवंत प्यारा,
भाई वही है शरण जग का सहारा ।।332 ।।

श्री विराग सागर सुधी जग में निराले,
शुद्धात्म में निरत पंचाचार पाले।
श्री पूज्य पाद-चरण रज सिर पर चढ़ाते,
दीक्षा दिवस की खुशियाँ सब मिलकर मनाते ।।333 ।।
श्री शांतिनाथ भगवंत अघ कर्म नाशी,
श्री सिद्ध शाश्वत सुगुण शुद्धात्मवासी।
अरहंत हैं जहाँ में चउ कर्म नाशी,
ज्ञानी गुणी हैं प्रभुवर स्वपर प्रकाशी ।।334 ।।
नई यह साल आई है नया कुछ कर गुजरने को,
नया संदेश लाई है नये भावों से भरने को।
विशद इन्सानियत तू खोज ले यह जिन्दगी पाके,
नई यूँ राह मिल जाये नया कुछ कार्य करने को।।335 ।।
जिन्दगी की महफिल में, लोग कई निराले हैं,
होते कुछ कुटिल भावी, और भोले-भाले हैं।
जिन्दगी को करते जो, धर्म के हवाले हैं,
संत ऐसे दुनिया के, मोक्ष जाने वाले हैं।।336 ।।
ज्ञान के हिमालय, गुरुदेव ये कहाते हैं,
ज्ञान की विशद गंगा, लोक में बहाते हैं।
बह रही इस गंगा में, जीव जो नहाते हैं,
कर्म शत्रु वह अपने, शीघ्र ही नशाते हैं।।337 ।।
पढ़कर खुश होंगे सभी इन मुक्तकों के फूल को,
पाप के तरु को नशाएगा यही भव मूल को।
पाया नहीं है आज तक सद्धर्म को हमने विशद,
पछतायेगा वह बार-बार इस जिन्दगी की भूल को।।338 ।।
विशद मुक्तावली पढ़ते जो लोग हैं,
आत्म निधि का वह पाते संयोग हैं।
छूट जाता है उनका इस भव से भ्रमण,
जन्म मृत्यु जरा के नशे रोग हैं।।339 ।।

जो श्रद्धा के शुभम् दीप, ज्ञान के सागर हैं,
जो रत्नत्रय से भरे हुए परम रत्नाकर हैं।
इन गुरुवर का गुणगान किस मुख से करे हम,
चलते फिरते तीर्थ यह गुरुवर विराग सागर हैं।।48।।

हैं संतों में महासंत यह आचार्य श्री विराग,
दर्शन से इनके मिटता संसार से भी राग।
यह चन्द्रमा से अधिक शीतल और धवल हैं बंधु,
चन्द्रमा में दाग है पर गुरुवर में नहीं है कोई दाग।।49।।

हमने सब कुछ देख लिया झूठी जिन्दगानी का,
नहीं मिला है ओर छोर जीवन की कहानी का।
क्यों यह जिन्दगी पाकर गरुर करते हो मेरे बंधु,
कब समाप्त हो जाए यह नश्वर बुलबुला पानी का।।51।।

गुणों को जोड़ने पर सफलता हाथ आती है,
अवगुण के ह्रास से आतम विकास पाती है।
संयम की महिमा को अभी जाना ही कहाँ तुमने,
वैरागियों को तो मुक्ति वधु भी पास बुलाती है।।52।।

आस्रव कर्म बंध का हेतु होता है,
संवर मोक्ष मार्ग का सेतु होता है।
धर्म को शायद आपने जाना नहीं है,
धर्म मोक्ष महल के शिखर का केतु होता है।।60।।

हम इन्सान हैं शैतान को इन्सान बनायेंगे,
हम इंसान हैं इन्सान को इन्सान बनायेंगे।
हम पथिक हैं मोक्ष मार्ग के बंधु,
हम इन्सान से इन्सान को भगवान बनायेंगे।।63।।

जल की हर एक बूँद में सागर छुपा बैठा है,
सागर के मध्य तल में रत्नाकर छुपा बैठा है।
हम नहीं जानते किसी सागर रत्नाकर को,
गुरु विराग सागर में तो महासागर छुपा बैठा है।।64।।

जमीं न होती यदि तो आकाश न होता,
दीप में जलन न होती तो प्रकाश न होता।
मिटना कोई बुरी बात नहीं है मेरे बंधु,
यदि अधःपतन नहीं होता तो विकास न होता।।65।।

मौसम की हर सुबह शाम लेकर आती है,
जिन्दगी अपने साथ में मौत लेकर आती है।
मायूस न करना 'विशद' अपने इरादों को,
अपनी यात्रा मंजिल को साथ लेकर आती है।।74।।

शून्यता भर दी हैं लोगों ने शिष्टाचार में,
विश्वास नहीं रह गया आज निष्ठाचार में।
विश्व शांति की निर्मूल आकांक्षाएँ बना बैठे हैं,
लोग तल्लीन होकर के 'विशद' भ्रष्टाचार में।।75।।

सत्य का नारा जिसने कभी न दिया,
काम नेकी का जिसने कभी न किया।
मानव होकर भी वह पशु कहलायेंगे,
आस्था रहित मानव जीवन जिसने भी जिया।।78।।

शोहरत की बुलंदी तो पलभर का तमाशा है,
तन की हिफाजत की नहीं कुछ भी आशा है।
जिस साख पर बैठे हो वह टूट भी सकती है,
भगवान महावीर कथित यह सिद्धान्त खासा है।।79।।

समवशरण जिनदेव का लघु मंदिर के पास बना,
धर्म की वर्षा होती देखो, छाया बादल बहुत घना।
सराबोर होते नर–नारी, होता है मन उनका शांत,
खुश होकर के पूजन कर लो करता तुमको कौन मना।।82।।

व्यापार के बदलते ही बाजार बदल जायेगा,
व्यवहार के बदलते ही प्यार बदल जायेगा।
विधि के विधान को बदलना विशद मुश्किल है,
परिणाम बदलेंगे तो संसार बदल जायेगा।।87।।

गुरु पद भक्ति ही परमात्म पद का मूल है,
गुरु भक्ति से ही मिलता प्राणी को भव कूल है।
धन्य हैं वे प्राणी जो लेते शरण गुरुवर की,
जो शरण नहीं लेते उनकी, यह सबसे बड़ी भूल है।।88।।

जिसे तत्त्वों के प्रति श्रद्धान होता, उसे ही आत्मा का ज्ञान होता है,
जिसके जीवन में मान होता है, उसका बाकी जहान होता है।
कल्याण की चाह यदि, आपके जीवन में प्यारे बन्धु,
जिसे देव शास्त्र गुरु का भान हो, उसी का कल्याण होता है।।89।।

बात की बात में विश्वास बदल जाता है,
रात ही रात में इतिहास बदल जाता है।
तू मुसीबतों से न घबरा अरे ! इन्सान,
धरा की क्या कहे आकाश भी बदल जाता है।।93।।

बढ़ो तुम राह पर भाई किसी के साथ हो जाओ,
बढ़ो तुम संत बनकर के स्वयं यथाजात हो जाओ।
तरसते क्यों विशद बैठे देख तस्वीर भगवन् की,
बढ़ो अब इस तरह से कि पारस नाथ हो जाओ।।98।।

गुरु से ही सच्चा जीवन शुरु होता है,
गुरु बिना जीवन व्यर्थ ही खोता है।
गुरु की महिमा को जाना भी कहाँ आपने,
गुरु के माध्यम से शिष्य भी गुरु होता है।।99।।

संस्कार शैतान को इन्सान बना देता है,
संस्कार इन्सान को महान् बना देता है।
संस्कार विशद शिल्पी का मेरे बन्धुओ,
इस जहाँ में पत्थर को भी भगवान बना देता है।।101।।

संस्कार से ही संसार का विनाश होता है,
संस्कार से ही अघ कर्म का नाश होता है।
संस्कारों को जीवन में कौन नहीं चाहता,
संस्कार जिसके पास है उसका ही विकास होता है।।102।।

चेहरा देख बाल संवारने का काम दर्पण से होगा,
जीवन विकास प्रभु चरणों में अर्पण से होगा।
सत् श्रद्धान की चाह यदि तुम्हें है अपने जीवन में,
तो सच्चा श्रद्धान गुरु चरणों में समर्पण से होगा।।120।।

सीरत नहीं है अच्छी तो सूरत बेकार है,
इंसान नहीं है वह पृथ्वी पर भार है।
आस्था रहित मानव का जीवन व्यर्थ है बन्धु,
मानव नहीं पशु है वह जिन्हें धर्म से न प्यार है।।122।।

साधना को श्रद्धा का आधार देकर तो देखो,
उपासना को भक्ति से श्रृंगार करके तो देखो।
तुम्हारा यह जीवन चमन हो जायेगा मेरे बन्धु,

भावना को आचरण का उपहार देकर तो देखो।।129।।

बने जो मूर्ति मिट्टी की एक दिन गल ही जाती है,
कि अग्नि में पडे लकड़ी सदा वह जल ही जाती है।
'विशद' मूर्ति बनेगी वह मेरे बंधु जमाने में,
तराशे शिल्पी पत्थर को मूर्ति ढल ही जाती है।।132।।

यदि पीना चाहते हो कुछ तो आक्रोश को पीना,
यह जीवन सार्थक होगा सदा तुम धर्म से जीना।
बनेगा स्वर्ण यह जीवन तुम्हारा भी मेरे बंधु,
धर्म की रक्षा में अपना लगा देना विशद सीना।।133।।

सरल होता कथन करना, बड़ा ही त्याग करने का,
करे जो त्याग कहने पर, रहे डर उसके गिरने का।
त्याग करते हैं भावों से, जहाँ में जो मेरे बंधु,
नहीं डर उनको होता है, स्वयं के जीने मरने का।।134।।

बढ़ा दीजिए कदम मंजिल पास नहीं है,
समय (काल) जीवन का तेरा कुछ खास नहीं है।
क्यों करता गरूर चंद क्षण की जिन्दगी पर,
इन श्वाँसों का कुछ भी विश्वास नहीं है।।135।।

पक्षी को दाना दो उतना जितना वह चुन सके,
बोलिए उतना किसी से कोई उसको सुन सके।
व्यर्थ होगा वह तुम्हारा ज्ञान देना ये विशद,
ज्ञान इतना दीजिए जिसको कि वह गुन सके।।136।।

खेद से आलस्य की गोद में जो सड़ रहे हैं,
काटते दिन जिन्दगी के कहने को पढ़ रहे हैं।

वीर की सन्तान होकर आपस में जो लड़ रहे हैं,
दुर्गति के मार्ग पर बन्धु कदम उनके बढ़ रहे हैं।।137।।

पड़े तुमको कहीं रोना, कि ऐसा काम क्यों करना,
समय के बीत जाने पर, स्वयं ही आँह क्यों भरना।
सम्हलता जो समय के पूर्व, वही इन्सान है साही,
बढ़े पुरुषार्थ करके जो, वो होता मोक्ष का राही।।140।।

गति कोई नहीं बाकी, जहाँ पर जन्म न पाया,
रहा स्थान कोई ना, जहाँ जाकर न भरमाया।
रहा क्या द्रव्य इस जग का, नहीं जो आपने खाया,
यदि पाया नहीं कुछ तो, आज तक शिव नहीं पाया।।141।।

अनेकों मंजिले पाईं, कि पाये हैं कई सेवक,
पाई दौलत करोड़ों की, रहा उस पर हमारा हक।
शुकूँ लेकिन नहीं पाया, खेद इसका बड़ा हमको,
साथ जिसका किया हमने, पाया उससे ही है गम को।।143।।

खाई ठोकरें इतनी, जहाँ में जाने अनजाने,
भटकते ही रहे हरदम, किसी की एक न माने।
मोह ने घेरा यूँ डाला, किया मजबूर था हमको,
शक्तियों को भी रोका था, कि छीना था मेरे सम को।।145।।

स्वयं को जान न पाया, नाम पर नाम कई पाये,
खोजकर पग थके लेकिन, स्वयं को खोज न पाये।
आज तक जो भी कुछ पाया, रहा वह मात्र इक सपना,
विशद पाया नहीं अब तक, वही था आपका अपना।।147।।

घर है जहाँ में कौन सा जो वीरान ना हुआ,

खिला गुल कौन सा है जो परेशान न हुआ।
तन ये पाता जीव संसार में हर एक ही,
तन है वह कौन सा जो बेजान न हुआ।।157।।

झूठ बोलने में माहिर, जमाने में कोई शेष नहीं,
मानव मुख से सत्य बात का, निकल रहा है लेश नहीं।
बात-बात में झूठ बोलना यह मानव का काम है,
झूठ बोलते लाखों दिन में, हरिशचंद्र तो नाम है।।158।।

कई लोग हैं ऐसे जो बिस्तर छोड़ पाते नहीं हैं,
अपनी वृत्ति को धर्म की ओर मोड़ पाते नहीं हैं।
क्या हो गया है आज के इन्सान को बन्धु,
अपनी राह को मोक्ष मंजिल से जोड़ पाते नहीं हैं।।159।।

एकान्तवादी के कथन का जहाँ में न कुछ स्थान है,
विशद वाणी स्याद्वादी का बड़ा सम्मान है।
गुण अनेकों वस्तु में होते कथन जिनराज का,
करते सभी सम्मान है जिनधर्म के शुभ ताज का।।164।।

यही परमात्मा मेरे, यही ईश्वर हमारे हैं,
नायक है ये जीवन के, चरण इनके सहारे हैं।
मेरे जीवन की हर सांसें, समर्पित इनके चरणों में,
पड़े अंतिम क्षणों तक शब्द शुभ मेरे इन कर्णों में।।167।।

तेरे चरणों की धूल रहे माथे पर मेरे हरदम,
रहे श्रद्धान अति गहरा किसी क्षण भी नहीं हो कम।
प्रभु चरणों की भक्ति से जीवन हो विशद मेरा,
निकल जाए प्राण तन से भी नहीं इसका हमें कुछ गम।।168।।

नहीं कोई भरोसा है बाग यह कब उजड़ जाए,
कौन सी श्वाँस लौटकर के पुनः आये या न आए।
कभी क्या पूर्ण हो पाए जहाँ में लोग जो रहते हैं,
जिन्दगी में मेरे भाई विशद स्वप्न जो हैं सजाए।।170।।

खाना ऐसा कि फिर खाना शेष ना रहे,
जाना ऐसा कि फिर जाना शेष ना रहे।
पाना सब कुछ सरल होता है बन्धुओं,
पाना ऐसा कि कुछ भी पाना शेष ना रहे।।176।।

गुरु ज्ञान के दीप शांति की किरण हैं,
इस संसार में गुरु ही सत्य तारण तरण हैं।
गुरु विराग सागर को बसालो बन्धुओं नयनों में,
संसार में सबसे अधिक पावन गुरुदेव के चरण हैं।।178।।

हैं ऐसे देव जिनके दर्शन से कुमति खो जाती हैं,
जिनके वंदन से दुष्टों की मति सुमति हो जाती हैं।
नित्य करना तुम इनकी पूजा अर्चना मेरे बंधु,
इनकी अर्चा करने से स्वयं की अर्चा हो जाती है।।179।।

भोग विषयों की जिन्हें कोई प्रतिक्षा नहीं,
भोगोपभोग सामग्री होने पर भी अपेक्षा नहीं।
संत वही हैं जो इस दुनियाँ से विरक्त होते हैं,
संतों को तो अपने जीवन की भी इच्छा नहीं।।183।।

पल-पल अमूल्य है जीवन का उसको सफल बनालो,
बचा है जितना जीवन उसमें भी ध्यान लगा लो।
मंजिल दूर नहीं होगी तुम सिर्फ अपना कदम बढ़ाओ,
आतम से निज आतम का पावन दीप जला लो।।185।।

जो आकाश में गमन करता वह आकाश गामी है,
जो वासना की आग में जलता रहता वह कामी है।
जो मन वचन काय से संयम धारण करता है,
वो कुछ क्षणों में होता तीन लोक का स्वामी है।।191।।

क्यों व्यर्थ में खोता जा रहा है जीवन सारा,
आज इन्सान ने तो मौत को भी ललकारा।
तुम महावीर की सन्तान हो किसी और की नहीं,
तो फिर तूँ क्यों स्वयं अपने आप से हारा।।192।।

क्षत्रियों का जो धर्म था वह बनियों के हाथ आ गया है,
इसलिए तो आज शायद विनाश का बादल छा गया है।
छवि ही बिगाड़ दी उस पवित्र जिनधर्म की लोगों ने,
विरक्ति की बात करके धर्म के मूल को ही खा गया है।।195।।

सच्चे संत वही हैं जो इन्द्रियों का दमन करते हैं,
जीव रक्षा हेतु ईर्यापथ से गमन करते हैं।
संत प्राणी मात्र के रक्षक होते हैं मेरे बंधु,
इसलिए लोग इनके चरणों में प्रतिपल नमन् करते हैं।।198।।

मंजिल आती गई और हम कदम बढ़ाते गये,
सप्त स्वरों में भक्ति संगीत को बजाते गये।
परमात्मा परम कल्याणकारी हैं मेरे बन्धु,
वह मोक्ष मार्ग पर चलते और चलाते गये।।201।।

इन गुरुओं का जीवन परम पावन होता है,
इनका स्वरूप बड़ा मन भावन होता है।
जिसके यहाँ पड़ जाते हैं इनके चरण कमल बंधु,
उसके यहाँ पर जेठ में भी सावन होता है।।203।।

जो सच्चे भक्त हैं वह दीन हो रहे हैं,
जो शक्तिशाली हैं वह भक्ति से हीन हो रहे हैं।
मंदिरों में मनुष्य तो कम पक्षी अधिक दिखाई देते हैं,
आज सच्चे भक्त एकदम विलीन हो रहे हैं।।206।।

जीवन का प्रत्येक पल, इन्सान का ध्येय होता है,
अर्हन्तों का सुख और बल सब ज्ञेय होता है।
गधे की भाँति परिग्रह से लदे रहकर पुण्य को हेय मानते,
तुम्हें नहीं वीतरागियों के लिये पुण्य हेय होता है।।209।।

इन्सान को इन्सान तू इन्सान बना रहने दे,
इन्सान को इन्सानियत की राह में ही बहने दे।
इन्सानियत के हेतु सभी कष्ट उन्हें सहने दे,
इन्सान से इन्सानियत की बात हमें कहने दे।।210।।

सदाचार से इन्सान का व्यवहार सफल होता है,
सद् व्यवहार से लोगों का विचार सफल होता है।
हमारे विचार यदि उत्तम रहें जीवों के प्रति,
तो प्राणी मात्र का हमसे प्यार सफल होता है।।214।।

अपनी आदमियत को स्वयं खो रहा आदमी,
दिनकर का उदय होने पर भी सो रहा है आदमी।
आम की चाह में बबूल बीज बो रहा है आदमी,
इस नर भव को विषयों में व्यर्थ ही खो रहा है आदमी।।215।।

सब कुछ समझ में आ जावेगा सत् शास्त्र पढ़कर देखो,
शांति मिलकर रहेगी संयम पथ पर चलकर देखो।
सभी मंजिलें भूल जावेंगी तुम्हें मुक्ति मंजिल पाकर,
विजय प्राप्त अवश्य होगी एक बार कर्मों से लड़कर देखो।।227।।

शांति के लिये प्राणी मात्र के प्रति स्नेह चाहिए,
तप करने के लिये हमें शक्तिशाली देह चाहिए।
सफल होगा तभी हमारा लक्ष्य बंधुओ,
इन गुरुओं का हमें आशीष एवं श्रेय चाहिये।।228।।

जो स्वयं को ना जाने उस अकल से क्या,
नहीं जो राह दिखलाए विशद उस नकल से क्या।
हजारों लोग रहते हैं इस चमकती दुनियाँ में,
परेशां कर दे औरों को होता उस शकल से क्या।।233।।

इन्सानियत का दर्जा शैतान को नहीं देंगे,
वीरानगी का नारा हैवान को नहीं देंगे।
प्राण लुटा देंगे हम गुरुओं की रक्षा में,
अपने माथे का ताज श्मशान को नहीं देंगे।।238।।

पत्थर पर कमल कभी खिलते नहीं हैं,
हिलाने से सुमेरु कभी हिलते नहीं हैं।
संत तो मिल सकते हैं बहुत से मेरे बन्धु,
इन गुरुवर के जैसे संत कहीं मिलते नहीं हैं।।239।।

ऊपर उठता है वही जिसके अंदर छल नहीं है,
सुखी वह है जहाँ मोह का दलदल नहीं है।
मंजिल पर चढ़ने को वह तैयार बैठे हैं,
जिनके जीवन में संयम और आत्म बल नहीं है।।241।।

हम प्रभु को देखकर भी दर्शन नहीं कर पाते हैं,
हम भक्ति करते हुए भी भावों से नहीं भर पाते हैं।
मोक्ष महल का रास्ता तो बहुत सीधा और सरल है,
हम संयम और तप करने का साहस नहीं कर पाते हैं।।242।।

गुरुवर विराग सागर जी संतों के सरताज हैं,
ऐसे संतों को पाकर यह धरती करती नाज है।
संसार समुद्र को पार करने के लिए मेरे बंधु,
परम पूज्य गुरुवर अनुपम एक जहाज है।।247।।

जीवन की सफलता हेतु सत् संस्कार चाहिए,
प्रेम के लिए जीवन में मधुर व्यवहार चाहिए।
अहंकार से तो पतन ही होता है जिन्दगी में बन्धुओं,
सुख शांति हेतु विशद परोपकार चाहिए।।250।।

असंतोष इंसान का इंसान को निगल रहा है,
इंसान का मान और सम्मान हर पल गल रहा है।
खेद की बात है विशद जिन्दगी में मेरे बन्धु,
इंसान का चिंतन और आचरण भी बदल रहा है।।257।।

लोग कहते हैं कि स्वप्न कभी साकार नहीं होते,
साकार क्या जीवन के आधार नहीं होते।
यहाँ भक्तों के स्वप्न भी साकार हो गये,
संत भक्तों से बिछुड़ कर भी पुनः आ गये।।258।।

संसार में लोग संस्कार हीन होते जा रहे हैं,
उनके आचार-विचार विलीन होते जा रहे हैं।
ये स्वयं की करामात का फल हैं मेरे भाई,
लोग दिन-प्रतिदिन दीन-हीन होते जा रहे हैं।।261।।

प्रभु के दर्शन से यह जन्म सफल हो जाता है,
आशीष से गुरुवर के श्मशान महल हो जाता है।
गुरुवाणी के एक-एक शब्द में विशद छंद छुपा है,
गुरु भक्ति का हर लब्ज गजल हो जाता है।।268।।

हम संत हथियार नहीं प्यार से जीतते हैं,
उनकी यादगार में हमारे नयन भी नम हैं।
महावीर को खोकर भी विशद हम खुश हैं,
भगवान महावीर के सिद्धांत हमारे पास हैं यह क्या कम है।।306।।

फूल तो बहुत मिलते हैं पर सुगन्ध देते हैं कोई-कोई,
वर्ण तो बहुत बनते हैं पर छन्द देते हैं कोई-कोई।
इन्सान पहले बहुत थे आज भी कम नहीं है,
पूजा भक्ति तो बहुत करते पर संत होते हैं कोई-कोई।।443।।

कभी गर्मी कभी सर्दी ये तो मौसम के नजारे हैं,
रात में चमकते कभी चाँद कभी तारे हैं।
आश्चर्य क्यों ना हो उन्हें देखकर मेरे भाई,
प्यासे वह रहते हैं जो दरिया के किनारे हैं।।449।।

ज्ञान चरित्र पाने बढ़े जो स्वयं,
कर दिया है परिग्रह को भी जिनने कम।
संत होते विशद वह इस संसार में,
नासते हैं सदा वह तो अज्ञान तम।।171।।

सद्दर्श के शुभम् भाव जागे हमारे,
ये जिन्दगी रहे प्रभु चरणों सहारे।
त्रैयोग से मनन हो प्रभु के चरणों का,
उर में रहें चरण विमल हों प्रभु भाव मेरे।।299।।

आपने आपको आप में वर लिया,
चेतना को स्वयं ही प्रखर कर लिया।
वीतरागी प्रभो हे महावीर जिन !
आपके द्वयचरण में 'विनम्र' नमन्।।420।।

शांति शांति प्रभो शांति शांति करो,
बोधि का दान दे भ्रम की भ्रांति हरो।
वीतरागी प्रभो ! ज्ञान की दो किरण,
आपके द्वय चरण में 'विनम्र' नमन।।423।।

व्यर्थ की आपदा कभी पाली नहीं जाती,
समुद्र में सरिता पहुँचती नाली नहीं जाती।
प्रभु चरणों की भक्ति से कुछ न कुछ जरुर मिलता है,
सच्चे भक्त की भक्ति कभी खाली नहीं जाती।।340।।

अटल तकदीर पर मेरी श्री अरिहंत लिक्खा है,
जुबां पर देख लो मेरे जय जिनेन्द्र लिक्खा है।
आँखों में देख लो मेरे गुरु निर्ग्रंथ लिखा है,
हृदय को चीरकर देखो श्री भगवंत लिखा है।।341।।

हर परिस्थिति में आप मुस्कराते रहना,
तीर्थ वंदना के लिए कदम बढ़ाते रहना।
मंजिल अवश्य मिलेगी प्यारे भाई,
परमात्मा के चरणों में शीश झुकाते रहना।।342।।

अपनी जिन्दगी में एक काम करके देखो,
एक बार चरणों में विश्राम करके देखो।
अवश्य ही सौभाग्य बन जाएगा आपका,
अपनी जिन्दगी पार्श्व प्रभु के नाम करके देखो।।343।।

आपके इशारों पर ही चल रहे हैं हम,
आपके ही रंग में ढल रहे हैं हम।
आपके आशीष की छाँव रहे मेरे सिर पर,
आपकी करुणा के सहारे ही पल रहे हैं हम।।344।।

एक बार दीपक की भाँति जलकर दिखा दीजिए,
एक बार चातक की भाँति पलकें बिछा दीजिए।
जिन्दगी मालामाल हो जाएगी आपकी विशद,
एक बार पार्श्व की अर्चा में मन लगा दीजिए।।345।।

जो परमात्मा की भक्ति, गंगा में समा गये,
जिनके हृदय में उनके सिद्धांत छा गये।
उनके भाग्यका सितारा चमक गया,
जो पार्श्व प्रभु के चरणों में, भक्ति से आ गये।।346।।

पार्श्व प्रभु की भक्ति करना ही काम है मेरा,
इस जीवन का हरपल उनके नाम है मेरा।
अब तो लग गई है पार्श्व प्रभु के चरणों में मेरी लगन,
चँवलेश्वर तीर्थ ही शिवधाम है मेरा।।347।।

बेटे की चाहत वालों तुम, सुनलो मेरी बात,
बेटी होने वाली हो गर, कभी न करना घात।
बेटी को बेटे से कम न आंको, मेरे भ्रात,
बेटी मंगलमय यह होती है जग में विख्यात।।348।।

पार्श्व प्रभु के चरणों में हमेशा आते रहिए,
फर्ज अपना दिल से निभाते रहिए।
एक न एक दिन पुकार अवश्य सुनेंगे,
उनके चरणों में शीश झुकाते रहिए।।349।।

पार्श्वनाथ के गीत हमेशा हम गाते रहेंगे,
उनके चरणों में अपना शीश झुकाते रहेंगे।
पार्श्व प्रभु की भक्ति ही हमारा जीवन है,
उनके दर्शन कर हमेशा मुस्कराते रहेंगे।।350।।

भगवान पार्श्वनाथ बड़े ही चमत्कारी हैं,
द्वार पर आने वाले बन जाते पुजारी हैं।
हमें हमेशा आपका दर्शन मिलता रहे,
आपके चरणों में विशद ढोक हमारी है।।351।।

प्रभु पार्श्वनाथ मेरे नयनों में छा गये हैं,
मेरी वाणी के हर गीत में आ गये हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ का मंदिर मेरा हृदय है विशद,
क्योंकि प्रभु अब मेरे मन मंदिर में समा गये हैं।।352।।

प्रभु पार्श्वनाथ की जहाँ में निराली शान है,
उनके चरणों में झुकता सारा जहान है।
यही सबसे बड़ा चमत्कार है प्यारे भाई !
क्योंकि पार्श्व प्रभु अपने आप में महान् हैं।।353।।

मेरे प्रभु ही विशद शक्ति देने वाले हैं,
मेरे प्रभु ही श्रेष्ठ युक्ति देने वाले हैं।
मेरे प्रभु की महिमा अपरम्पार है प्यारे भाई !
मेरे प्रभु ही जग से मुक्ति देने वाले हैं।।354।।

हे परमात्मा ! आज हम आपके दर्श पाने आये हैं,
मुक्त कंठ से आपके गीत गाने आये हैं।
मेरा मन मंदिर सूना है आपके बिना भगवन्,
अपने मन मंदिर में तुम्हें बसाने आये हैं।।355।।

कभी नहीं पाई वह खुशी हमने पा ली है,
प्रभु पार्श्व की मूर्ति हृदय में सजाली है।
सब कुछ इनके चरणों में समाया है,
इनका दर्शन दशहरा है तो पूजा दिवाली है।।356।।

पार्श्व प्रभु के दर पे जो आता है,
सर खुद व खुद उसका झुक जाता है।
प्रभु का प्रभाव ही कुछ ऐसा है,
रास्ते पर जाने वाला द्वार पर रुक जाता है।।357।।

आज हमारे पूर्व पुण्य का तीव्र उदय आया है,
शायद उस पुण्य ने ही यह अनुपम काम बनाया है।
पहले कभी नहीं मिला हमको यह अवसर,
आज हमने पावन तीर्थ पार्श्व प्रभु का दर्शन पाया है।।358।।

पार्श्व प्रभु का नाम मेरे हृदय में समाया है,
अपनी श्वांसों में प्रभु को मैंने बसाया है।
सोते जागते हम प्रभु का ही नाम रटते हैं,
हमने जो पाया सब प्रभु की कृपा से पाया है।।359।।

दोहा–आदिनाथ सम मम गुरु महावीर से वीर,
जीवों पर करुणा करें हरते जग की पीर।
संयम पथ पर चलाते करते दुःख का अंत,
युग–युग तक होते रहें मम गुरुवर जयवंत।।425।।

ध्यान साधना की ऊँचाई विशद गगन में फैली है,
चिंतन मनन मनोहर जिनका अनुपम प्रवचन शैली है।
मोक्ष मार्ग के राही गुरुवर संघ के शुभ संचालक हैं,
मूलगुणों का पालन करते पंचाचार के पालक हैं।।426।।

तुम नाथ हो गुरु हम बन्धुओं के,
तुम सिन्धु हो गुरु सब सिन्धुओं के।
है ज्ञान के समन्दर श्री विराग सिन्धु,
तब पाद पंकज में 'विशद' कर जोर वंदू।।427।।

जैन होकर भी हैं कुछ, जो दूर रहते धर्म से,
मूलगुण नाहिं जानते अनभिज्ञ अपने कर्म से।
स्नेह उनको है अधिक अपनी स्वयं की चर्म से,
है झुका माथा विशद उनका बहुत अब शर्म से।।167।।

ये जीवन ग़म और खुशी का मेला है,
इतने बड़े जहान में विशद तू अकेला है।
अपना बनाया ही क्यों तूने दुनियाँ को,
इन दुनियां वालों ने तेरी जिन्दगी से खेला है।।683।।

यादें और वादों के सहारे हम जिए जाते हैं,
गम के घूंट फिर भी खुश होके पिए जाते हैं।
विशद इसी प्रकार जिन्दगी पूर्ण होने आ गई,
कुछ पाने की उम्मीद नहीं फिर भी इंतजार किए जाते हैं।।684।।

हे प्रभो ! मेरी आँखों में, वह तासीर हो जाए,
नजर जिस चीज पर डालूँ, तेरी तस्वीर हो जाए।
भावना है हमारी यह, सभी इंसान भगवान बनें,
पाक राहों पर चले, इंसान तो महावीर बन जाये।।685।।

हर सुबह अपने साथ, नया हर्ष लेकर आती है,
एक–एक दिन व्यतीत होकर, नव वर्ष लेकर आती है।
एक बार अपना पुरुषार्थ, जगाकर देखो मेरे मित्र,
हर सुबह अपने साथ, नया उत्कर्ष लेकर आती है।।686।।

गिरते–गिरते बालक चलना सीख पाता है,
घृत मिलने पर ही दीपक जलना सीख पाता है।
जिस इंसान के अंदर प्रेम होता है प्राणी मात्र से,
वह इंसान ही इंसान से मिलना सीख पाता है।।687।।

जलने वाला दीप ही, प्रकाश दे पाता है,
खिलने वाला फूल ही, सुवास दे पाता है।
दुनियाँ में रहते हैं, यूँ तो अनेकों मित्र,
अपने से मिलने वाला ही, विश्वास दे पाता है।।688।।

जिसने अँधेरों में, ज्ञान के दीपक जलाएँ हैं,
औरों की राह में, बिछे शूल भी हटाएँ हैं।
वह इंसान नहीं देवता है, पृथ्वी पर,
जो अपनी जिन्दगी, परोपकार के लिए बिताए हैं।।689।।

प्रभु के द्वार पर जो भी, अपना शीश झुकाएँगे,
भक्ति भाव से अपनी किस्मत आजमाएँगे।
उनकी झोली कभी खाली नहीं रहेगी,
विशद जो चाहते हैं वही फल पा जाएँगे।।690।।

फूल अपनी खुशबू से सभी को लुभाते हैं,
सूर्य किरणों की रोशनी को चारों ओर फैलाते हैं।
यह खुशबू और रोशनी तो नष्ट प्रायः है विशद,
पार्श्व प्रभु तो अलौकिक रोशनी दिलाते हैं।।691।।

पार्श्व प्रभु के जीवन की हर बात निराली है,
अच्छे-अच्छे वीरों को भी चौकाने वाली है।
प्रभु का आशीष जिनको भी प्राप्त हो जाता प्यारे भाई,
उनके जीवन में बिना रंग बिना दीप के होती दीवाली है।।692।।

जहाँ सरिता का प्रवाह चारों ओर हरियाली है,
जहाँ की हर एक बात करामात चौकाने वाली है।
यह तीर्थ कुछ इस प्रकार का है प्यारे भाई !
तीर्थ क्षेत्र चंवलेश्वर की महिमा ही निराली है।।693।।

जहाँ पत्थरों पर भी कलियाँ खिल जाती हैं,
जहाँ अँधेरों में भी गलियाँ मिल जाती हैं।
तीर्थ क्षेत्र चंवलेश्वर को कौन भूल पाएगा,
जहाँ सभी की जिन्दगियाँ बदल जाती हैं।।694।।

वो चमन हमेशा खाक में मिल जाया करते हैं,
जहाँ कभी भी बागवाँ नहीं जाया करते हैं।
तन यौवन पर गरूर करने वाले इंसान सम्हल जा,
अंत में इंसान भी मिट्टी में मिल जाया करते हैं।।695।।

कौन कहते हैं कि जाने वाले लोग याद नहीं आते हैं,
जो अपने लिए भाते हैं वह अवश्य ही याद आते हैं।
कभी-कभी ऐसा भी होता है लोगों के बीच रहकर,
जो याद आते हैं वह औरों को बताए नहीं जाते हैं।।696।।

किसी की झोपड़ी में आग कोई भी लगा सकता है,
श्रद्धालु के अंदर श्रद्धान कोई भी जगा सकता है।
महल के उस द्वार पर जाओ कि अन्य कहीं जाना न पड़े,
वरना तुम्हें द्वार से कोई भी भगा सकता है।।697।।

प्रेम प्रकृति का सबसे मधुर उपहार है,
यह उन्हीं को मिलता जिनका अच्छा व्यवहार है।
प्रेम कहीं बाहर खोजने पर नहीं मिलता मित्र,
प्रेम तो विशद अंतश्चेतना की पुकार है।।698।।

रोशनी बिखेरना है तो चिराग की भाँति जलना सीखो,
संसार पार करना तो मोक्षमार्ग पर चलना सीखो।
यदि सिद्ध बनना चाहते हो तो सिद्धी प्राप्त करना होगी,
उसके पहले सिद्धों की भाँति सबसे मिलना सीखो।।699।।

बिन माँगे ही यहाँ पर भरपूर मिलता है,
आशाओं से अधिक जी हुजूर मिलता है।
दुनियाँ में और कहीं मिले न मिले बंधु !
पर पार्श्व प्रभु के दर पर जरूर मिलता है।।672।।

माथे में सबके किस्मत की लकीर होती है,
शुभाशुभ पाना अपनी-अपनी तकदीर होती है।
उनका जीवन मंगलमय हो जाता है प्यारे भाई !
पार्श्व प्रभु की जिनके हृदय में तस्वीर होती है।।673।।

असुर नहीं अब सुर बनकर के स्वर संगीत बजाना है,
अष्ट द्रव्य को धोकर भाई सुन्दर थाल सजाना है।
देव-शास्त्र-गुरु की पूजा कर पाना पुण्य खजाना है,
अष्ट सुगुण प्रगटाकर अपने सिद्धशिला पर जाना है।।674।।

अपने हृदय में प्रभु की जागीर बना रखी है,
पार्श्व प्रभु की अनुपम तस्वीर बना रखी है।
उन्हीं को माना है हमने अपना सब कुछ,
उनके चरणों में अपनी तकदीर बना रखी है।।675।।

यह आपका तीर्थ ही है यहाँ निशंक होकर आइये,
बसंत की बयार पाके है खुश होकर मुस्कराइये।
यदि जीवन को मधुवन बनाना चाहते हो विशद,
तो पार्श्व प्रभु की भक्ति के रंग में रंग जाइये।।676।।

जिन्दगी की आखिरी शाम तक चलते रहिए,
तय किए अपने मुकाम तक चलते रहिए।
पार्श्वनाथ जी यहाँ विराजमान हैं प्यारे भाई !
चँवलेश्वर पावन तीर्थ धाम तक चलते रहिए।।677।।

विशद मुक्तावली

विशद मुक्तावली

विशद मुक्तावली

विशद मुक्तावली

विशद मुक्तावली

विशद मुक्तावली

विशद मुक्तावली

विशद मुक्तावली

प्रेम प्रकृत्ति का सबसे मधुर उपहार है।
यह उन्ही को मिलता, जिनका अच्छा व्यवहार है।।
प्रेम कहीं बाहर खोजने पर नहीं मिलता।
प्रेम तो विशद अन्तश् चेतना की पुकार है।।

विशद मुक्तावली

विशद मुक्तावली